मापदण्ड

इन्दिरा





मापदण्ड

मापदण्ड

'इन्दिरा'

शान्ति प्रकाशन आसन
रोहतक

प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, आसन-124421 (रोहतक) (हरियाणा)

शाखा : 854/27, मॉडल टाउन, नजदीक दिल्ली रोड,
रोहतक-124001 (हरियाणा)

404/5, मौहल्ला महाराम, भोलानाथ नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

डी-19/219, नन्दनवन एपार्टमेंट, नजदीक भावसार होस्टल,
नवावाडज, अहमदावाद-380013

ए/7, गौतम एपार्टमेंट, महादेवनगर, बिलीमोरा-396321
(गुजरात)

मुख्य वितरक : विराट पब्लिशिंग हाउस, E-24 चन्द्रलोक लोनी रोड,
शाहदरा, दिल्ली-110091

प्रथम संस्करण : 1992

मुद्रक : प्रियंका प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

मूल्य : पिछहत्तर रुपये

MAAPDAND (Hindi Novel) by Iddra Rs. 75/-

इसी उपन्यास से—

"जीवन में फूलों की सेज भी काँटों की सेज में बदल जाती है ।
इतिहास के पृष्ठों पर जिनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है उन लोगों के जीवन का इतिहास भी यही रहा है ।"

Dignity is a matter which concerned
only mankind.

Livy "MANU"

Arise awake and stop, till the
goal is reached.

Vivekanand

The best thing is to give to your—
Enemy is forgiveness
An opponent tolerence,
your self—Respect
and
All man charity.

"शिवामस्तु सर्व-जगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगवा:
दोषा प्रचान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकः ॥"

"गुह्य ब्रह्म तदिदं ब्रणीमि,
न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचितं ।"

—महर्षि व्यास

"Give up the idea of Modern life
which are constantly changing.
Create a life of your own which
other should feel like following.
Only then real friends would
comn near you.

"ANASH"

सिर्फ

आपके लिए

इन्दिरा

31, सावन सोसायटी, बटवा रोड,
मनीनगर, अहमदाबाद (भारत)
दूरभाष—382367

दो शब्द

क्या लिखूं ?
और
कहाँ से प्रारम्भ करूँ ?
दोनों ही मेरे लिए सदा असाध्य कार्य रहे हैं,
और,
आज,
जबकि,
आधुनिकता के नाम पर,
व्यक्ति, उसकी अस्मिता, समाज, धर्म, दर्शन यहाँ तक की स्वत्व और मूल्य, सभी के सम्पूर्ण अस्तित्वों को ढहा बैठा है—,
ऐसे समय,
तत्व ज्ञान का दर्शन करना,
ब्रह्म को ढूंढ़ना,
यह कोई सामान्य श्रम या असाधारण कला नहीं है
फिर भी,
मनु,
निकली है,
मैं यह तो नहीं कहूँगी कि वह नारीत्व भूल गई है
पर हाँ,
मेरी मनु इतना अवश्य जान गई है कि स्त्री मात्र पुरुष की भोग्या या अंकशायिनी नहीं है—,
वह चाहती है पुरुष को पाना उसको पाने में वह अपनी पूर्णता को भी स्वीकार करती है,
लेकिन,
अगर पुरुप नैतिकता के मापदण्ड मात्र स्त्री के लिए ही स्वीकारता है तो यह दर्शन उसे स्वीकार नहीं।
वह प्रकृति में खो जाना चाहती है,
जन्म को, जीवन को,

चरित्र, धर्म और ज्ञान को अपनी कर्मभूमि के रूप में पल्लवित करने हेतु दृढ़ संकल्प करती है।

वेद और संस्कृति के नाम पर
मात्र,
पुरुष ही परम्पराओं की रेखा खिंचता रहे
इस सत्य को स्वीकारने के लिए भी मनु तत्पर नहीं।
और
इसीलिए,
देकार्ते,
और
शंकराचार्य
के अद्वैत को कोई सरल या नई परिभाषा देना चाहती है। वह,
सही और सच्चा दर्शन पढ़ना और खोजना चाहती है

"मनु विचारों के बड़े सशक्त पख होते हैं, वह आते हैं और उड़ जाते हैं।"

शायद इसीलिए,
विचारों की लहरों को अधिकांश व्यक्ति पकड़ नहीं पाते।
विख्यात दार्शनिक गेटे का मत है कि—
सबसे मूल्यवान घड़ी वह है जो तुम्हारे सन्मुख है।
जो कुछ करना है,
वह,
अभी,
इसी समय कर डालो।
जानती हूँ अनाश।
समय वास्तव में नदी की धारा है,
और,
मनु, इन्सान को इस धारा में वह नहीं जाना चाहिए।
ठीक कह रहे हो,
जिसको तैरना नहीं आता हो,
जिसको पकड़ने वाला कोई न हो,
वह तो बस बह ही जाएगा न!
तुम दर्शन शास्त्र की प्रोफेसर हो न?
मनु ने अपनी झील-सी गहरी आँखें अनाश के मुख पर जमा दीं,
मानो कह रही हो, हाँ,
हाँ हूँ तो सही, बोलो तुम्हें एतराज है क्या?
मनु मौन थी,
पर बोल रही थी,
हाँ मैं दर्शन शास्त्र की प्रोफेसर हूँ।
तुमने शंकर का अद्वैतवाद पढ़ा है ना?

हाँ

उसका अर्थ जानती हो—पराएपन को दूर करके दूसरे के साथ एक हो जाना।

मोह की साकारता यही तो है।

कैसी बातें करती हो ? प्रेम और मोह जीवन से एकदम भिन्न होते हैं।

प्रेम की कोई सीमा नहीं होती।

उसमें किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता।

जो उसका पान करता है वह अमर हो जाता है। वह बिना किसी भेदभाव के सभी को समान प्रकाश की ऊष्मा देता रहता है।

डॉ० अनाश, व्यर्थ में आप दार्शनिक बन गए आपको तो सन्त होना चाहिए था।

मनु ने प्याले में चाय डालते हुए कहा।

मनु प्रेम कोई विषय नहीं होता,

जिसे पढ़ा या पढ़ाया जाए।

वह तो स्वयं ही......,

जी हाँ, उसका प्रादुर्भाव स्वयं होता है वह एक अनुभूति है।

अवश्य !

लेकिन प्रेम भँवर है, मनुष्य जीवन का शाश्वत भँवर।

मान लिया,

फिर इसे भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भँवर के चक्र से मुक्ति पाना अति दुर्लभ है।

अनाश !

हाँ मनु,

प्रश्न जब भोले मन में उगते हैं तो बड़े कोमल होते हैं पर उत्तर पाते ही वह करील के काँटों के समान चुभने लगते हैं।

इसीलिए तो कहती हूँ,

मृत्यु ही श्रेष्ठ सत्य है।

नहीं मनु !

मृत्यु मिथ्या है—जीवन सत्य है, सुन्दर है।

अनाश !

तुम कल्पनाओं में विचरते हो और भावनाओं की गति के साथ स्वयं को क्षितिज के उस पार ले जाना चाहते हो; मात्र, दूसरों को ही नहीं स्वयं को भी।

अनाश—एक क्षण खामोश हो गया।

अन्धकार और निस्तब्धता का मौन,

पीड़ा और भावनाओं के संघर्ष का मौन।

आकर्षक,

या,

भयानक।

इस स्थिर खामोशी को और अधिक क्षण नहीं दे सका अनाश।

जीवन की सारी कटुता···या···,

अनुराग, विराग सभी के दर्शन अनाश ने सहजता से कर लिए।

देवदारु की आग ही जीवन क्यों न हो, पर यह आग सुलगने से ही महकती है।

और,

इस समय,

सुलग भी रही थी और महक भी रही थी।

अनाश,

हूँ !

तुम कल्पना में जीवन का स्पर्श करते हो।

यही सत्य है।

जीवन का सत्य,

संसार का सत्य,

यहाँ तक कि,

ब्रह्मा के पास भी यही सत्य है।

जीवन सार्थकता का नाम है, और सार्थकताओं पर प्रश्न-चिन्ह नहीं लगते।

अनाश, जीवन की यात्रा कम त्रासदी नहीं होती।

इसीलिए तो कहता हूँ।

कि,

मृत्यु की प्रतीक्षा करना बड़ा ही कष्टसाध्य है।

विश्वास करो,

चिन्ता से जुड़े प्रश्नों को एक नई उत्प्रेक्षा मत दो।

मनु !

मत भूलो,

लोक मानस,

हम, तुम, सभी,

विखण्डित और आस्थाहीन हो रहे हैं, हमें जीवन में जीने के लिए आस्था

चाहिए। आस्था के लिए आसक्ति और आकर्षण भी चाहिए।

यह सत्य है लेकिन आस्था के लिए आसक्ति और आकर्षण होना आवश्यक नहीं है।

आवश्यक है आस्था—

जो जीवन का सम्बल है।

आवश्यक है गति।

गति के अनेक नाम हैं। दौड़, विजय, महत्वाकांक्षा।

एक रशियन कवि ने कहा है कि—

"मैं भगवान से इतना ही माँगता हूँ कि वह मेरे जीवन को सदा गति देता रहे जिससे संसार में रहकर मैं सब कुछ पा लूं। जिसे धरती का सुख कहते हैं।

हाँ, अनाश,

धरती का सुख!

अत्यधिक पीड़ा देता है यह शब्द,

भोगने वाले शब्द सदा ही पीड़ादायक होते हैं।

जीवन में भोगना,

कितनी बड़ी त्रासदी है,

अनाश!

मनु वेदना तो सभी की—प्राणीमात्र की सहचरी है। बस विभिन्न अवसरों पर यह भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे कपड़े धारण कर लेती है।

इसीलिए तो इस सहचरी के अनेकानेक रूप हैं।

फिर भी चाहना जीवन नहीं हो सकती।

चाहने की कोई रेखा थोड़ी है।

चाहना तो यह भी हो सकती है कि आसमान के तारे तोड़ लूँ और उन्हें फूलों की भाँति बिस्तर पर बिखेर दूं।

मगर यह यथार्थ नहीं है।

क्योंकि उन तक पहुँचने की न तो कोई डोर हमारे हाथ में है और न ही कोई शक्ति।

मनुष्य की चाहना कोई अर्थ रखती है क्योंकि उसके पास बुद्धि है।

चाहना,

बुद्धि,

यही एक मात्र सत्य है,

पूर्ण होने वाली महत्वाकांक्षा है।

चारों ओर धुआँ ही धुआँ है।

नहीं……,

'तुम नहीं जानते अनाश कि सत्य सदा अपूर्व ही होता है।'

"जानता हूँ मनु इसीलिए तो जीवन की अपूर्वता को अपनी धरोहर समझता हूँ उससे प्यार करता हूँ और तुम स्वयं की एकान्तता में खो जाना चाहती हो। सच कहूँ तुम तो सत्य का मुख भी अपनी भावनाओं सहित सुवर्ण के पात्र से ढक देना चाहती हो।"

अनाश,

तुम भी पुरुष हो न,

नारी को बाँधने की कातर चाह से तुम अछूते कैसे रह सकते हो?

मनु, पुरुष हूँ, इस सत्य से तो नकारना क्या सम्भव है?

अरे यह तो शाश्वत सत्य है।

तुमने जीवन को भार समझ लिया है मनु, क्या स्तुत्य है, क्या सत्य और क्या असत्य तुम तो यह भी जानना नहीं चाहतीं।

जीवन अग्नि है और उसमें तपना ही जीव की नियति है, धरती पर चलना अँगारों पर चलना ही है। और ऐसी स्थिति में छाले पड़ना भी स्वाभाविक है।

और इसको तुम जीवन की यथार्थता समझते हो?

हाँ मनु,

माया के मेघ से जगत रूपी जल वरसता है, पर उससे आकाश गीला नहीं होता।

अनाश, मानव कर्मों में इसीलिए लिप्त रहता है कि उसमें फल की वासना दृढ़ रूप से होती है।

आवश्यक भी है।

यही वासना तो कर्म बंध का कारण बनती है।

शब्दों के हेर-फेर से अर्थ नहीं बदलते, तात्पर्य कुण्ठित नहीं हो जाते।

"एकं सत् विप्रा वहुधा वदन्ति"

सत्य तो एक ही है,

उसे नाना प्रकार से सम्शोधित करने का अधिकार तुम्हें दे दिया गया है क्योंकि तुम्हारे पास बुद्धि है।

इस सत्य को दृढ़ से दृढ़तर रखने के लिए,

इस सत्य को सत्य ही समझने के लिए,

इसे शाश्वत बना देने के लिए ही तो किसी ऋषि ने कहा है—

"तेन त्यक्तेन भूजी थां"

जो कुछ है उसे बाँटकर खाओ—सहअस्तित्व ही तो तुम्हें एक दूसरे के समीप आने का अवसर देगा,

और,

तभी तुम सत्य को पहचान सकने के समर्थ होगे।

प्रेम सह-अस्तित्व की प्रथम सीढ़ी है और सह-अस्तित्व है "तेन त्यक्तेन भूजी थां"।

तुम नहीं जानते अनाश······,

बीच में ही बात काटकर अनाश ने कहा,

मुझे कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं, मैं तो बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम इस घेरे से बाहर निकलो।

काश की यह इतना सरल होता,

घेरे······घेरे······,

तुम्हें काटने होंगे,

मनु जीवन से अगर प्यार नहीं कर सकती तो न सही पर आदर तो करना सीखो।

If one can not love. One can at least respect.

यह क्यों भूल जाती हो कि—

Life has its own ability and way of adjustment.

अरे पौने दस बज गए।

घड़ी पर निगाह पड़ते ही अनाश चौंक गया।

मनु की प्रश्नवाचक दृष्टि स्थिर हो गई। अनाश के चेहरे पर मानो पूछ रही हो,

अच्छा, जा रहे हो !

शब्दों का विनिमय किए बिना ही अनाश ने प्रत्युत्तर दिया,

हाँ,

आज मेरा पहला पीरियड है।

अनाश खड़ा हो गया।

मनु देखती रही,

मनु सोचती रही,

क्या ?

यह तो वह स्वयं भी नहीं जानती।

सामने फैला हुआ सागर—जिसका छोर वह प्रयत्न करने के उपरान्त भी नहीं देख पाती,

क्या,

इन लहरों के गिनने को लिए उसने पापा से जिद करके यह बँगला बनवाया था ?

उस समय क्या वह जानते थे ?

कि······,

उनकी बेटी के भविष्य की रेखाएँ परमात्मा ने इतनी काली बनाई हैं कि अगर वह कहीं सफेदी ढूँढ़ना चाहे तो उसे इन उठती तरंगों से मन बहलाना पड़ेगा।

जो हो जाती हैं दूध सी श्वेत !

पर उसके जीवन में सफेदी,

क्या अर्थ है ? है······,

निरमा से धुली साड़ी पहन लेना।

वह मुस्करा दी।

अपनी मुस्कराहट का तो वह वर्षों पूर्व तर्पण कर चुकी है,

फिर भी,

कभी-कभी,

आ जाती है।

क्यों ?

क्या तर्पण में कोई भूल हो गई ?

कसैले स्वाद से उसका मुँह कड़वा हो गया, शब्दों में भी कितना कसैलापन होता है।

कितने विषाक्त,

वह तो परिचित है इनसे,

भुक्त भोगी,

बस,

नहीं आता उसे······,

तो किसी से शिकायत करना नहीं आता।

फिर,

एक सत्य यह भी है कि वह शिकायत करे किससे ?

किससे ?

गुड मार्निंग सर,

गुड मार्निंग एवरी बड़ी, प्लीज सीट डाउन।

सर, मे आई कमिंग।

इति सामने थी।

Itee do you feel proud, for coming late. then there is no

question for asking. Whenever you feel you entered and whenever you feel you vacate the class, without disturbing others.

इति मुस्काई।

I Don't disturb others—Those who are not interested in class they have liberty to vacate their seats.

इति कुछ बुदबुदाई पर कोई सुन नहीं सका।

प्रो० अनाश,

एक प्रोफेसर के रूप में ही नहीं अपितु जाने-माने दर्शन शास्त्री के रूप में भी उनका बड़ा सम्मान है, उनकी अपनी एक पहचान है।

उनका गम्भीर मौन व्यक्तित्व—

यह गरिमा बिरले ही लोगों को प्राप्त होती है।

दर्शन,

उनके मुख से,

साहित्य बन जाता है।

उनके विषय में विश्वविद्यालय में सबसे अधिक विद्यार्थी हैं।

चुम्बकीय आकर्षण है उनके व्यक्तित्व में,

विद्यार्थी,

सहयोगी,

एवं

प्रबुद्ध दर्शन-शास्त्री,

सभी उनकी विद्वता का लोहा मानते हैं।

सर,

एक क्षण के लिए अपनी सीट से उठा विद्यार्थी चुप हो गया मानो स्वयं से कुछ पूछ रहा हो?

बोलो अनन्त,

कहो क्या कह रहे थे?

सर आप पिछले दिनों बाहर गये थे।

हाँ,

हम वहाँ के अनुभव सुनना चाहते हैं।

शोभन ने खड़े होकर कहा,

जी सर, आप रुस्तावी गये थे, वहाँ के सम्बन्ध में कुछ बताइये।

हाँ, मैं त्बिलिसी विश्वविद्यालय गया था, वहाँ मेरे एक बड़े प्यारे दोस्त मि० पावेल शेगेलिया काम करते हैं। नगर की प्रकृति सुरक्षा समिति के अध्यक्ष उन्होंने ही आमंत्रण दिया था मुझे रुस्तावी पहुँचने का।

आपको रुस्तावी कैसा लगा सर ?

रुस्तावी में पर्यावरण की समस्याएं बहुत अधिक हैं ?

इस समस्या ने सर सभी देशों में उग्र रूप धारण कर लिया है, पर वहाँ की सरकार ने इस समस्या का क्या हल निकाला सर।

वहाँ पर अधिकांश रूप से पानी की पूर्ति आर्टीजियन कुओं से होती है। शहर और उसके परिवेश में पेड़-पौधे लगाए जा रहे हैं। वहाँ शहर के अधिकारियों ने शहर के परिवहन को ऐसा रूप देना प्रारम्भ कर दिया है जिससे तरल और घनीभूत गैस का उपयोग किया जा सके। यह लोग रुस्तावी के उत्तर-दक्षिण में बड़े-बड़े बाइपास बना रहे हैं ताकि मोटर-गाड़ियाँ शहर के बाहर-ही-बाहर निकल जाएं।

सर इससे क्या समस्या समाप्त हो जाएगी ?

उनके प्रयत्न के यह सब अंग हैं। पर्यावरण की स्थिति से अधिक सुचारू रूप से लड़ने के लिए उन लोगों ने एक चलती फिरती प्रयोगशाला बनाई है। यह प्रयोगशाला लाताविजा कार पर फिट है। जलाशय के प्रदूषण से बचने के लिए। कचरा रहित उत्पादन की प्रणाली निर्मित करने की भी उनकी बहुत सारी योजनाएं हैं।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि वहाँ के लोग अधिकाधिक दृढ़ता से इस प्रदूषण को हटाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

सर एक प्रश्न पूछूं ?

यस, वैलकम अनन्त।

सर समाजवाद के सम्बन्ध में उनके आज के विचार क्या हैं ?

शोभन ने खड़े होकर कहा,

सर आप वहाँ के विद्वानों से तो मिले होंगे ?

हाँ मिला था,

अतीत की माला गले में पहरे रहना कोई नहीं चाहता क्योंकि परिवर्तन ही जीवन का नाम है।

डॉ० जी० दिलिगैंस्की सोवियत के प्रखर विद्वान हैं उन्होंने मुझे बताया, लोगों का उपयोग निर्माण सामग्री में नहीं किया जा सकता। उन्होंने मार्क्स और एंगेल्स की थ्योरी को एक भ्रम बताया। उनका कहना है कि मनुष्य एक भवन नहीं है जिसकी योजना समाज के रूप में पहले से बना ली जाए और फिर उस योजना के अनुसार मनुष्य का गठन किया जाए। उनके अनुसार समाजवाद एक ऐसा विचार है जिसे मात्र मार्क्सवाद की हद में ही नहीं समझना चाहिए।

समाजवाद सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की एक प्रणाली है आप सब भी समझते हैं कि मानव परिवर्तनशील है और परिवर्तन मानव की एक सहज प्रक्रिया।

इसीलिए हर काल में, युग में मानवतावाद सम्बन्धी जनता के कल्याण में सुधार आना ही चाहिए। वहीं के दर्शनशास्त्र के एक प्रबुद्ध प्रोफेसर डॉ० अम्वार्त सुभोव बता रहे थे कि हमें शीशमहल नहीं बनाना चाहिए। कल क्या गलत था हमें इस पर अवश्य ही विचार कर लेना चाहिए। मार्क्स ने अपने पूर्ववर्तियों, यूरोपियाई समाजवादियों से बहुत कुछ उधार लिया है। समाजवाद एक विचार है सिद्धान्त नहीं।

उनके विचार हैं कि सोवियत संघ को आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक दृष्टि से सही मायने में एक वहुदलीय पद्धति वाला समाज बनाना चाहिए, विकास के आम सभ्य रास्तों पर लौटना चाहिए, अपनी अवधारणाओं पर फिर से विचार करना चाहिए तथा विश्व सभ्यता की समस्त उपलब्धियों का लाभ उठाना चाहिए। उनका विचार है कि प्रगति को नापने के लिए एक व्यापक कसौटी होनी चाहिए—सामाजिक न्याय से भी व्यापक।

प्रखर समाज शास्त्री डॉ० वी० डी० मेझुयेव से भी मिला। समाजवाद के विषय को लेकर आपकी पाँच-छह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और वह वि०वि० में रीडर हैं, उन्होंने बताया कि समाजवाद एक विचार है, एक कार्यक्रम है या एक लक्ष्य—सार्वजनिक स्वामीत्व की अवधारणा समाजवाद के लिए सर्वप्रमुख है, किन्तु इसे महज समाजीकरण तक सीमित नहीं किया जा सकता, जैसा कि सोवियत संघ में हुआ। समाजवाद का उद्देश्य है मनुष्य को अर्थतन्त्र से स्वतन्त्र करना।

वहाँ—

सर समाचार पत्र में आपकी ओर डॉ० च० स्त्रोपिन की चर्चा भी तो प्रकाशित हुई थी।

हाँ शोभन उनसे भी मिला था, उनकी मान्यता है कि समाजवाद किसी देश में निर्मित प्रणाली नहीं यह तो विश्वव्यापी प्रक्रिया है, और मार्क्स भी इसे विश्वव्यापी प्रक्रिया ही मानते थे।

समाजवाद एक ऐसा समाज है जो मानव सभ्यता की तमाम उपलब्धियों का पूर्णतया उपयोग करने में समर्थ है। यह केवल प्रविधि पर ही नहीं बल्कि संस्कृति, जनवादी तरीकों के विकास तथा समाज के नियमन और व्यक्ति की सृजनात्मक क्षमता के प्रोत्साहन के रूपों के विकास पर भी लागू होता है।

सामाजिक उपव्यवस्थाओं के विकेन्द्रीकरण और उनकी विविधता का अभियान विश्व के विकास की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। सामाजिक सम्बन्धों के क्षेत्र में जीवन की अधिक विविधता तथा विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं का अधिक विनिमय मनुष्य के सामाजीकरण की समस्या को एक नया आयाम देती है। वहाँ के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ० जी ग्रेकोव ने मुझे भोजन पर आमन्त्रित

किया था। उन्होंने बताया कि कल के समाजवाद और आज के समाजवाद में में अन्तर आ गया है। वर्षों से सोवियत विचारधाराविद मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की कृतियों के सिवाय किसी भी समाजवादी नेता या चिन्तक की कृति का उल्लेख नहीं किया जाता था जबकि आज रोजा, लकजेमवर्ग, बोदानोव, विली-ब्राँट, जयार्जी लुकास और ऐसे कितने ही विद्वानों की पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं लोग उन्हें पढ़ रहे हैं। अर्थात् आज के बुद्धिजीवी का मानस मन यह जानना चाहता है कि समाजवाद के सम्बन्ध में गैर समाजवादियों के क्या विचार हैं। मात्र इतना ही नहीं वह जवाहरलाल नेहरू, बर्ट्रेण्ड रसैल और वर्नर सोम्बर्ट को भी पढ़ने का इच्छुक है।

वहीं पर मिले एक विद्वान मि० अन्तोनोविच ने तो मुझे बताया कि समाजवाद मेहनतकश लोगों का स्वाभाविक राज्य है। हम विश्व इतिहास की एक अत्यन्त नाटकीय अवधि के साक्षी हैं।

वास्तव में वहाँ आम जनता के पास समाजवाद की एक रेखा है और हमें भी चाहिए कि हम जनता के स्वतः स्फूर्त समाजवादी विचार का अध्ययन करें और उसी के अनुसार उसकी समीक्षा।

विश्वविद्यालय की घण्टी ने प्रोफेसर अनाश और विद्यार्थियों की तन्द्रा भंग कर दी।

अनन्त और शोभन दोनों एक साथ अपनी सीट से उठ कर खड़े हो गए।

शोभन ने कहा—

सर पर्यावरण की समस्या और वहाँ के समाजवादियों के विचार आज अधूरे रह गए मैं अपनी ओर से व अपनी क्लास की ओर से आपसे अनुरोध करूँगा कि आप अपनी यात्रा के पूरे अनुभवों से हमें परिचित करायेंगे।

प्रो० अनाश मुस्करा दिए,

एवं

स्वीकारात्मक भाव में उन्होंने अपना सिर हिला दिया।

प्रो० अनाश के पीछे-पीछे ही इति भी क्लास के बाहर निकली।

प्रो० के चैम्बर में पहुँचकर उसने अपनी स्लिप चपरासी को दी और कहा कि वह प्रोफेसर से मिलना चाहती है।

कमरे में जब इति ने प्रवेश किया तब प्रोफेसर लिखने में व्यस्त थे उनकी मुख मुद्रा बता रही थी कि उनकी कलम किसी आवश्यक विषय पर निर्देश दे रही थी।

गुड आफ्टर नून सर,

सिर फाइल पर झुकाए-झुकाए ही प्रोफेसर ने कहा,

आफ्टर नून, सीट डाउन।

इति प्रोफेसर की निमग्नता दत्तचित होकर निहारती रही।

कुछ क्षणों के उपरान्त इति के लिए यह प्रतीक्षा असह्य हो गई।

उसे लगा कि—घण्टों व्यतीत हो गए।

कब रुकेगी प्रोफेसर की कलम ?

मन ने कहा—

यह व्यक्तित्व और इतना भार !

बोझा—और—बोझा !

हाँ कहिए !

चौंक गई इति।

सँभलकर बोली,

सर मैं आपके निर्देशन में पी० एच० डी० करना चाहती हूँ।

तुम्हें पता है न कि गत दो वर्ष से कोई भी विद्यार्थी मेरे पास शोध कार्य नहीं कर रहा है।

सर, विश्वास कीजिए मेरे कारण आपको कोई कष्ट नहीं होगा।

मेरे पास समय ही नहीं है।

सर,

तुम डॉ० मैथ्यु के अण्डर कार्य करो। बड़े प्रतिभाशाली विद्वान प्रोफेसर हैं।

नहीं सर, मुझे तो आप ही थोड़ा-सा समय दे दीजिए। मैं अगर हाँ भी कर दूँ तो विद्यार्थी के साथ अन्याय करूँगा, और शायद तुम नहीं जानतीं कि अगर मेरे विद्यार्थियों के प्रति मेरे द्वारा अन्याय हुआ—एक पल खामोश रहकर बोले, मैं अपने को कभी क्षमा नहीं कर सकूंगा।

सर,

नहीं इति यह सम्भव नहीं।

सर, मेरी बात······,

तुम शायद शोध का मूल्यांकन नहीं कर पा रही हो। यह इतना आसान कार्य नहीं है।

सर,

इसको तुम अपने अहं या जिद का रूप क्यों देती हो ज्ञान का अर्जन अहं या जिद से नहीं होता।

सर आपका इशारा···

शोध के लिए इशारा या सहयोग नहीं···

मुझे विश्वास है,

विश्वास का प्रश्न नहीं यहाँ प्रगति का प्रश्न है, तुम्हारा शोध तुम्हारी प्रगति है विश्वास या आस्था नहीं।

सर में आपके ऊपर कोई बोझ नहीं डालूंगी।

बोझ का प्रश्न कहाँ, तुम्हारे परिश्रम को सही दिशा मिलनी चाहिए वह निराधार नहीं जाना चाहिए। तुम्हारी थीसिस काले-नीले अक्षरों का समन्वय नहीं होनी चाहिए। सर, मैं तो बस इतना जानती हूँ कि अगर मैं शोध करूँगी तो आपके निर्देशन में ही।

प्रोफेसर की दृष्टि ऊपर उठी।

सच कह रही हूँ सर आपको मुझे गाइड करना ही होगा।

उसकी आवाज में अहं भरा हठ था।

प्रोफेसर की आवाज तेज हो गई।

इति, यह तुम्हारा घर नहीं यह विश्वविद्यालय है, तुम इसकी एक छात्रा।

सत्ता और सम्पदा का रौब सरस्वती को कभी नहीं डिगा पाया। उसकी तो पूजा ही करनी पड़ती है। और याद रखना कि आज की बदतमीजी दुबारा न हो। इस मन्दिर में आवाज ऊँची करके बोलने का अधिकार किसी को नहीं है।

अब तुम जा सकती हो।

सर मैं क्षमा चाहती हूँ आप जो कहेंगे, जो माँगेंगे···

इति,

प्रो० अनाश जोर से चिल्लाए।

तुम जैसी लड़कियाँ क्या दे सकेंगी किसी को ?

और,

और, मुझे,

I say get out.

सर, मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं था।

वास्तव में जो नहीं निकलना चाहिए था वही शब्द उसकी जीभ से फिसल गया।

तुम्हारा तात्पर्य जानने की कतई मेरी इच्छा नहीं।

सर,

मैं,

सर,

तुम जैसी लड़कियाँ विश्वविद्यालय के लिए श्राप हैं।

सर,

मैं कुछ नहीं सुनना चाहता, गैट आउट।

प्रो० अनाश सोचने लगे······;

कहाँ जा रहे हैं हम ?
हमारी यह उच्छृंखलता,
आधार टूट रहे हैं,
नीवें हिल रही हैं,
फिर नैतिकता के अर्थ ही कहाँ ?
क्या इस स्थिति को सम्भाला जा सकेगा ?
वेदना से पीड़ित···,
स्तब्ध !
विश्रब्ध।
कौन जलाएगा मशाल
क्या हो रहा है कौन पूछेगा ?
आज हर वस्तु को,
अर्थ के मापदण्डों से नापा जाने लगा······,
और,
रात दिन मानव अर्थ के ही अर्थ जानने के लिए घूमता रहता है।
फिर,
इसका परिणाम,
अधूरा,
सब कुछ अधूरा,
लिखना पढ़ना भी तो अधूरा ही रहेगा।
अनर्थ,
अज्ञान,
ज्ञान को स्थान कहाँ ?

दर्शन और आचरण के बीच की खाई जब बहुत बड़ी हो जाती है तभी तो अनर्थों का जन्म होता है।

अगर यह दर्शन सत्य है,
अगर,
हमारे अतीत के पृष्ठ सत्य हैं,
पता नहीं कहाँ खो गए प्रो० अनाश।
'कलौ' का अर्थ है युग।

यह युग दोषों का सागर, कलह और असहमतियों से पूर्ण बुद्धि दुष्टता से लिपटा,

फिर,
शान्ति विश्वास,

यह शब्द मात्र शब्द ही हैं,
क्या मात्र पुस्तकों में लिखी बातें ?
एक क्रान्ति होनी चाहिए,
सम्पूर्ण क्रान्ति,
जहाँ,
पहुँचकर इस भौतिकी युग का कोई चिन्ह भी शेष न रहे।
कैसी है यह प्रगति ?
कैसा है यह आत्मनिर्भरता का स्वरूप ?
टुकड़े-टुकड़े,
बिखरा बिखरा,
टूटा, मरोड़ा, चरमराता,
फिर प्रगति कैसी ?
सच्चाई तो यह है कि मानव जाति को लकवा मार गया है......,
भावनात्मक और क्रियात्मक रूप से।
यह कैसा स्वालम्बन है ?
स्वयं के मन को झझकोरने के लिए,
स्वयं के प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए,
वह अतीत में गहरे डूबते गए।
वह अनुकरणीय है,
जिसके स्मरण मात्र से आँखों में चमक आ जाती है।

इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि अतीत ने ही भारतीय संस्कृति को परिपक्वता दी, शब्दों के अर्थ समझाए।

आज की शिक्षा—?
कबीर एक जुलाहा था,
करघे पर कपड़ा बुनने वाला जुलाहा।
किस विश्वविद्यालय ने उसे डिग्री दी थी ?
एक पंथ दे गया।

गौरा एक कुम्हार था। जीवन भर चाक पर ही उसके हाथ घूमते रहे। जीवन भी तो एक चक्र है जो घूमता रहता है।

साँवला माली सब्जी बेचता था सारा दिन कठिन परिश्रम करता था।

लेकिन पेट की क्षुधा के साथ-साथ मन की क्षुधा की तृप्ति भी करता था।

सेना नाई लोगों की हजामत बनाता था, हजामत बनाकर दर्पण में लोगों को शक्ल दिखाता था जितनी सुन्दर दाढ़ी बनती, उतना ही सुन्दर मन बने। इसी प्रयत्न में भटकता रहता था।

जैनाबाई, अनाज की दुकान करती थी। गेहूँ, ज्वार, बाजरा पीस कर लोगों को देती थी। घर्र-घर्र की आवाज के साथ वह जनमानस को बदल देना चाहती थी।

आज भी,

धर्म और प्रेम के शब्दों से लिपटी जैनाबाई घर घर में सुरक्षित है।

रैदास जूते बनाते थे, सदन खटीक का काम करता था,

लेकिन इनकी वाणी पढ़कर आज का शिक्षित एवं सुसंस्कृत समाज भी रोमांचित हो जाता है।

कर्म की दृष्टि से ज्ञान का अत्याधिक महत्व है।

हम में पूर्णता की कमी क्यों है?

अपने प्रति,

अपने काम के प्रति!

विज्ञान ने कर्म के क्षेत्र में आश्चर्यजनक क्रान्ति की है। हम चाँद-सितारों को छूने के प्रयत्न में सफलता की सीढ़ी चढ़ते जा रहे हैं।

पर,

क्या फायदा?

ऐसा क्यों नहीं हमें प्रतीत होता,

कि,

यह सब व्यर्थ है,

यह भाग दौड़,

यह रस्साकशी,

वास्तविकता तो यह होनी चाहिए थी कि हम जीवन का अर्थ समझें विज्ञान की इमारत हमें अध्यात्म की नींव पर खड़े होना सिखाती?

भारतीय संस्कृति—

अवहेलना?

भव्यता एवं आदर का स्तम्भ।

मन पक्षियों के उन्मुक्त पंख लेकर उड़ा जा रहा था,

साथ थी,

अशान्ति!

भय!

उत्तेजना।

या

विवशता।

वास्तविकता तो यह थी।

कि,
इस पंछी के पास कुछ था,
तो,
अशक्यता।
जो हमें विवश करती है,
जिसके कारण,
हम,
मुखौटों से कृतज्ञताज्ञापन का अभिसार करते हैं।
कृतज्ञता नहीं,
आस्था नहीं,
चपरासी ने आकर पूछा,
साहिव, तवीयत खराव है क्या ?
घड़ी पर दृष्टि डाली सात वजकर दस मिनट हो रहे थे।
उफ—
अभी तक,
वह विचारों के मुक्त गगन में ही दौड़ रहे थे।

मनु विस्मृतियों से स्मृतियों की धरती पर आ गई।
कितनी कड़वी हैं,
पूर्व की यादें,
इतनी कड़वाहट होने पर भी पूर्व की स्मृतियाँ अकसर उसे स्पर्श करती रहती हैं।
भूल जाओ !
एक नया जीवन,
नए स्पन्दनों के साथ प्रतीक्षा कर रहा है,
प्रसन्न रहना सीखो,
अनाश कहता है।
नए स्पन्दन।

कितनी अप्रत्याशित टीसें हैं जिनकी वेदनाओं की लोरियाँ उसके मन-मष्तिष्क से आज तक हटी नहीं, निराशा के वादल आपस में टकरा-टकरा कर जिजीविषा की विजलियाँ चमकाने लगते हैं।

वर्षों पूर्व की वातें मन के गवाक्ष में ध्वनि-विम्वों के रूप में आज भी ज्यों की त्यों चित्रलिखित-सी हैं।

भूलना !

कैसे भूलें ?

आज भी वह दिन और उस क्षण की पीड़ा की स्मृति ·········क्या सच में उसने सुरक्षित करके रख रखी है।

वास्तव में वह तो सब कुछ भूल जाना चाहती है।

फिर !

लेकिन।

वह प्रताड़ना उसे नहीं छोड़ती, बार-बार आकर हलके सेउसे स्पर्श कर जाती है।

जीवन के घिनौने क्षण,

घिनौने निर्णय,

क्या इसी का नाम है ?

आकाश को छूने वाली गर्व की मीनारें,

और,

स्नेह,

उसका स्नेह, उसका प्यार।

वह तो प्यार के अगम समुद्र में डूब जाना चाहती थी,

लेकिन जो समुद्र उसे मिला, उसमें तो वह स्वयं डूबती जा रही है,

वर्षों पूर्व की बातें,

घटनाएं।

जरा भी तो फीकी नहीं पड़ी हैं।

उसे प्रो० आलेक्सांद्राविनो से अधिक रोष अपने पर है उसने गलती कैसे की ?

शायद इसीलिए,

आज भी मन के चकडोल में टीस भरी भावनाओं का चक्रवात डोल रहा है।

और !

मन,

मन तो पंख लगाकर उड़ता रहता है काश वह मन के पंखों को काट सकती।

अगर,

वह प्रो० अनाश से न मिली होती ?

वह भूल जाना चाहती है।

कि—?

क्या—?

विदेश का भ्रम या विदेशी का दर्प ?

दर्प रूपी पंखी के सुनहरे पंख काटकर तुमने मेरा उपकार किया है पर शल्य-चिकित्सा उतनी अच्छी नहीं हो पाई, इसीलिए जख्म भरा नहीं,

फिर मैं सामान्य कैसे हो पाऊँगी ?

मथता हुआ प्रश्न,

नहीं एक निर्देश मिल गया है,
जिससे तृप्ति न मिली हो,
शान्ति न मिली हो,
पर सहारा अवश्य मिल गया है ।

शान्ति तो स्वयं स्थापित करनी पड़ती है जो वह नहीं कर पाई ।

हालाँकि,
प्रो० अनाश के संसर्ग ने उसकी अन्तर-चेतना के द्वार खोल दिए हैं,
वह सोचने लगी है ।

अनाश ने कहा था,

विश्वास प्रत्येक युग का एक ऐसा लोह तन्त्र है जिस पर किसी भी प्रकार की चोट का असर नहीं होता ।

विषपान करके भी वह अजर है, अमर है ।

विश्वास !
किस पर विश्वास,
अपने आप पर,
समय को मुट्ठियों में नहीं बाँधा जा सकता,
लेकिन समय अपने साथ सदा विचारों को चिपकाए रहता है,
विचारों के क्रम में गतिशीलता नहीं···?

स्वप्न भंग की प्रक्रिया,
कड़वे विचारों पर क्यों नहीं लागू होती ?

अचानक उसे खयाल आया कि आज बुध है और प्रो० अनाश के साथ उसने जर्मन से आए हुए वेदान्त के लब्धप्रतिष्ठित प्रो० हैंगरी को अपने यहाँ भोजन पर आमन्त्रित किया है ।

प्रो० अनाश रुस्तावी गए थे,
वहीं उनकी भेंट व्याख्यान देने आए डॉ० हैंगरी से हुई थी ।
लौट कर बहुत प्रशंसा की थी उन्होंने,
देहली विश्वविद्यालय के आमन्त्रण पर आजकल वह भारत आए हुए हैं,
जर्मन दूतावास में कल उनका व्याख्यान था,
विषय भी बहुत सुन्दर था । पर वह नहीं जा पाई ।

"आत्मा और ब्रह्म !"
"अनन्त ज्ञान एवं अनन्त आनन्द ।"
फिर,
उसे क्यों नहीं मुक्ति मिलती,
मनु !
स्वयं से, प्रश्न,
उत्तर कर रही थी,
तुम्हें भी मुक्ति मिली है,
पर,
तुमने,
उसे पहचानने की,
या
समझने की कोशिश नहीं की ।
मनु !

अपनी इस छोटी-सी कुटिया में मनु आपका स्वागत करती है ।

प्रो० अनाश के साथ आए प्रो० हैंगरी का स्वागत करते हुए मनु मुस्करा दी ।

आप इसे कुटिया कहती हैं ?

फिर तो मुझे सौन्दर्यबोध के लिए नए शब्द-कोश की रचना करनी पड़ेगी। क्यों प्रोफेसर ?

प्रो० अनाश की ओर देखते हुए प्रो० हैंगरी ने पूछा ।

मुस्कराते हुए प्रत्युत्तर प्रो० अनाश ने दिया,

डॉक्टर युक्तिपूर्वक ज्ञान है मनु के पास,

और इसी को हमारी भाषा में दर्शन कहते हैं ।

आप डॉ० साहिब, इतनी सुन्दर हिन्दी बोलते हैं कि मुझे आपसे ईर्ष्या होने लगी है ।

मनु प्रो० हैंगरी को इंगित करते हुए बोली ।

दर्शन और ज्ञान······,

मनु,

बीच में ही प्रोफेसर बोले, 'तुम्हारे भारतीय दर्शन के अनुसार मुझे तत्व का साक्षात्कार हो गया, मानोगी ?

प्रो० हैंगरी जोर से हँसे,

प्रो० अनाश ने बीच में टोका,

डॉक्टर आप क्या यह कहना चाहते हैं कि भारतीय दर्शन का अर्थ केवल हिन्दुओं का दर्शन है।

नहीं, नहीं डॉ० अनाश,

मैं ऐसा कभी नहीं मानता कि भारतीय दर्शन का अर्थ मात्र हिन्दू दर्शन ही है, वास्तव में हिन्दू शब्द का अर्थ वैदिक धर्मावलम्वी है तो भारतीय दर्शन का अर्थ केवल हिन्दुओं का दर्शन कैसे माना जा सकता है। भारतीय दर्शन की दृष्टि बहुत व्यापक है।

मनु ने धीरे से कहा, 'डॉक्टर आप जानते हैं कि कितने मतभेद हैं, कितनी शाखाएँ हैं हमारे पास।'

माई डीयर यंग लेडी,

जी,

बुद्धि ही तो तर्क करना सिखाती है और जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ तर्क तो होना ही चाहिए, उपेक्षा नहीं। शाखाएँ समीक्षा करती हैं, एक दूसरे को समझ कर किसी सिद्धान्त पर पहुँचने के लिए और देखिए मेरा तो यह विश्वास है कि भारतीय दर्शन की प्रत्येक शाखा अपने में अत्यन्त समृद्ध है, ठोस धरातल पर खड़ी है।

इसका कारण ही उसकी समृद्ध और उदार दृष्टि है।

वेद और दर्शन,

आपका क्या विचार है ?

आपकी दुनिया में—,

मानव की दुनिया एक ही होती है उसमें भिन्नता करना कैसे सम्भव हो सकता है ?

वेद भारत का आदि साहित्य है,

और मैं मानती हूँ कि,

इस आदि साहित्य का प्रभाव भारतीय दर्शन पर दो प्रकार से पड़ा है।

डॉ० हैंगरी वेद की दो विचारधाराएं थीं एक का सम्बन्ध कर्म से था दूसरे का ज्ञान से, एक को वैदिक कर्म-काण्डों का नाम दिया गया और दूसरे को ज्ञान काण्ड का नाम, और फिर इनके ही द्वारा वेदान्त जैसे विशाल दर्शन का जन्म हुआ।

करैक्ट यंग लेडी।

सांख्य, योग, न्याय आदि दर्शनों की उत्पत्ति वैदिक विचारों से नहीं हुई है इनका जन्म लौकिक विचारों से हुआ है। लेकिन यह वेद विरोधी नहीं हैं। लेकिन कुछ दर्शन वेद विरोधी अवश्य हैं, जैसे चार्वक, बौद्ध तथा जैन।

डॉ० हैंगरी···,

प्रो० अनाश बीच में ही बोले,

मैं तो आप लोगों जैसा विद्वान दर्शन शास्त्री नहीं। पर इतना कह सकता हूँ कि प्रत्यक्ष ज्ञान दर्शन का आधार है तथा युक्ति उसका प्रमुख साधन है।

यह तो स्वाभाविक है।

डॉ० साहिब,

मनुष्य विचारशील होता है, अतः वह जब तक किसी विषय को स्वीकार नहीं करता तब तक वह युक्ति-संगत नहीं होता, और जब दार्शनिक विचार युक्ति के साथ-साथ मार्जित बुद्धि तथा शुद्ध हृदय महापुरुषों की अनुभूतियों का समर्थन पाता है तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है। डॉक्टर मनु के कथन में सच्चाई है और हमें यह कभी नही भूलना चाहिए कि भारत में दर्शन को जीवन का एक अंग माना गया है, इसीलिए भारतीय दर्शन अपने-अपने क्षेत्र में सीमित नहीं रहते। उनमें पारस्परिक आलोचनाएं चलती रहती हैं। इसी सत्य के कारण भारत नें हजारों धार्मिक ग्रन्थों की रचना हो गई है।

चार्वक के भौतिकवाद से लेकर शंकर के वेदान्त तक जितने दर्शन हैं सभी योग्यता के विचारों की परिपाटी में आकर अपना भिन्न-भिन्न मार्ग बनाते हैं।

डॉ० अनाश।

मैंने अभी कहा न कि भारतीय दर्शनों में मतभेद तो अवश्य पाया जाता है किन्तु भारतीय संस्कृति की छाप के कारण उनमें साम्य भी अधिक मात्रा में होता है और इसी साम्य को···,

मनु,

तुम्हारी भाषा में,

इसे नैतिक तथा आध्यात्मिक साम्य कहा जाता है।

आज अवसर मिला है तो पूछना चाहूँगी कि कुछ पाश्चात्य विद्वानों का कथन है कि भारतीय दर्शन केवल नीतिशास्त्र या मात्र धर्मशास्त्र है। पाश्चात्य दर्शन शास्त्र से कहीं पीछे क्या आपकी भी यही राय है ?

नहीं मेरी मेजबान !

यह भ्रम है !

भारतीय दर्शन में युक्ति की उपेक्षा नहीं की गई है। भारतीय तत्व विज्ञान, प्रमाण विज्ञान तथा तर्क विज्ञान किसी भी दृष्टि से पाश्चात्य दर्शन से कम नहीं।

मैं तो इतना ही समझती हूँ कि······।

प्राणी मात्र के दुःखों का क्या कारण है इसे जानने के लिए भारत के सभी दर्शन प्रयत्न करते हैं, और क्योंकि भारतीयों में विशेष आध्यात्मिक मनोवृत्ति है

इसलिए वह सतत कुछ नई खोज करके नए सिद्धान्तों को ढूँढ़ते रहते हैं जिसके कारण वह कभी निराश नहीं होते उनकी जीवन के प्रति दृढ़ आस्था बनी रहती है।

यंग लेडी…,

डॉ० साहिब,

वास्तविकता तो यह है कि प्राणी अपनी तृष्णाओं और अपने उद्वेगों के वशीभूत रहता है उसके उद्वेग में अशान्ति होती है और तृष्णाएं तो कभी सहज शान्त होती ही नहीं। इसीलिए हमारा दर्शन नैराश्य और खोज के अतिरिक्त कुछ नहीं दे पाता।

नहीं मनु नहीं ऐसा नहीं,

एक बहुत बड़े सत्य को तुम नकार नहीं सकतीं कि भारतीय दर्शन भले ही नैराश्य की पगडण्डी पर चलता हो, लेकिन जितना आशान्वित यह है उतना कोई दर्शन नहीं इस तथ्य को आज तक किसी भी देश के विद्वान ने अस्वीकार नहीं किया।

हमारी जितनी आकाँक्षाएँ हैं उनमें नैतिक व्यवस्था की आकांक्षा अपने आप से सदा जुड़ी रहती है।

दांते और वड्सवर्थ जैसे प्रख्यात कवियों को भी नैतिक व्यवस्था के अस्तित्व में पूरा विश्वास था, भारत के सभी दर्शनों में नैतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास और श्रद्धा का समावेश है।

इसीलिए प्रसिद्ध सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी लिखता है—

मैं खनिज के रूप में मर गया,
और वनस्पति बन गया,
मैं वनस्पति के रूप में मर गया,
और उठकर पशु हो गया,
मैं पशु के रूप में मर गया।
और आदमी हो गया,
मैं क्यों डरूँ?
मृत्यु से मुझे कहाँ घाटा हुआ?

क्या कहोगी इस दर्शन को मनु?

नैराश्य!

नहीं,

डॉ० साहिब क्या तर्क से ईश्वर की सिद्धि हो सकती है?

नहीं,

तर्क से ईश्वर क्या किसी भी बात की सिद्धि नहीं हो सकती।

मैं तो इतना जानती हूं, अस्तित्व का ज्ञान अनुभव के द्वारा ही हो सकता

लाट्जा ने लिखा है कि ईश्वर सम्बन्धी हमारे ज्ञान के सम्बन्ध में कि उसके अस्तित्व के लिए जितनी युक्तियाँ दी जाती हैं वह तो मात्र हमारे विश्वास के समर्थन के लिए हैं।

और,

यह इस बात का संकेत करती है कि हम किन-किन ढंगों से पारमार्थिक सत्ता के सम्बन्ध में जान सकते हैं, अर्थात् ईश्वर का ज्ञान साक्षात अनुभव के द्वारा ही हो सकता है, तार्किक युक्तियों के द्वारा नहीं।

डॉ० साहिब,

ईश्वर का अपरोक्ष ज्ञान रहने पर अगर हम युक्तियों का ढेर भी लगा लें तो भी हम उसके अस्तित्व में विश्वास नहीं उत्पन्न कर सकते।

मनु,

जी,

ईश्वर का साक्षात अनुभव नहीं रहता तभी हमें उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए ऋषियों, श्रुति अर्थात् ज्ञानों के संग्रहों को पढ़ने की, मनन की, चिन्तन करने की आवश्यकता रहती है। ईश्वर मात्र एक प्रतिक नहीं एक अनुभूति है।

तुम एक सत्य भूल जाती हो, वैज्ञानिक नियम की सत्यता के लिए वैज्ञानिक एवं उसके विज्ञान की उपलब्धियाँ स्वयं प्रमाण हैं। उसी प्रकार ईश्वर सिद्धि के लिए श्रुति भी प्रमाण है।

मैं आपकी बात मानती हूँ,

लेकिन आपको नहीं लगता······,

भारतीय जीवन विरोधाभासों का समूह है, पाश्चात्य दर्शन तो मैंने पढ़ा नहीं पर हमारे यहाँ कितनी ही ऐसी भ्रान्तियाँ हैं, किसी स्थान पर कहा जाता है कि ईश्वर ने ही हमारे वेदों की रचना की, और कहीं कहा जाता है कि वेद ईश्वर का प्रमाण हैं। एक से ईश्वर से वेदों के प्रामाण्य की सिद्धि होती है और दूसरे में वेदों से ईश्वर की सिद्धि की जाती है।

तुम्हारे मुंह से,

विशेषकर, एक भारतीय के मुँह से यह सब सुनकर बहुत अच्छा लगा। अच्छा पढ़ती हो, और अच्छा मनन करती हो। सच तो यह है कि अस्तित्व की दृष्टि से ईश्वर ही प्रथम है, उसने······बीच में ही प्रो० अनाश बोले,

उसी ने वेदों को व्यक्त किया है,

उन्हें प्रमाणिक रूप दिया है,

किन्तु मनुष्य ज्ञान की दृष्टि से वद ही प्रथम है प्रो० अनाश, उन्हीं के द्वारा ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हुआ है।

लेकिन······,

वेदों के ज्ञान के लिए यह आवश्यक नहीं कि हम ईश्वर पर निर्भर रहें, वेदों का ज्ञान तो हमें किसी योग्य शिक्षक द्वारा भी प्राप्त हो सकता है।

मेरी तो एक बात नहीं समझ आती कि ईश्वर ने किस प्रयोजन के लिए संसार की सृष्टि की है। क्योंकि बिना कारण कोई काम हो ही नहीं सकता।

मनु सृष्टि की रचना में ईश्वर का अपना कोई प्रयोजन नहीं वह तो स्वयं पूर्ण है। उसकी सृष्टि केवल सुखमय हो यह कल्पना करना हमारे लिए अनुचित एवं निराधार है।

डॉ० साहिब, मैं तो एक ही सत्य जानती हूँ कि समस्त दुःखों का मूल कारण एकमात्र अज्ञान है।

अरे मनु,

जी !

यहाँ तुमने हम लोगों को दर्शन शास्त्र के शास्त्रार्थ के लिए बुलाया है या खाना खाने ?

भोजन के बिना पेट में चूहे कूदने लगे हैं।

डॉ० अनाश ने इस बढ़ते हुए विवाद,

या मग्न होती हुई चर्चा को रोकने का प्रयत्न किया।

प्रोफेसर,

जी !

मनु जी प्रो० हँगरी आपके यहाँ आज भोजन पर आमन्त्रित हैं भूल तो नहीं गईं।

नहीं, एकदम नहीं।

यह समस्त भौतिक जगत एक प्रकार का लीला स्थल है जो जीवों की उन्नति और मुक्ति के लिए रचा गया है।

मनु संसार के सभी कार्यद्रव्य चार प्रकार के परमाणुओं, पृथ्वी, जल, तेज और वायु द्वारा बनते हैं और वह कर्मफल के अनुसार प्रेरित होते हैं।

यह विश्व एक राजतन्त्र है,

हमारा शरीर एक राष्ट्र है जो बुद्धि रूपी योग्य शासक की इच्छा से नियन्त्रित होता है और इसके सभी नागरिक अपनी-अपनी स्वतन्त्रता और दायित्व के साथ अपनी-अपनी आत्मोन्नति और आत्म-विकास करते हैं।

जीवात्मा अपनी बुद्धि ज्ञान और कर्म के अनुसार सुख-दुःख का भोग करती है। पुण्य का फल सुख और पाप का फल दुःख होता है। जीवात्मा के सुख-दुःख केवल प्राकृतिक नियमों के अधीन नहीं बल्कि कर्मफल के नियमों पर ही आश्रित रहते हैं।

और,

कर्मफल का नियम है······

"जो जस करहिं सो तस फल चाखा।"

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा,

मनु प्रत्येक सृष्टि के पूर्व लय की अवस्था रहती है और प्रत्येक लय के पूर्व सृष्टि की। सृष्टि का अर्थ है पुरातन क्रम का ध्वंस कर नवीन का निर्माण करना।

ईश्वर सृष्टि की रचना करता है।

हाँ,

इस सृष्टि रूपी ब्रह्माण्ड को ब्रह्मा या विश्वात्मा जो अनन्त ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य के भण्डार हैं संचालित करते हैं एवं पुराकृत धर्म और अधर्म के अनुसार जीवों के सुख-दुःख का भोग होता है।

और सृष्टि अनन्त काल तक,

नहीं,

चल सकती,

इसीलिए प्रलय होता है,

हाँ,

स्वाभाविक है,

जिस प्रकार दिन के वाद रात आती है उसी प्रकार सृष्टि के वाद प्रलय होना भी स्वाभाविक है।

मैंने,

तो पढ़ा है,

कि,

यह संसार अनित्य है और कभी-न-कभी इसका लय हो ही जाएगा।

डॉ० अनाश बोले,

किसी सीमा तक इस सत्य को भी स्वीकारा जा सकता है,

दीपक का प्रकाश भी एक समय बुझ जाता है कभी-न-कभी समुद्र भी सूख जाते हैं उसी प्रकार कभी-न-कभी सूर्य का प्रकाश भी बुझ जाएगा लेकिन जीवात्मा नित्य माने गए हैं, प्रलय में केवल शरीर का नाश होता है आत्मा का नहीं।

चैतन्य आत्मा का स्वाभाविक धर्म नहीं······,

डॉक्टर इन्हें हमारे देश का ऋषि कणाद वन जाने दीजिए किसी नई······ परिभाषा को जन्म देने का श्रेय लेने दीजिए, पर अव बहुत देर हो गई भोजन तो मिलना ही चाहिए।

यह तो एकदम सच है,

यंग लेडी,

मुस्कराकर डॉ० हैंगरी ने कहा,

सॉरी डॉ० साहिब, बस अब देर नहीं लगेगी, मनु अन्दर चली गई।

प्रो० हैंगरी जाती हुई मनु को बड़े मनोयोग से देखते रहे,

मानो कुछ खोजने की चेष्टा कर रहे हों,

या !

कुछ समझने की।

प्रो० !

डॉ० अनाश के सम्बोधन पर चौंकते हुए बोले, डॉक्टर यह लड़की डायमण्ड है, Real Diamond.

पता नहीं इसका ज्ञान अभी तक इतना प्रकाश क्यों नहीं दे पाया,

जानते हो प्रोफेसर यह सूर्य का गोला है जिसकी किरणें समस्त भूमण्डल को प्रकाश देती हैं। इसको इस प्रकार छोड़ देना स्वयं से अन्याय करना नहीं समाज से, देश से, राष्ट्र से अन्याय करना है। अत्याधिक प्रतिभा है इस लड़की में।

कुछ !

नवीन,

देने की शक्ति है, विश्व को,

मैं !

मैं लाऊँगा।

इसकी यात्रा तो बहुत लम्बी है।

प्रोफेसर डॉ० अनाश की आवाज से चौंक गए,

डॉ० अनाश के कन्धे पर हाथ रखते हुए डॉ० हैंगरी पुनः बुदबुदाए।

मानो किसी गहरे कुएँ में से प्रो० हैंगरी की आवाज आ रही हो।

डॉ० अनाश,

जी,

यह लड़की,

डॉक्टर, बीच में ही प्रो० अनाश बोले,

इसे न मुक्ति की चाह है न ब्रह्म का होश······समय ने इसके मन में स्तब्धता की एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी है जिस पर उसकी गूंगी आत्मा बार-बार आकर सिर टकरा जाती है।

प्रो० अनाश उसे इस सन्त्रास से निकालना होगा।

पुनः प्रो० हैंगरी बुदबुदाए।

प्रो० अनाश अनुभव के साथ शाब्दिक ज्ञान अन्धा होता है पर मुझे लगता है यह लड़की उस अन्धकार को पार कर गई है।

यह उसकी उपेक्षा है,

नहीं,

फिर,

यह उसका तप है, जो शायद वह स्वयं भी नहीं जानती।

चलिए भोजन लग गया।

मनु ने मुस्कराते हुए अन्दर प्रवेश किया।

फिर प्रो० हैंगरी को सम्बोधित करते हुए बोली,

डॉ० साहिब यह मेरा तर्क नहीं था आपके बड़प्पन से कुछ सीखने की जिज्ञासा फिर भी कहीं कुछ गलत हो या बोल गई हूँ तो क्षमा कर दीजिएगा, वैसे भी आदर महानता में आप बहुत बड़े हैं।

क्या मेरी उपलब्धियाँ छीनना चाहती हो ?

या,

मुझे अहंकारी बनाना चाहती हो ?

यह कैसे सम्भव हो सकता है ?

तो फिर,

मुझे मेरे विश्वविद्यालय में वापिस बैरंग भेजना चाहती हो ?

प्रो० हैंगरी खिलखिलाकर हँस दिए। कुछ क्षणों के उपरान्त जब हँसी का आवेग शान्त हुआ तो बोले,

मनु सच्चा बड़प्पन स्थान से कभी नहीं मिलता और न ही वह उपाधियों से प्राप्त होता है,

लेकिन जब वह मिल जाता है तो उसे मनुष्य सूद के पैसे की भाँति सम्भाल कर रखता है।

डाईनिंग टेबिल पर बैठते हुए बोले······

अरे वाह पूरा कमरा भोजन की महक से महक रहा है।

और इसमें तुम्हारी सुगन्ध,

बिना चखे ही आत्म सन्तुष्टि हो गई।

बस !

अब ज्ञान की कोई चर्चा नहीं।

प्रो० हैंगरी ने अपनी दृष्टि सजी हुई खाने की टेबिल पर डालते हुए कहा।

प्रो० अनाश मुस्करा दिए,

और,

मनु भोजन परोसने में व्यस्त हो गई।

मनु,

हाँ,

क्या सोचती रहती हो ?

कुछ नहीं,

फिर इतनी गुमसुम क्यों ?

जानती हो !

क्या ?

प्रो० हैंगरी कितनी प्रशंसा कर रहे थे तुम्हारी ।

हूँ !

सच बहुत Impressed थे वह तुमसे, बहुत अधिक,

हूँ !

मनु,

जी,

अतीत के प्रेत को अपने से दूर कर दो,

अनाश !

एक क्षण अनाश की आँखों में झाँका मनु ने ।

अनाश,

सच मानो अतीत का प्रेत भी मेरा साथ छोड़ गया है अब तो मेरी अस्थियों से पिघलता दर्द ही शेष रह गया है ।

मनु !

हाँ अनाश !

और इस दर्द के नीचे मेरी स्वयं की साँसें दम तोड़ती लगती हैं ।

जानती हो तुम किस आग में जल रही हो ?

आगों के भी अलग-अलग नाम होते हैं क्या ?

मनु,

हाँ अनाश आग ही है तो जलने के उपरान्त देती है एक विश्वसनीय निद्रा,

और,

सन्तोष का,

प्रगाढ़ आलिंगन

मनु !

सिद्धी का तुम्हें प्राप्त हुआ स्वामीत्व, और दुराव की यह प्रतिहिंसा कहाँ मेल खाता है ?

क्यों इस क्लेश को सीने से चिपका कर पाल रही हो ?

तुलसी की पंक्ति याद करो······

नहीं,

फिर,

यह उसका तप है, जो शायद वह स्वयं भी नहीं जानती।

चलिए भोजन लग गया।

मनु ने मुस्कराते हुए अन्दर प्रवेश किया।

फिर प्रो० हैंगरी को सम्बोधित करते हुए बोली,

डॉ० साहिब यह मेरा तर्क नहीं था आपके बड़प्पन से कुछ सीखने की जिज्ञासा फिर भी कहीं कुछ गलत हो या बोल गई हूँ तो क्षमा कर दीजिएगा, वैसे भी आदर महानता में आप बहुत बड़े हैं।

क्या मेरी उपलब्धियाँ छीनना चाहती हो ?

या,

मुझे अहंकारी बनाना चाहती हो ?

यह कैसे सम्भव हो सकता है ?

तो फिर,

मुझे मेरे विश्वविद्यालय में वापिस वैरंग भेजना चाहती हो ?

प्रो० हैंगरी खिलखिलाकर हँस दिए। कुछ क्षणों के उपरान्त जब हँसी का आवेग शान्त हुआ तो बोले,

मनु सच्चा बड़प्पन स्थान से कभी नहीं मिलता और न ही वह उपाधियों से प्राप्त होता है,

लेकिन जब वह मिल जाता है तो उसे मनुष्य सूद के पैसे की भाँति सम्भाल कर रखता है।

डाईनिंग टेबिल पर बैठते हुए बोले......

अरे वाह पूरा कमरा भोजन की महक से महक रहा है।

और इसमें तुम्हारी सुगन्ध,

बिना चखे ही आत्म सन्तुष्टि हो गई।

बस !

अब ज्ञान की कोई चर्चा नहीं।

प्रो० हैंगरी ने अपनी दृष्टि सजी हुई खाने की टेबिल पर डालते हुए कहा।

प्रो० अनाश मुस्करा दिए,

और,

मनु भोजन परोसने में व्यस्त हो गई।

मनु,
हाँ,
क्या सोचती रहती हो ?
कुछ नहीं,
फिर इतनी गुमसुम क्यों ?
जानती हो !
क्या ?
प्रो० हैंगरी कितनी प्रशंसा कर रहे थे तुम्हारी ।
हूँ !
सच बहुत Impressed थे वह तुमसे, बहुत अधिक,
हूँ !
मनु,
जी,
अतीत के प्रेत को अपने से दूर कर दो,
अनाश !
एक क्षण अनाश की आँखों में झाँका मनु ने ।
अनाश,

सच मानो अतीत का प्रेत भी मेरा साथ छोड़ गया है अब तो मेरी अस्थियों से पिघलता दर्द ही शेष रह गया है।

मनु !
हाँ अनाश !
और इस दर्द के नीचे मेरी स्वयं की साँसें दम तोड़ती लगती हैं ।
जानती हो तुम किस आग में जल रही हो ?
आगों के भी अलग-अलग नाम होते हैं क्या ?
मनु,
हाँ अनाश आग ही है तो जलने के उपरान्त देती है एक विश्वसनीय निद्रा,
और,
सन्तोष का,
प्रगाढ़ आलिंगन
मनु !

सिद्धी का तुम्हें प्राप्त हुआ स्वामीत्व, और दुराव की यह प्रतिहिंसा कहाँ मेल खाता है ?

क्यों इस क्लेश को सीने से चिपका कर पाल रही हो ?
तुलसी की पंक्ति याद करो······

"बड़े भाग मानुष तन पाया"

भारतीय संस्कृति के एक अमर गायक ने कहा है कि संसार में मनुष्य से बढ़कर कुछ नहीं,

जी,

मनु,

जी,

जी, जी क्या,

फिर,

तुम एक दार्शनिक हो।

दार्शनिक !

हाँ मनु मन आकाँक्षाओं की गेंद है ऊँचे उछालो लेकिन फिर अपने हाथ से लपक भी लो।

जानती हो मनु !

जब अस्थिरता का आसन डगमगा जाता है विवश मन भौंरा अनायास ही विवेक की चुंगी-चौकी से छल कर सीमा पार निकल जाता है।

अनाश !

मन को एक निश्चय पर साध लो वही निश्चय देखना निर्मल नदी के समान बन जाएगा।

कल भूल जाओगी !

भूला तो कुछ नहीं जाता पर हाँ तुमने मेरे दर्प रूपी पंछी के सुनहरे पंखों को नोचकर मेरा बड़ा उपकार किया है,

अनाश !

उपकार कहोगी तो इन टूटे पंखों की पीड़ा भूल नहीं पाओगी !

विश्वास करो,

तुम्हारे बताए हुए निर्देशों को इस जीवन में तो नहीं भूल पाऊँगी। अरे स्वप्न में भी नहीं।

तुम बस जीवन भर स्वप्न में ही चलने का प्रयत्न करती रहना।

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

अनाश ने हँसते हुए कहा,

अतीत के उस प्रस्तर खण्ड में कृपा करके गलती से भी अर्चना करने मत पहुँचना।

बस !

आज के जीवन की अर्चना में स्वयं को जीवान्त समझो अर्गला नहीं,

मनु !

विचार शब्दों के द्वारा शारीरिक गति प्राप्त करते हैं बहुत-सी तरंगें वायवीय होती हैं और इसी कारण बीच-बीच में शाब्दिक होकर फूट पड़ती हैं,

जानती हो न !

एक झरना पहाड़ों से गिरा, भूतल को फोड़कर उसमें समा गया और फिर धरती फोड़कर स्थान-स्थान पर फुहारें बनकर, नदी बनकर वही झरना बहता चला जाता है,

क्यों ?

हाँ अनाश।

क्या अतीत के विचारों को शब्दों की काया नहीं मिल पा रही है ?

मनु !

सच कह रहे हो अनाश ।

तुम्हारे शब्द !

अनाश मुस्करा दिया।

मनु !

तुम्हारा वेदान्ती मन मेरे शब्दों को समझने का अकसर प्रयास करता है और तुम्हारा भोगने वाला मन भीतर-ही-भीतर सदा संघर्ष करता रहता है—दोनों के बीच की गहरी खाई को पाटने का प्रयत्न तुम्हें स्वयं करना है मनु स्वयं !

प्रोफेसर !

तुम शायद नहीं जानते, मेरे पास अमूल्य कड़वी अलक्ष्य निधि—स्मृतियाँ हैं। क्या सच को झूठ मान लूँ या कल को भूल जाऊँ ? कहाँ से लाऊँ ऐसी विराट मेधा ?"

अनाश !

कैसे भूल जाऊँ ?

Darkness is darkness, light is light,
There is no pridge from wrong and right.

मनु !

जीवन के अनेक सोपान हैं, उनमें से एक सोपान है हमारी चेतना की सतत जागरूकता और इस जागरूकता के द्वारा हमें दूसरों को देखने की एक विशेष स्वस्थ दृष्टि प्राप्त होती है, तुम्हीं ने तो एक दिन मुझसे कहा था ।

"आत्मान: प्रतिकूलाभि परेषां न समाचारेत्"

जिस व्यवहार को तुम नहीं चाहते कि दूसरे तुम्हारे प्रति करें वैसा व्यवहार तुम दूसरों के प्रति मत करो ।

अनाश मैं कहाँ किसी से…?

किसी से नहीं, अपितु तुम तो स्वयं से खराब व्यवहार कर रही हो।

स्वयं को अकारण यातना दे रही हो।

क्या यह अन्याय नहीं है,

जो तुम्हारा मन नहीं चाहता…,

उसी को,

तुम, उससे करवा रही हो।

सोचो मनु कितना संत्रास-भरा जीवन जी रही हो।

असावधानी में किए हुए अपने निर्णय और उसका मिथ्या अहं अपनी अनावश्यक व्यवस्थाओं में उलझता हुआ तुम्हारा मन—क्यों, क्यों यह अपराध भावनाएं पाल रही हो ?

तीखी, दर्द-भरी चुभने वाली सुइयों की मानसिक पीड़ा क्यों झेल रही हो ?

किसलिए मनु !

किसलिए ?

अनाश की इस प्रताड़ना से, गर्भ में छिपी हुई मनु की पीड़ा, आँखों को द्वार बनाकर बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगी।

मनु ने अनुभव किया,

समय मानो स्तब्ध हो गया, मन के वृक्षों से न जाने कितने शाखामृग उतर कर इधर-उधर कोनों में जाकर दुबक गए, क्या उसे दुबकने के लिए मन के वृक्षों का आश्रय नहीं मिलेगा ?

क्या सोचने लगी मनु ?

तुम ठीक कहते हो अनाश।

काया तो रथ मात्र है मन तुरंग जैसे उसे चलाता है वैसे ही वह चलती है।

अनाश,

हाँ,

स्वप्नों की चादर का सबसे बड़ा सुख यही है उसमें कोई पात्र उपदेशक बन कर नहीं आता।

"तै-तै पाँव पसारिये जैनी लम्बी सौर" इसकी सत्यता स्वप्न के पास नहीं है। स्वप्न देखने के लिए मन इच्छित चादर तैयार की जा सकती है मनु।

इस संसार का हर घर जल रहा है, इसमें बैठकर अर्थात् जलते हुए घर में बैठकर क्या हँसना सम्भव हो सकेगा ? इसीलिए नानक ने कहा—

"नानक दुखिया सब संसार"

अनाश,

अतीत कैसे भूला जाता है वह तो मस्तिष्क में अपना खाना बना लेता है जहाँ स्मृतियाँ इकट्ठी होती रहती हैं।

जानता हूँ।

और यह भी समझता हूँ।

कि,

उन्हीं स्मृतियों के सहारे क्षण-भर में अगणित संसार बिजली की भाँति कौंध जाते हैं तुम्हारे मस्तिष्क में,

और—

उस समय न जाने कितने इन्द्रधनुष बनते हैं, बिगड़ते हैं।

क्यों ?

पर याद रखना।

अतीत के इन इन्द्र-धनुषों से बाहर नहीं निकलोगी तो नींद की देवी एक दिन अचानक रूठ जाएगी।

वह तो रूठ ही गई है।

देखो मनु, गलत हठ छोड़ दो।

अतीत को विस्तृत कर दो।

उसे द्रोपदी का चीर मत बनाओ,

और न ही अपने जीवन को,

महादेव की बारात बनने दो,

समुद्र सन्तरण ही जीवन है, इस जीवन को जिया जाता है,

मात्र जिया,

जीना ही सत्य है।

लेकिन न तो विदुर की झोंपड़ी बनाकर,

और

न ही,

कृष्ण की भाँति, मुस्कराकर प्रोफेसर बोले।

हाँ तुम्हारे अराध्य देवता की भाँति, गोवर्धन उठाकर।

मनु खिलखिलाकर हँस पड़ी।

क्यों प्रोफेसर साहिब,

कल रात को क्या मुहावरों का शब्दकोश सिरहाने रखकर सोये थे ?

अनाश भी मुस्करा दिया।

मनु आज सबेरे जब सो कर उठा तो लगा की तुम सामने खड़ी हो।

वही चिरपरीचित तुम्हारा उदास चेहरा,

तभी मस्तिष्क ने encyclopedia को जन्म दिया,

अरे नहीं भई,

इनसाइक्लोपीडिया तो तुम तैयार करती हो,

हमने तो बस सोचा कि चलो आज कालेज से सीधे तुम्हारे यहाँ आकर चाय

पी जाए और चले आए।

धारा माँ चाय पिलाओगी ?

नहीं, आज तो आपके हाथ की चाय पीयेंगे, गर्म-गर्म,

अरे चाय बनाओगी तो तुम्हारे चिपके विचार जरा-सा तो गर्मी से पिघलकर बाहर आएंगे।

क्यों ?

जब तक मनु चाय बनाकर लाई, तब तक अनाश टेबल पर पड़ी हुई पत्रिकाओं के पन्ने पलटता रहा।

मजा आ गया,

मनु बहुत अच्छी चाय बनाई है, सच पूछो तो तुम्हारे हाथ की चाय का मजा ही कुछ और है।

आजकल बहुत पढ़ रही हो ?

क्यों ?

तुम्हारी टेबिल पर बिखरी हुई पुस्तकों का जमघट तुम्हारी चुगली कर रहा है।

कुछ नया लिख रही हो ?

मनु मुस्करा दी,

इतना मत इन किताबों को अपना दोस्त बनाओ नहीं तो हम जैसे ईर्ष्या की आग में बिना भूने ही झुलझ जाएँगे।

अनाश,

हूँ,

सांख्य दर्शक—

मनु मुस्करा दी,

दर्शक नहीं सर···,

मैं पूछ रही हूँ कि सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल देव हैं न।

हूँ,

इसके दो प्रकार के तत्व हैं।

अनाश पुरुष और प्रकृति अपने-अपने अस्तित्व के लिए परस्पर निरपेक्ष हैं।

पुरुष भोक्ता है इसलिए प्रकृति से भिन्न है।

मनु प्रकृति इस संसार का आदि कारण है और तुम जानती ही हो कि प्रकृति तीन प्रकार के मौलिक तत्वों से बनी है प्रकृति के अन्तर्गत सत्व, रज तथा तम का अस्तित्व प्रतिपादित होता है, सत्व प्रकाशक है, रज गतिशील है इसलिए वह

कर्म कराता है हम अचल तथा आवरणकारी है।

आत्मा में अहंकार आवरणकारी है अनाश !

आत्मा में अहंकार, अभिमान···,

वाक्य के पूरा होने से पूर्व ही अनाश बोला मनु अहंकार को ही अभिमान कहा जाता है। अहंकार में जब सत्व का बाहुल्य होता है तभी उसके द्वारा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियों का उद्भव होता है एवं मन की सृष्टि होती है।

सब मिलाकर सांख्य में 25 तत्व हैं इनमें पुरुष को छोड़कर सभी तत्व प्रकृति के अन्तर्गत हैं प्रकृति का अपना कोई कारण नहीं है अर्थात पुरुष न तो प्रकृति है न विकृति, ज्योंहि हम पुरुष का शरीर इन्द्रिय मन अहंकार तथा बुद्धि में भेद समझने लगते हैं—उसी क्षण से सुखों तथा दुखों का अन्त हो जाता है और तब पुरुष को इस संसार से कोई अनुराग नहीं रहता।

वह मात्र घटनाक्रमों का दृष्टा रह जाता है, इस अवस्था को कैवल्य कहते हैं।

और अब तुम कहोगी,

शरीर रहते हुए भी मुक्त पुरुष इससे ममत्व हटा लेते हैं।

हाँ,

और,

इसे,

जीवनमुक्ति की संज्ञा दी जाती है।

हाँ,

और जब,

देहान्त के उपरान्त मुक्त पुरुष का शरीर नष्ट हो जाता है तो उसे विदेह मुक्ति कहते हैं।

एकदम सत्य,

और···,

एक बात बताऊँ कि आत्मज्ञान के लिए जिस साधना की आवश्यकता पड़ती है उसका विवेचन हम सांगोपांग योग दर्शन में करते हैं।

मनु मुस्करा दी।

मनु सांख्य दर्शन निरीश्वर है।

इसीलिए अनाश इसके द्वारा ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकता।

विश्व की रचना के लिए फिर ईश्वर की आवश्यकता कहाँ आई इसके लिए तो प्रकृति ही पर्याप्त है।

अनाश !

ईश्वर संसार में परिणित नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर परिवर्तनशील नहीं है और साँख्य ईश्वर के अस्तित्व को एक विशिष्ट पुरुष के रूप में मानता है,

उसका विश्वास है कि ईश्वर प्रकृति का सृष्टा नहीं मात्र दृष्टा है ईश्वर सृष्टि का कारण नहीं हो सकता, क्योंकि कारण और परिणाम में कहीं भी ऐक्यता नहीं है।

पातांजलि !

महर्षि पातांजलि का योग दर्शन,

क्योंकि,

योग तथा साँख्य दोनों में बहुत अधिक साम्य है।

हाँ !

योग साँख्य के प्रमाणों और तत्वों को मानता है, साँख्य के अनुसार मोक्ष प्राप्ति का प्रमुख साधन विवेक और ज्ञान ही है तथा विवेक और ज्ञान की प्राप्ति मात्र योगाभ्यास द्वारा ही हो सकती है।

योग को दो भागों में बाँट दिया गया है।

संप्रज्ञात।

एवं

असंप्रज्ञात।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि इन आठों अंगों को योगांग की संज्ञा दी जाती है।

योग दर्शन को ही ऐश्वर साँख्य कहते हैं और कपिल द्वारा लिखित साँख्य को निरीश्वर साँख्य कहा जाता है।

चित्त की एकाग्रता के लिए तथा आत्मज्ञान की परिपुष्टि के लिए ईश्वर का ध्यान ही सर्वोत्तम ध्यान है।

ध्यान का विषय है।

और जो पूर्ण ज्ञानी या सर्वज्ञ है वही ईश्वर है।

मनु !

प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि का आरम्भ होता है।

हाँ !

इसीलिए संयोग के अन्त हो जाने पर प्रलय हो जाती है।

अनाश।

हाँ,

महर्षि जैमिनी ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा।

मनु !

उस समय की परिपाटी के अनुसार एक-एक विषय का गूढ़ गम्भीर चिन्तन किया है एक-एक महर्षि एक-एक विषय के पारंगत होते थे।

महर्षि कपिल,

महर्षि पातांजलि।

महर्षि जैमिनी ने मीमांसा का गूढ़ अध्ययन किया है।

मीमांसा का मूल आधार है वेद,

वैदिक कर्मकाण्डों को युक्तिपूर्वक प्रतिपादन करना ही मीमांसा के उद्देश्य हैं।

इसीलिए मीमांसा मानती है कि वेद अपौरुषेय एवं नित्य हैं एवं वह मनुष्य रचित नहीं है।

वेद का निदान ही धर्म है।

और,

वेद जिसका निषेध करता है वह अधर्म है।

इसीलिए वेद विहित कर्मों को किसी फल या पुरस्कार की आशा में नहीं रहना चाहिए।

मीमांसा के अनुसार स्वर्ग या विशुद्ध सुख की प्राप्ति ही मोक्ष है। आत्मा नित्य है इसका नाश नहीं हो सकता, यदि आत्मा की मृत्यु हो जाए तो स्वर्ग की कामना निरर्थक हो जाती है।

मीमांसा बाह्य सत्तावादी है, संसार के अतिरिक्त यह आत्माओं के अस्तित्व को मानती है उसका विश्वास है कि जगत अनादि और अनन्त है न इसकी कभी सृष्टि हुई, न प्रलय।

मनु तुम्हें पता है कि प्रो० हैंगरी से अच्छा वेदान्त, शंकर का अद्वैतवाद कोई नहीं समझा सकता। हिन्दू दर्शन में जितना यश उन्होंने कमाया है उतना शायद किसी भारतीय दर्शन शास्त्री ने नहीं।

प्रोफेसर उनका व्यक्तित्व भी तो पूर्ण भारतीय लगता है।

हाँ,

उस दिन वह वेदान्त और उपनिषद् के सम्बन्ध में कुछ कह रहे थे न ?

हाँ, वह वता रहे थे कि वेदान्त दर्शन की उत्पत्ति उपनिषेदों से हुई है। अतः उपनिषदों को वेदों का अन्त कहना ही यथार्थ है।

यह सच भी है।

प्रो० हैंगरी ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है, अनाश की शांकर वेदान्त ने भारतीय जीवन को बहुत अधिक प्रमाणित किया है।

ऋग्वेद में एक ऐसे पुरुष की कल्पना की गई है जो अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है और जड़ चेतन, मनुष्य, देवता सभी को उस रूप का अंग माना गया—इसी का विकास उपनिषदों में हुआ। इसी पुरुष के रूप को उपनिषदों में आत्मन् या ब्रह्मन् की संज्ञा दी और बताया गया कि संसार का नानात्व असत्य है—

"सर्वं खलि-विन्दं ब्रह्म।
नहे नाऽस्थि किंचन।"

इस वाक्य द्वारा यह सिद्ध किया गया कि संसार में एक ही सत्ता है, आत्मा या ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और यही अनन्त ज्ञान तथा अनन्त आनंद है।

मनु इस सत्य को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शंकर के उपनिषदों की व्याख्या अत्यन्त विस्तार से की गई है।

हाँ अनाश,

शंकर तो

प्रथम ही कहते हैं,

कि

यदि पारमार्थिक सत्ता एक है तो संसार की सृष्टि वस्तुतः सृष्टि ही नहीं है, ईश्वर अपनी माया शक्ति के द्वारा विश्व के इस इन्द्रजाल की रचना करता है। शंकर का विश्वास है कि अध्यस्त वस्तु सत्य नहीं होती। अज्ञान से अधिष्ठान का केवल आवरण ही नहीं होता अपितु वह विक्षेप भी होता है। अविद्या के कारण ही हम ब्रह्म का सच्चा स्वरूप नहीं जान पाते। ब्रह्म के एक होने पर भी अज्ञान वश हम अनेक रूपता के भ्रम में पड़े रहते हैं।

वास्तव में माया और अविद्या वस्तुतः एक ही वस्तु है, माया का ही दूसरा नाम अज्ञान है।

शंकर के अनुसार माया ईश्वर की ही एक शक्ति है जो सम्बन्ध आग तथा उसको जलाने की शक्ति में है वही सम्बन्ध ईश्वर तथा माया में है।

इसीलिए अनाश,

संसार के मिथ्यात्व का ज्ञान होते ही ईश्वर को सृष्टा के रूप में देखना अर्थहीन हो जाता है।

लेकिन यह दृष्टि मात्र महर्षि एवं ज्ञानियों को ही मिल पाती है, जो इस सत्य को समझते हैं।

कि—

संसार मात्रिक है और ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता नहीं है।

मनु,

अविद्या :

अनाश अविद्या का नाश वेदान्त के भान होने पर ही होता है।

मनु तुमने रामानुजाचार्य पढ़ा है?

हाँ वह ईश्वर को ही एकमात्र सत्ता मानते हैं, उनका विश्वास है कि ईश्वर के अन्तर्गत उसकी विविध सत्ताएँ हैं।

उनके अनुरूप—

या,

उनके अनुसार संसार की सृष्टि सत्य है।

इसीलिए,

इनके दर्शन को शंकर का विशुद्ध अद्वैतवाद नहीं कहते। इसे विशिष्टाद्वैत कहते हैं। अद्वैतवाद के साथ इसको इसलिए जोड़ा गया है कि इसमें ईश्वर को ही एकमात्र सर्वव्यापी स्वतंत्र सत्ता के रूप से स्वीकार किया गया है।

तुमने तो आज पूरी चाय का नशा ही उतार दिया।

एक कप और,

वह तो पीनी ही पड़ेगी।

तुम से दर्शन का विवाद···उफ् !···,

मनु मुस्करा दी।

विचार—

और विचारों का झंझावात,

मनुष्य के पास,

यही तो है,

जिसके लिए उसे किसी प्रकार का संघर्ष नहीं करना पड़ता,

बिना आमंत्रित अतिथि की भाँति···,

आते ही रहते हैं,

या,

फिर, बिना बरसात की झड़ी।

मनु अपने माता-पिता की इकलौती बेटी,

कितने लाड़ प्यार से उसे पाला गया···,

दर्शन उसे बिरासत में मिला था।

उसके दादा जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर थे, उसके पिता स्वयं एक अच्छे दर्शन शास्त्री माने जाते थे।

उसकी माँ स्टील जगत की अग्रणी व्यापारियों में से एक थी।

माँ एवं पिता ने बड़े प्यार से उसका नाम मनु रखा था।

और उसी के नाम पर उन्होंने अपनी इस शानदार कोठी का नाम भी मनु रखा था।

मनु सोचने लगी—

कि,

कल क्या हुआ था ?

पृष्ठ के पृष्ठ खुलते गये,

उसकी जिद थी कि वह इरीना के पास जाएगी वहां जाकर दर्शन शास्त्र का

अध्ययन करेगी। माँ की इच्छा थी कि बेटी शादी कर ले फिर जाए, पर उसकी जिद…,

वह तो सर्वोपरि थी,

मनु,

आई पिताजी,

यह लो तुम्हारे कागजात और यह रहा तुम्हारा टिकिट।

पिताजी,

हाँ, तुम भी अगले सप्ताह मेरे साथ मास्को चल रही हो।

ओ पिताजी,

यू आर द् स्वीट,

माई डियर,

मनु अपनी उत्तेजना सँभाल नहीं पा रही थी, बीच में ही बोली,

पिताजी मुझे एडमीशन मिल जाएगा न ?

एडमीशन तो जरूर मिल जाएगा। पर मैं तो बस यही सोचता हूँ कि तुम्हारे बिना हम दोनों का क्या होगा ?

मनु एक पल के लिए गम्भीर हो गई,

पुनः बोली,

अगर आपकी इच्छा नहीं है तो मनु नहीं जाएगी।

पिताजी और माँ दोनों मुस्करा दिए।

माँ ने कहा इरीना का जादू…, और वह हँस दी।

पिताजी ने माँ को सम्बोधित करते हुए कहा।

"सुषमा यह उमर ही जादू की है।"

पापा इरीना वास्तव में बहुत अच्छी लड़की है।

बेटे एक बात हमेशा याद रखना कि दुनिया में कोई बुरा नहीं है। अगर कहीं कोई बुरा है तो हम हैं।

पिताजी इरीना कितनी गरीब लड़की थी। आपको मालूम है, अपने परिश्रम से वह यहाँ तक पहुँची।

मनु मनुष्य चाहे तो कहीं-से-कहीं पहुँच सकता है, बस उसके पास लगन और दृढ़ निश्चय होना चाहिए। तुम्हारी दोस्त इरीना को ही लो। क्रातोवो बस्ती के एक देहाती मकान में उसका जन्म हुआ था। बचपन से उसे भाषाएँ सीखने का शौक था। जब वह मास्को विश्वविद्यालय के साँख्य विभाग में आई तब तक वह बहुत से देशों की भाषा सीख चुकी थी। बड़ी होकर जब व्यवसाय चुनने का समय आया तो उसका यह अद्भुत भाषा ज्ञान बहुत बड़ा सहायक बना।

इस दुबली पतली फुर्तीली लड़की ने हिन्दी ही नहीं बंगला भी सीखी और

डूबो दिया स्वयं को, रवीन्द्र संगीत में खोती गई।

एक बार सोवियत कला विद्या संस्थान की ओर से उसे एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने का अवसर मिला और वह भारत आई।

आगे मैं बताऊँ पिताजी···

वह यहाँ के लोगों से मिली, दर्शनीय स्थलों पर घूमी और भारत की इस उर्जरा भूमि में वह स्वयं को भूलने लगी और तभी देहली के प्रसिद्ध ऐतिहासिक किले में उसकी भेंट मनु से हुई,

भेंट चर्चा बनी,

चर्चा प्रगाढ़ता बनी,

और कुछ पलों का वह परिचय पारिवारिक मृदुलता में खो गया।

दोनों ही अपने से अधिक अपने साथी को पहचानने लगे।

अब मैं भी पटाक्षेप होने से पहले कुछ बोल लूं।

माँ सुषमा देवी बीच में ही बोली।

और फिर,

आपकी लाडली बेटी ने जिद पकड़ ली वह तो इरीना के पास जाकर ही अपना शोध-कार्य करेगी।

लाडली लड़की के सन्मुख बेचारे पिता ने घुटने टेक दिए।

डी० के० चटर्जी मनु के पिताजी।

और माँ···,

शॉपिंग में व्यस्त हो गई इरीना के लिए।

और मेरी शॉपिंग ?

मुझे तो किसी ने बताया भी नहीं कि कल जाना है।

अरे वह तो तुझे आज भी नहीं बताते। वह तो तुम्हें सरप्राइज्ड देना चाहते थे।

सरप्राइज्ड ही तो दिया है, तुम्हारे पिताजी ने माँ सुषमा देवी बेटी के साथ खिलखिला कर हँस पड़ीं।

मनु माँ की हँसी की ओर ध्यान न देते हुए बोली।

पिताजी मैं अज्ञेय और भवानी प्रसाद मिश्र की कुछ पुस्तकें ले जाना चाहती हूँ ?

और वहाँ से···,

सुषमा देवी अपनी बेटी की ओर देखते हुए बोली,

वहाँ इरीना ने खरीदकर रखी होगी महान, रूसी संगीतकार प्यौज चाइकोवस्की के कैसेट।

चतुर्थ सिम्फोनी···,

मनु हँस दी।

मनु,

जी माँ···,

यह बात तो माननी पड़ेगी ही कि इरीना से प्यारी लड़की विश्व में नहीं मिलेगी। इस जैसा मित्र पाना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

वह एक कार्य-कुशल और परिश्रमी लड़की है—हँसमुख और ईमानदार।

पिताजी वह लड़की नहीं चीज है।

यस माई डियर वह प्यार और आदर दोनों के काबिल है।

इस बार मैं तुम्हारा वहाँ एक और अच्छी लड़की से परिचय कराऊँगा। रईसा रिकालिना वह भी दर्शन की लेक्चरार है पर राजनीति में उसकी गहरी दिलचस्पी है, उसके पास असंतोष नाम की कोई क्रिया ही नहीं है। उसका मानना है कि विश्व में कोई भी राज्य सक्रिय समझदार और स्फूर्तिवान व्यवस्था के अभाव में अपना अस्तित्व स्थापित नहीं कर सकता। उसका विश्वास है कि ल्यूमेन और वोल्ग्रोग्राद में प्रारम्भ हुई।

'मखमली क्रान्ति' के उपरान्त जनवाद अब अल्पकालिक नहीं होगा।

पिताजी वहाँ के लोग तो जनवाद के ही समर्थक हैं, उनके जनवाद के सूत्र पुस्तकों और पुराने सूत्रों से बनते हैं शायद इसीलिए उनका समाजवादी जीवन इतना सुखी बन पाता है और पिताजी,

सोवियत अन्तर्राष्ट्रीय रूप से विश्व में शान्ति की दुन्दुभि बजाना चाहता है। वह लगातार शान्ति नामक दहलीज पर अपने कदम जमाने की सतत् चेष्टा कर रहा है। दूसरे गिने-चुने राजनीतिक नेताओं से दूर हटकर प्रजा की मानसिकता और उनका मनोविज्ञान भी बदलता जा रहा है। इसलिए मेरा विश्वास है पिताजी कि इस महाशक्ति की शान्ति, इच्छा और जनमानस के विचार दोनों मिलाकर नये युग का चित्र निर्धारित करेंगे और एक नये युग का निर्माण।

अच्छा सोचती हो।

कितना अच्छा हो,

कि,

विश्व शान्तिमय हो जाए, बस सब एक-दूसरे से प्यार करें।

मनु,

अत्यधिक सुसंस्कृत, अत्यधिक बुद्धिमान व्यक्तियों की विश्लेषण क्षमता भी अद्भुत होती है।

और बेटे,

सबसे बड़ी बात तो यह है कि जब भी जीवन में पुनमूँल्यांकन की आवश्यकता हो तब सर्वप्रथम पुनमूँल्यांकन की गणना अपने से प्रारम्भ करनी चाहिए।

फिर पिताजी,

पूर्व पश्चिम,

उत्तर दक्षिण,

के मध्य का टकराव आज की दुनिया के लिए आत्मघाती नहीं बनेगा ?

क्या हमारा भविष्य भी ऐसा ही रहेगा ?

आशा तो भविष्य के लिए अच्छी ही बाँधनी चाहिए, देखो शस्त्रों और युद्धों से रहित विश्व—ऐसे विश्व का निर्माण करेगा, जिसके अन्तर्गत छोटा बड़ा प्रत्येक राष्ट्र स्वयं अपना भाग्यविधाता बनेगा तथा दूसरों का आदर करेगा,

पिताजी आपको याद है, इरीना एक रूसी कवि की कविता गाती थी।

मस्तिष्क पर जोर डालते हुए मनु ने कहा,

कवि नेक्रासोव की—

तुम्हें वह पंक्तियाँ याद हैं।

दो तीन लाइनें याद हैं पिताजी,

तुम अकिंचन कितनी-कितनी समृद्ध,
शक्तिशाली कितनी, कितनी अक्षम…,
है माँ रूस।

हाँ मनु,

अधिकतर ऐसी कविताएँ उस समय लिखी गई थीं जब रूस में निरंकुश राज-तंत्र का शासन था। लोगों को बोलने तक का अधिकार नहीं था बुद्धिजीवी सिद्धान्तों की रक्षा के लिए कितने संघर्ष कर रहे थे। उन्हें अत्यधिक दारुण कष्ट सहने पड़ते थे। रूसी समाज वास्तव में जातियों का कैदखाना था।

धन सम्पदा पिताजी…,

बीच में भी बात काटकर मि० चटर्जी बोले—

कीमतों का प्रश्न आज भी वहाँ पर ज्वलन्त है। अखिल संघीय जनमत अध्ययन केन्द्र के मि० बोरिस येलतसिन का स्टेटमैन्ट मैंने पढ़ा था कि वहाँ की संस्कृति के दीपों को जलाए रखने के लिए उनके पास पर्याप्त धन राशि नहीं है।

मनु दूर की वहुत अच्छाई, पास आने पर इतनी अच्छी नहीं रहती।

जानती हो, वहाँ की सरकार ने इस जुलाई से डबलरोटी और बेकरी उत्पादकों की कीमतों में 200 प्रतिशत तक की वृद्धि करने का निर्णय लिया है। वहाँ के कुछ प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने इसकी आलोचना भी की है।

पिताजी,

क्या जीवन में कभी भी और कहीं भी मानवीय मूल्यों और जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं को प्राथमिकता नहीं दी जाएगी।

मनु !

विचारों की बहुलता की भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। और वह कभी द्विअर्थक नहीं होती।

पिताजी,

उनके पास शायद घटनाओं का पूर्वाभास कर लेने की क्षमता का श्रेय है एवं अत्यन्त मामूली घटनाओं में से ही अर्थ की घटनाओं को चयन करने की प्रतिभा तथा संकेतों से अपने भविष्य के निर्माण करने की सफल अराधना भी है।

इसका मुख्य कारण है पिताजी,

क्या ?

वह शुभ और अशुभ के झंझटों में नहीं पड़ते।

मि० चटर्जी जोर से खिल-खिलाकर हँस पड़े।

मनु,

कभी लगता है कि तुम बहुत छोटी हो।

जरा पढ़ो उन्हें,

और आँखें खोलकर देखो···,

शुभ और अशुभ···अरे भई मनुष्य तो मनुष्य ही है।

जानती हो, गारीकास्परोव को, उसका जन्म महीने की तेरह तारीख को हुआ था। जीवन-भर तेरह की अशुभ संख्या उसके साथ रही।

लेकिन पिताजी।

उसने अपने दृढ़ विश्वास से इस संख्या को शुभ में पलट दिया। आपने यह तो पढ़ा ही होगा कि वह हमेशा तेरह नम्बर के कमरों में ठहरता, उसने अपने लिए तेरह का संकेत शुभ समझ लिया और अपनी इस आस्था के कारण वह तेरहवें विश्व शतरंज का चैम्पियन बना।

सुषमा तुम्हारी बेटी हम से कम नहीं है, दुनिया के सम्बन्ध में जानकारी रखती है।

हाँ पिताजी, इस देश की तो···,

हाँ हाँ, क्यों नहीं, तुम्हारी इरीना वहाँ रहती है।

पत्र आया उसका ?

हाँ, पिताजी,

क्या लिखा है ?

लिखा है, पढ़ना एक व्यसन बन गया है तेरी तरह सारा समय मेरा किताबों में ही चला जाता है तेरी यह बुरी आदत मैंने सीख ली है, मैं तो आम आदमी की भाँति अपना जीवन यापन करना चाहती हूँ, वैसे अपना शोध ग्रन्थ पूरा करने के प्रयत्न में आजकल व्यस्त हूँ—जिसमें वस्तुनिष्ठ आदर्शवाद की स्थितियों से प्रत्यक्षवाद, बुद्धिवाद और कान्ट के दर्शन की आलचोना शामिल है।

वैसे भी पिताजी,

वह तो चाहती है,

कि

बिना कोई समझौता जीवन के साथ किए वह चर्च के साथ जुड़ जाए; चर्च की शिक्षाओं को सच्चे अर्थों में पूरी तरह आत्मसात करने तथा वैज्ञानिक एवं दार्शनिक मनोवृत्तियों को एक दूसरे के साथ जोड़ने में अपना सारा जीवन अर्पित कर दें।

सच है,

इरीना—त्याग का नाम है।

आज की वर्तमान इरीना को समझने के लिए उसका अतीत देखो।

उसका तो पूरा परिवार ही—,

जीवन-भर जो संसारिक वस्तुओं के प्रति उदासीन रहे उनके लिए आधुनिकता की पुकार की अपेक्षा पारलौकिकता की पुकार कहीं अधिक अर्थ रखती थी—इरीना बताती है कि उसके पापा जीवन-भर अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे, उसकी बड़ी माँ कभी अन्याय के प्रति समझौता नहीं कर सकी। उसकी माँ जीवन-भर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान रही।

मनु,

जीवन यही है,

या यह कह लो,

दृढ़ता का नाम ही जीवन है और प्यार का नाम धर्म। जीवन में एक बार समझौता कर लिया तो सारा जीवन समझौतों की उधेड़-बुन में ही व्यतीत हो जाएगा।

सिद्धान्तों को तिलांजलि देना अभिशाप है।

वैसे भी रशिया की औरतों ने बहुत सहा है—

वासीली सुकसिन ने कहा है कि—

"I am sure that there can hardly be anyone else capable of enduring what Russian Woman can enduere. And has endured. God forbid that anyone on earth should ever have to endure. So much. Life should not be like that."

फिर तो नारी उद्धार के नारे वहाँ भी लगते होंगे ?

नारी उद्धार की समस्याएँ उनके यहाँ भी हमारे यहाँ की ही भाँति जटिल हैं। पहले वहाँ पर फेमीनिस्ट आन्दोलनों की भर्त्सना की जाती थी लेकिन आज वह स्थिति नहीं है, वहाँ भी बहुत बड़े-बड़े संस्थान हैं जो नारी उद्धार पर कार्य करते हैं जानती हो।

सोवियत संघ की संसद के तीसरे अधिवेशन में निर्णय लिया गया कि नारी समस्याओं के ऊपर 300 करोड़ रूबल खर्च किए जाएँगे और इतने पर

भी वहाँ के जन प्रतिनिधियों का कहना है कि उनके देश में स्त्रियों और बच्चों के जीवन की स्थितियाँ सुधारने के लिए आवश्यक राशि का यह एकमात्र छोटा-सा ही अंश है।

मनु समस्याओं का अंत कहीं नहीं, जहाँ मानव है वहाँ समस्याएँ होना स्वाभाविक है।

भारत में जितनी अच्छी स्थिति औरतों की है वास्तव में उतनी अच्छी स्थिति किसी भी देश में नहीं, यह हमेशा ध्यान में रखना मनु।

सभी देशों के इतिहास के पृष्ठों पर,

वहाँ की नारियों के दायित्व और उनकी कटु आलोचनाओं के उनकी पीड़ाओं एवं अत्याचारों के सशक्त हस्ताक्षर अवश्य मिलेंगे।

आज भी—

वर्तमान युग में अवश्य कुछ ऐसे कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे उनको अधिक सुविधा और अधिक सुचारू पूर्ण जीवन मिल सके।

सभी स्थानों की समस्याएँ नुकीले कोनों से टकरा-टकरा कर दर्द का एहसास कराती रहती हैं।

पिता और पुत्री, समस्त विश्व की चिन्ता ही करते-रहोगे या कुछ और भी काम करेंगे ?

सुषमा ने अपने पति और पुत्री को सम्बोधित करते हुए कहा।

लेकिन मनु एक बात मैं भी कह दूं,

क्या माँ,

उत्सुकता से मनु ने पूछा।

वहाँ की माएँ भी हमारी तरह ही अपने बच्चों से प्यार करती हैं, उनकी चिन्ता करती हैं।

फिर हाथ में ली हुई एक मैगजीन में प्रकाशित चित्र को दिखाते हुए कहा कि देखो यह है मास्को की एक नर्त्तकी ल्युद्मीला सेमेन्याका जिसने कहा है कि मेरा बेटा वान्यूशा "मेरा रक्षक है।"

मेरा प्रेरणा स्रोत है।

फरिश्ता है।

माँ,

मनु जाकर अपनी माँ के गले में कीमती माला की भाँति झूल गई।

मनु तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी माँ तो मेरा बहुत नुकसान करेगी।

क्यों पिताजी ?

अपनी बेटी को टेलीफोन कर करके।

तीनों की सम्मिलित हँसी से कमरा गूँज गया।

सभी भूल गये कि कुछ क्षणों पूर्व वह किस चर्चा में व्यस्त थे।

पिताजी,

हाँ,

आज मैं सारा दिन सोचती रही।

क्या ?

माँ को भी अपने साथ ले चलूं ?

मनु खिलखिलाकर हँस पड़ी। फिर धीरे से बोली।

आप पर तरस आ गया आपका ख्याल कौन रखेगा ?

ओ थैंक्यू !

फिर क्या सोच रही थी ।

हाँ,

इस बार मैं इरीना की दादी जी के घर पेरेस्लाव्ल-जालेस्स्की जरूर जाऊँगी।

जरूर जाना, बहुत कुछ जानने को भी मिलेगा तुम्हें वहाँ, यह रूस का सबसे पुराना नगर है, यह उसी स्थान पर स्थित है जहाँ से 16वीं 17वीं सदी में यूरोप जाने के लिए व्यापारियों के कारवाँ गुजरा करते थे।

इरीना बता रही थी कि वह स्थान पिताजी कभी बड़ा समृद्ध था। वहाँ पर ढाई किलो मीटर लम्बी एक दीवाल है जिसके अवशेष अभी तक वहाँ हैं। स्पासो-प्रे-ओब्रकेन्स्की गिरजा जो आज भी अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है और वहीं पास में उनके सेनापति की मूर्ति बनाई गई है। तीन प्रसिद्ध मठ हैं, गोरीत्स्की मठ दनीलोव मठीं और निकीत्एकी मठ जो वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं और वहीं पर पिताजी एक प्रसिद्ध संग्रहालय है जहाँ पर 18वीं या 19वीं शताब्दी की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ हैं।

जरूर जाना मनु और यह सब जरूर देखना,

इरीना की डिक्शनरी अब बन्द नहीं होगी,

सुषमा के स्वरों में झुंझलाहट थी,

खाना कब का ठंडा हो रहा है।

क्या थी मनु ?

चिड़िया की भाँति चहकने वाली,

आज भी चहकती है,

पर

आज,
उसका हृदय, दावानल की तरह जलता रहता है, कोई नहीं जानता,
कि उसकी कितनी रातें आँखों में कट जाती हैं,—आजकल—,
प्रो० आलेक्सांद्राविनो ने क्यों किया उसके साथ ऐसा घिनौना मजाक,
कितना सशक्त मुखौटा लगाकर वह जी रही है।
थोड़ा-सा आभास !
उसकी पीड़ा का,
अगर किसी को है तो डॉ० अनाश को।
कोई रिश्ता नहीं,
कोई सम्बन्ध नहीं,
कोई नाम नहीं,
फिर भी कहीं कुछ बहुत गहरा है।

आज के ही समाचार पत्र में उसने पढ़ा कि प्रसिद्ध दर्शन शास्त्री आलेक्सांद्राविनो की प्रिय पत्नी फाइन्ना का देहान्त हो गया,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो !
प्रिय पत्नी !
वह खोती गई अतीत के कंटीले झुरमुटों में,
वह निकृष्ट है ?
तभी तो प्रोफेसर शक्ति जुटा पाए।
क्रूर उपहास !
डूबती गई,
डूबती गई,
अतीत और अतीत की परछाइयों में।
खो गई इरीना,
क्यों ?
उसी के लिए वह अपनी धरती छोड़कर गई थी,
भूल गई,
इरीना को भूल गई,
कितनी प्यारी इरीना,
क्या से क्या हो गई ?

मास्को के भव्य हवाई अड्डे पर उतर कर मनु ने गहरी साँस ली अचानक उसे पहली बार याद आया कि पिताजी दो महीने बाद उसे यहाँ छोड़कर चले जाएंगे और वह मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ेगी।

पाँच वर्ष,

क्या वह रह सकेगी ?

वही तो जिद करके आई है,

यहाँ पढ़ेगी, इरीना के साथ रहेगी,

क्या उसने ठीक किया,

चारों ओर दृष्टि डाली, इरीना दिखलाई नहीं दी।

एयरपोर्ट यात्रियों की भीड़ से भरा था पर उसकी—इरीना ?

पिताजी ने उँगली से बताया—

देखो मनु, तुम्हारी इरीना,

सामने से इरीना दौड़ी चली आ रही थी, पास आते ही इरीना और मनु एक दूसरे से चिपट गईं।

पापा का स्वागत करते हुए इरीना ने कहा पहले हमारे घर फिर दूसरी बात,

चटर्जी ने मुस्कराते हुए उसकी नाक पकड़ी और कहा पापा नहीं पिताजी।

ओ सॉरी पिताजी,

इरीना का बँगला बहुत बड़ा नहीं था लेकिन आरामदेह और खूबसूरत था।

पिताजी और मनु के आने की खुशी में उसने अपने बँगले को और भी अधिक सजाया था। सड़क से घर में प्रवेश करते ही बड़े-बड़े गमलों में नारंगी और नीबू के पेड़ लगे थे। उसी के बराबर लम्बी कतार में असंख्य काले और लाल गुलाब खिल रहे थे। बँगले के तीन ओर जामनी लाल और सुरमई कलर की बेलें लगी हुई थीं,

अन्दर आरामदेह फर्नीचर, खूबसूरत पेन्टिंग्स लगी थी।

ड्राइंग रूम के बगल में ही छोटी पर अत्यन्त व्यवस्थित रूप से सजी लायब्रेरी थी।

छोटे से घर को देखते हुए उस घर का वातावरण घर की गृहस्वामिनी की बौद्धिकता, उसकी रुचि, सम्पन्नता एवं उसकी प्रतिष्ठा का परिचायक था।

ब्यूटीफुल,

Your house is really beautiful.

अंकल हमारा घर आपका है।

जरूर इरीना, हम तो यही सोचते हैं,

अंकल आप आराम से यहाँ रहिए, मुझे रात को ताशकन्द जाना है,

मनु को ले जाऊँ ?

पिताजी आप भी चलिए,

सुना है कि एक समय ताशकन्द को फूलों और वागों का शहर कहा जाता था।

जी अंकल मेरी माँ कहती है कि विट्टी अनार के फलों के वोझ से वहाँ की शाखें जमीन को छूती थीं 23 वर्ष पूर्व जव मैं वहुत छोटी थी ताशकन्द में भयंकर भूकम्प आया था जिसने शहर के अधिकांश भाग को ध्वस्त कर दिया सोवियत संघ के सभी जनतन्त्रों ने उज्वेक जनता की उस समय वहुत मदद की और ताशकन्द के पुर्ननिर्माण में हाथ वँटाया।

आप जानते हैं अंकल,

ताशकन्द में एक ऐसा मेहमाननवाज घर वनाने का स्वप्न अव शीघ्र पूरा होने जा रहा है जिसमें विभिन्न देशों के, विभिन्न जातियों के लोग इकट्ठे रह सकें और आपस में दोस्त वन सकें।

गुड वैरी गुड !

इरीना मेरी कान्फ्रेन्स कल दस वजे शुरू होने वाली है, मैं यह जरूर चाहता था कि तुम जाने से पहले एक वार मनु को लेकर विश्वविद्यालय हो आओ, मुझे निश्चिन्तता हो जाएगी.

हाँ पिताजी, यह ठीक है, मनु ने कहा,

इरीना तुम चिन्ता मत करो, तुम ताशकन्द जाओ मैं यूनिवर्सिटी चली जाऊँगी।

अंकल,

नहीं पिताजी आपको एकदम चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं तू चिन्ता मत कर मैं तेरे साथ चलूंगी, मैं टेलीफोन कर देती हूँ कल नहीं पहुँच सकती।

अव आप जल्दी तैयार हो जाइये।

क्योंकि प्रो० केपिलोव यूनिवर्सिटी में ग्यारह वजे के वाद नहीं मिलेंगे।

अंकल यह वाथरूम है।

अच्छा !

पिताजी आप नहाने जा रहे हैं ?

हाँ।

मनु तुझे एक वात वता दूं।

मनु ने इरीना के चेहरे पर दृष्टिपात किया मानो पूछ रही हो बोल क्या है ?

प्रो० केपिलोव का व्यक्तित्व बड़ा रहस्यमय है, तुझे पहले से वताए देती हूँ।

इरीना दर्शन शास्त्रियों का व्यक्तित्व अगर सामान्य होगा तो उन्हें दार्शनिक

कौन कहेगा ?

इरीना मुस्करा दी ।

देख उन्हें अपनी धरती से बड़ा प्यार है अपनी संस्कृति को वह एक क्षण भी अपने से अलग नहीं देख सकते अपने दादा परदादाओं की परम्पराओं से अत्यधिक अनुराग है उन्हें, दर्शन उनका प्रिय विषय है, वैसे तो जीनियस फिलोसफर हैं।

मुस्कराते हुए इरीना बोली,

स्त्रियों पर बहुत भरोसा है उन्हें।

मनु वह नूरैक के रहने वाले हैं जानती है तू कि नूरैक शहर के लोग पृथ्वी की साँस को महसूस नहीं करते । वहाँ भूकम्प के हल्के झटके हर समय आते रहते हैं, लेकिन वहाँ के निवासियों को मानो इन झटकों का एहसाह ही नहीं ।

इसी प्रकार केपिलोव को बस अपनी लगन से प्यार है, और शायद किसी से कोई सम्बन्ध नहीं ।

सच्चाई तो यह है कि उन्हें एक रहस्यमयी शख्सियत के नाम से जाना-पहचाना जाता है । वह क्या चाहते हैं, क्या कर रहे हैं इसका पता किसी को भी नहीं रहता, विश्व के दो श्रेष्ठ दर्शन शास्त्री केपिलोव और दूसरे आलेक्सांद्राविनो ।

और,

इरीना।

वैसे भी रूसी आत्माएँ बड़ी रहस्यात्मक होती हैं ।

मनु ने मुस्कराते हुए पूछा—

देख मजाक मत समझ डॉ० केपिलोव का विद्यार्थी होना बड़ा कठिन है ।

भविष्यवाणी कर रही हूँ ।

इरीना ने हँसते हुए कहा,

भविष्यवाणी—पर तू तो जानती है कि मैं स्वभाव से निराशावादी नहीं हूँ ।

इरीना,

रेत में से जैसे सोने के कणों को चुनते हैं इसी भाँति मैंने तेरे देश का विश्वविद्यालय चुना है, ताकि यहाँ रहकर लेनिन की भूमि को प्रणाम कर सकूँ चेखव व पुश्किन को जान सकूँ, पावल अन्तोकोस्की, डूडिन, वनिरोनिका तुसनोवा को पढ़ सकूँ समझ सकूँ—

हमारी जिन्दगी ऐसी क्यों हैं, क्यों हमारा कलेजा नहीं काँपता क्यों हमारी आत्मा में पवित्र उद्गार नहीं उठते क्यों ? आज सबके पास कटुता ही कटुता रह गई है, क्या आज का मानव पाषाण युग की ओर जाने की होड़ में व्यस्त है ।

कितनी उथल-पुथल हो रही है, दिन-प्रतिदिन भविष्य अनिश्चित होता जा रहा है ।

यही तो हमारा जीवन है मनु,

लोगों में क्रूरता, आक्रामकता, लोलुपता खुलकर सामने आने लगी विश्व-विद्यालय के प्रांगण में गाड़ी पार्क करते हुए इरीना बोली—

लीजिए आ गई आपकी मंजिल।

अब आप पत्थर, निर्ममता सबकी बात छोड़ दीजिए, और इतना ही दिमाग में रखिए,

जीवन में प्रेम भी है।

आज भी हम हँसते हैं,

गाते हैं,

पढ़ते हैं,

कविताएँ लिखते हैं,

चाहे वह कुछ क्षणों के लिए ही क्यों न हो ?

इरीना !

चौंककर दोनों मित्रों ने पलटकर देखा।

सामने डॉ० केपिलोव थे।

गुड मार्निंग सर।

इरीना ने सर झुकाते हुए कहा।

मनु आप हैं दर्शन शास्त्र के माननीय प्रो० डॉ० केपिलोव और फिर डॉ० केपिलोव की ओर देखते हुए बोली,

सर यह है आपके दर्शन शास्त्र की नई शिष्या, मनु चटर्जी, आपके ही विभाग में प्रवेश मिला है।

प्रणाम करते हुए मनु ने अपने कागज डॉ० केपिलोव के आगे बढ़ा दिए।

कागजों को देखते हुए प्रोफेसर ने कहा,

गुड, होशियार हो तुम इन्टैलीजेन्ट !

क्यों इरीना,

सर गोल्ड मैडलिस्ट रही है,

हूँ,

यहाँ पढ़ सकोगी,

मनु उत्तर दे इससे पूर्व ही इरीना बोली,

अवश्य सर,

सर मात्र महत्त्वपूर्ण है संवाद,

हाँ वह किया तुमने,

सर यह तो बहुत कुछ जानती है हमारे देश के सम्बन्ध में, हमारे सम्बन्ध में और हमारी धरती के सम्बन्ध में।

तुम क्या कर रही हो,

यह मेरा अन्तिम वर्ष है सर !

अरे हाँ तुमने डिबेट में भाग लिया था, कहाँ गई थीं तुम ?

सर जर्मनी, फ्रैंकफर्ट, विश्वविद्यालय।

कैसा रहा,

बहुत अच्छा, और सर ट्राफी हमारा विश्वविद्यालय लेकर आया है, इरीना।

एक क्षण चुप रहे, फिर बोले,

तुम पर विश्वविद्यालय को गर्व है।

मनु ने देखा इस गम्भीर व्यक्तित्व की कितनी ओजस्वी मुस्कराहट है।

सर, मैंने तो बस एक ही पोइन्ट पर जोर दिया कि अर्थव्यवस्था राजनीतिक प्रक्रियाओं का विकास तो अपने स्थान पर होना ही चाहिए पर यह सब तत्व अन्तर्सम्बन्धित हैं सबसे अधिक आवश्यकता है मानवीय सम्बन्ध और उनकी आज के युग में आवश्यकताएँ।

शायद इन्हीं भावनाओं के कारण आपका देश अन्तर्जातीय सम्बन्धों की दृष्टि से अपेक्षाकृत शान्त माना जाता है। प्रो० केपिलोव ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि मनु के चेहरे पर डाली।

सामने ही कार्यालय का भवन था, .

अच्छा सर, आफिस में यह सब कागजात जमा करा दें दोनों ही प्रो० को अभिवादन करके आफिस की ओर मुड़ गईं।

इरीना,

हाँ,

तुझे नहीं लगता···,

बीच में ही टोक कर इरीना ने पूछा, क्या ?

प्रो० केपिलोव में अन्तर्बोध की क्षमता बहुत है।

उदासी और उन्माद नहीं है।

देख मनु तेरी भाषा तो मेरी समझ में आती नहीं पर मैं इतना जानती हूँ कि तू बहुत अच्छी है, इसी प्रकार प्रो० केपिलोव की सब बातें तो मैं समझ पाती नहीं पर इतना कह सकती हूँ कि प्रोफेसर का हृदय बहुत विशाल है, वह स्वयं पीड़ा सह सकता है लेकिन दूसरों के लिए बस प्यार-ही-प्यार है उनके पास।

इरीना की बात पर मनु खिलखिलाकर हँस पड़ी।

अरे मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि तू···

बस बस रहने दे,

इरीना,

प्यार समस्त मानव अस्तित्व का मुख्य और शायद एकमात्र नियम है।

एकमात्र क्यों ?

क्योंकि आज की स्थिति में शान्ति और प्यार को बलपूर्वक खींच कर लाना पड़ता है।

लेकिन—तुम कहती हो बलपूर्वक,

क्या यह सच नहीं की आज का जीवन गोपनीयता का असाधारण लबादा ओढ़ने को विवश करता है, आज लोगों के पास विकृत और ठिठुरती मुस्कराहटें ही शेष रह गई हैं। जीवन कुछ ऐसा हो गया है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन हो गया है।

फिर भी,

इरीना,

अभी भी कुछ ऐसा है जो असम्भावना के बाद भी हमारे ऊपर सर्वथा, अदम्य एवं अनायास की भावनाओं की छाप डाल जाता है और फिर दृढ़ आस्था का रूप ले लेता है।

क्या कहोगी तुम इसे ?

कुछ आन्तरिक आत्माएँ जो आन्तरिक ज्योति से स्नान करती हैं और वही दूसरों को पवित्र शान्ति का एहसास दिलाती हैं।

चाहे यह भावना कुछ सैकेण्ड की ही क्यों न हो ?

मिर्गी के दौरे की भाँति कुछ सैकेण्डों के झटके ही तो हैं पर विश्वास है कि एक दिन यह रोग अवश्य समाप्त हो जाएगा।

और इरीना उस दिन यह अशान्ति भी समाप्त हो जाएगी।

अच्छा है मनु आशा पर ही तो मनुष्य जीता है।

हजारों वर्ष,

व्यतीत हो गये, बहुत कुछ समाप्त हो गया,

बस अगर कुछ शेष है तो आशा,

क्या अतीत से हमने कुछ नहीं सीखा ?

सीखा है,

आशा, कुछ थोड़ा-सा विश्वास,

सच तो यह है कि हम सब रोगी हो गए हैं।

इलाज क्या,

मनन, चिन्तन,

वास्तव में,

आपसी सम्बन्धों को जब हम पहचानने लगेंगे तो शायद अतीत से कुछ ग्रहण

करने की क्षमता आ जाएगी। हमारे आचरण विनम्र और गरिमामय हो जाएंगे।

हाँ मनु।

मनुष्य अपना सन्तुलन पूरी तरह स्थापित करने और अपनी बोखलाहट पर काबू पाने में सफल हो सकेगा।

मानव को शुद्ध सौन्दर्य···,

से आस्था रखनी चाहिए और निर्लिप्त रूप से प्रेम की भव्य कल्पना को स्वयं में समेट लेना चाहिए हालाँकि इस प्रकार की भावनाओं को आश्रय देना साधारण कार्य नहीं है। त्याग और तपस्या की भट्टी में स्वयं को डालकर उस शिखर पर पहुँचा जाता है।

यह केवल आदर्श की बातें नहीं हैं,

कभी-कभी मन यह भी पूछता है···,

विश्वविद्यालय के चपरासी ने आकर सूचना दी वह सामने के रूम में जाए।

सारी कार्यवाही पूरी करते-करते शाम के चार बज गए। बाहर निकलते हुए इरीना ने कहा—,

चलो मनु डॉ० केपिलोव का आभार प्रदर्शित करती चलो वैसे भी तुम लकी निकलीं,

क्यों,

अब जान जाओगी,

बताओ तो सही,

प्रो० केपिलोव से तो प्रवेश लेने के बाद भी महीनों तक विद्यार्थी मिल नहीं पाते,

अच्छा !

दोनों जब प्रो० के चैम्बर में पहुँचीं तो उनकी सेक्रेटरी मिसेज येपाचिना ने बताया कि डॉ० साहिब इस समय एक आवश्यक मीटिंग में व्यस्त हैं और आज तो उनका मिलना सम्भव नहीं है।

दो दिन की दौड़-भाग के उपरान्त मनु चटर्जी मास्को विश्वविद्यालय की छात्रा हो गई।

इस सबका श्रेय इरीना को था, नहीं तो वह अकेली तो पता नहीं कब तक इतनी ढेर सारी फारमैलिटियों को पूरा करती ?

क्या समय था, मनु !

पिताजी,

इरीना,

और चर्चा का विषय,

मास्को विश्वविद्यालय।
प्रो० केपिलोव।
दिन सोने के और रातें चाँदी की।
कहाँ से कहाँ आ गई मनु,
एक क्षण को तन्द्रा से मुक्ति मिली,
दूसरे क्षण ही।
पुनः,
अतीत के उस महासागर में गोते खाने लगती।
मनु !
हाँ,
परसों पापा जा रहे हैं ?
इरीना हाँफ रही थी मानो कितनी दूर से दौड़ी चली आ रही हो।
हाँ इरीना, परसों सवेरे,
तो आप भी परेशान हैं ?
इरीना खिलखिलाकर हँस दी।
उदास हैं देवी जी,
ठीक कहा न,
मनु !
उदास,

हालाँकि यह पहला अवसर नहीं था जबकि वह अपने मम्मी पापा से दूर हो, वह तो होस्टल में ही पढ़ी थी लेकिन वहाँ, वह अपने देश में थी,
उनके पास कभी भी पहुँच सकती थी।
और यहाँ से ?
क्यों आज बहुत गम्भीर है तुम्हारी दोस्त।
पापा ने इरीना से पूछा।
मनु की आँखें अचानक नम हो गईं,
पिता की दृष्टि कैसे से छुपा रहता ?
वापस चलती हो ?
पापा ने कन्धे पर हाथ रखते हुए पूछा और खिलखिलाकर हँस दिए।

पापा आप मनु की चिन्ता एकदम मत कीजिए। पापा को यह विश्वास दिलाते समय इरीना के मुख पर हर्षातिरेक की कंपकंपाहट स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

मुझे एकदम चिन्ता नहीं है बेटे,
मेरी यहाँ एक नहीं दो बेटियाँ हैं।

लेनिन और पुश्किन के देश में मेरी दो बेटियाँ रहती हैं। मुझे किस बात की चिन्ता।

मनु का शान्त मन,

अपनी ही काया में रमने वाली साँसों के स्पन्दन सुनने लगा।

वैसे,

माँ पिताजी से दूर रहना तो उसके जीवन का निरन्तर अभ्यास का एक सशक्त अध्याय था।

पैदा होते ही।

तीन दिन की थी तो किसी भयंकर रोग के कारण माँ उसे छोड़कर इलाज कराने लन्दन चली गई थी। जब ठीक होकर लौटी तो मनु छः वर्ष की हो चुकी थी। इसके बाद उसे होस्टल में डाल दिया गया, सीनियर कैम्ब्रिज के बाद वह ईसाबेला ट्रीन्टी कालेज में भर्ती कर दी गई।

होस्टल ही तो उसका सही घर था।

मैटर्न पर रौब—यह उसका ध्येय था।

मन के उद्गारों के तूफानों के साथ उसकी अपनी अतीत की उद्गम स्थलियाँ विचारों के साये में तेजी से पनपने लगीं।

अक्सर ऐसा होता है अतीत के सारे पृष्ठ वर्तमान बनकर अनायास सामने आ जाते हैं।

क्यों, क्या सोच रही हो?

पापा—पिताजी—शायद यहाँ अच्छा नहीं लगता था, इरीना भी तो पापा ही कहती थी,

आवाज ने तन्द्रा भंग कर दी।

कुछ नहीं पापा।

गुड।

पापा अब आप यहाँ से कहाँ जाएँगे?

ओसाका मनु वहाँ दो दिन रुकूँगा, फिर टोकिओ होता हुआ वापिस, 28 तारीख को बम्बई, मुस्कराते हुए बोले,

माँ को कुछ सन्देशा भेजना है?

मनु मुस्करा दी।

हाँ पापा,

कहिएगा,

मि० चटर्जी एकदम ठीक-ठाक वापिस आ गये,

मिसेज चटर्जी से इतना कहना मत भूलिएगा।

और,

मांँ से कहिएगा,

पिताजी को प्यार से रखे रौब से नहीं।

जिस कमरे में कुछ क्षणों पूर्व घुटन-सी अनुभव हो रही थी वहांँ अब तीन प्राणियों की खिलखिलाहट गूंजने लगी।

नवम्बर का महीना था,

संयोगवश यहां के देखते हुए इस बार सर्दी कम पड़ रही थी। ऐसी दूरदर्शन की उद्घोषणा थी।

जबकि,

चारों ओर नमी और कोहरा था, इतना तेज की बाहर का कुछ भी स्पष्ट देखना असम्भव था।

अपने बिस्तर पर बैठी मनु,

देर रात तक अपने नोटस बनाती रही।

बहुत देर से सोने के कारण उसकी आँखें बोझिल हो रही थीं और ठण्ड के कारण सारा शरीर ठिठुर-सा रहा था, उसने करवट ली देखा इरीना काम पर जा चुकी थी।

उसे पीटर्स वर्ग विश्वविद्यायल जाना था, उसे खयाल आया। प्रो० आलेक्सांद्राविनो की बड़ी चर्चा थी वह दर्शन में अथारिटी माने जाते हैं, उसने यह भी सुना था कि भारत से उन्हें विशेष प्रेम है और भारतीय दर्शन में गहरी रुचि विश्व में व्याप्त ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व से कौन मिलना नहीं चाहेगा,

मनु ने पत्र लिखकर उनसे मिलने की प्रार्थना की थी, और पिछले सप्ताह उनकी ओर से उसे स्वीकृति पत्र मिला था।

भारत में भी उसने यह नाम सुना था, सच तो यह था कि वह वर्षों से यह नाम सुनती आ रही थी,

कल उनसे स्वयं मिलेगी,

कैसे होंगे ?

कैसा होगा उनका व्यक्तित्व।

क्या बेकार की बातें सोचने लगी,

उसने अपना कम्बल उतार कर फेंक दिया, और तैयार होने के लिए बाथरूम में घुस गई।

पीटर्स वर्ग विश्वविद्यालय में इरीना की एक मित्र नस्तास्या पढ़ रही थी इरीना ने उसे टेलीफोन करके मनु के सम्बन्ध में जानकारी दी थी तथा उससे कहा था कि वह उसे प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो से मिलवाने में मनु की मदद करे।

उफ्
9 बज गए हैं,
अभी उसे ट्रेन पकड़नी है,
मनु उड़ी जा रही थी।
उसके नीचे क्या है,
ऊपर क्या है,
दाएँ, बाएँ क्या है ?

इसे जानने के लिए न उसके पास समय था न इच्छा और वैसे उसे आवश्यकता भी नहीं थी।

प्रोफेसर का कमरा अत्यधिक आकर्षक ढंग से सजा था।

हर वस्तु मात्र धनी होने का ही परिचय नहीं दे रही थी पर उस घर के मालिक की सुरुचि का भान करा रही थी।

फिर भी,
वह कांप रही थी।

यह कम्पन प्रसन्नता का था या भय का यह तो शायद वह समझने में असमर्थ थी।

प्रोफेसर कुछ कहने में व्यस्त थे,
अत्यन्त गम्भीर मुखमुद्रा···

नस्तास्या ने जब उसका परिचय कराया तब भी उनकी दृष्टि ऊपर नहीं उठी, वह पढ़ते ही रहे,

बस एक शब्द निकला,
बैठिए,
और पुनः निस्तब्धता व्याप्त गई।
कैसे हैं यह प्रोफेसर,
जी में आया कि उठकर चली जाए,
पर
चुपचाप बैठ गई।

प्रोफेसर की उम्र 50-55 वर्ष की होगी, चेहरे पर विद्वता का ओज था, व्यस्त एवं गम्भीर मुद्रा के उपरान्त भी उनका चेहरा भावी और वर्तमान के बीच की किसी सफलता की दीप्ति से दमक रहा था।

मनु ने अनुभव किया उस कमरे में से विद्वता रूपी फूलों की जानी-पहचानी सुगन्ध आ रही थी।

पूरे एक घण्टे के उपरान्त उन्होंने अपनी किताब बन्द करी और अपनी दृष्टि नस्तास्या पर डाली।

सर !

यह मनु चटर्जी है।

जी,

नस्तास्या ने बड़ी प्रशंसा की है तुम्हारी,

जी,

तुम राम, कृष्ण, बुद्ध की धरती से आई हो जहाँ इन सबके साथ अहिल्या, जहाँआरा व मीरा और जैनावाई जैसी विभूतियाँ हुई हैं।

सर,

आश्चर्य हुआ उसे जैनावाई का नाम सुनकर।

जानती हो मरियम ने तो प्यार ही दिया है पर तुम्हारी दुर्गा ने आवश्यकता पड़ने पर राक्षसों का सर्वनाश भी किया है, तुमको दर्शन पढ़ने हमारे देश में आना पड़ा।

सर, मनु इससे आगे कुछ बोल ही नहीं पाई।

कॉफी पिओगी ?

स्वयं अपने हाथ से कप टेबिल पर रखते हुए पूछा उन्होंने,

सर मैं बनाती हूँ,

नस्तास्या ने तीनों के लिए कॉफी बनाई,

सर यह हरी चाय है या कॉफी ?

नस्तास्या ने पूछा,

कॉफी।

सर्वाधिक चिरपोपित—आशाएँ मेरे हृदय में छिपी थीं जो मैंने न जाने कब से पाल रखी थीं। मैंने अपने उत्कण्ठा रूपी ज्वालामुखी को बरबस रोक रखा था। सच तो यह था कि कॉफी का एक घूंट भी नीचे नहीं उतर रहा था, शायद सारी अनुभूतियाँ गले में अटक गई थीं।

डॉ० आलेक्सांद्राविनो से मिलना,

उनके साथ बैठकर कॉफी पीना,

सब कुछ स्वप्नवत था,

मात्र स्वप्न !

कहाँ से आई हो ?

सर देहली से ।

कैसा लगा मास्को विश्वविद्यालय,

बहुत अच्छा सर,

सर आप पिछले सप्ताह ही भारत से आए हैं,

हाँ, क्यों ?

मैंने पेपरों में पढ़ा था,

अपने देश के सम्बन्ध में आपके द्वारा कुछ जानना चाहूँगी, कैसा लगा आपको हमारा देश।

आलेक्सांद्राविनो मुस्करा दिए।

तुम यहाँ क्या कर रही हो ?

दर्शन शास्त्र विभाग में हूँ,

अच्छा।

एक बात बताओ,

एक क्षण के लिए मानो कुछ सोचने लगे,

फिर बोले,

दर्शन शास्त्र की परिभाषा तुम क्या करोगी ?

सर !

मानवीय मूल्यों को उदारवादी मन से समझना, सभ्यता के बढ़ते चरणों को विनाश की ओर नहीं शान्ति की ओर ले जाना।

क्लेअरीटी है विचारों में,

दर्शन समझ सकोगी।

नस्तास्या ने तुम्हारी प्रशंसा व्यर्थ नहीं करी थी।

मनु का सर्वांग प्रसन्नता से काँप गया।

उसकी उपलब्धि के क्षण,

उसके जीवन के उल्लेखनीय पल,

उसके जीवन की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के क्षण,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो से अपनी प्रशंसा सुनना,

अपनी प्रसन्नता और उद्वेग की इस पोटली को छिपाए कहाँ वह ?

समिष्ठ में खोकर मुक्ति सम्भव नहीं।

मनु चटर्जी,

जी हाँ सर,

हाँ मैं कह रहा था कि जब तक मानव के मूलगत दासत्व का उच्छेद नहीं होगा···कुछ पलों के लिए खो गए।

मनुष्य ही नहीं कण-कण स्वाधीन होना चाहिए, मनुष्य मनुष्य में भेद कैसा ?

अब तक मनु स्वस्थ हो चुकी थी।

सर,

हमारे यहाँ के शास्त्र सिखाते हैं···,

नस्तास्या बीच में ही बोली,

सर मुझे लायब्रेरी जाना है, नहीं तो बन्द हो जाएगी, लौटते समय मैं मनु को

ले जाऊँगी।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई हालाँकि इस मुस्कराहट को देखा किसी ने नहीं उन्होंने स्वीकृति में सिर हिला दिया!

हाँ तुम क्या कह रही थीं शास्त्रों के सम्बन्ध में···,

सर,

हमारे यहाँ के ऋषि महर्षियों ने रक्त शुद्धि को भी महत्त्व नहीं दिया है उनके अनुसार यह सब मर्यादाएं मिथ्या हैं, शुद्र और दासी कही जाने वाली स्त्रियों से भी हमारे यहाँ सन्तानें उत्पन्न हुई हैं और उनकी यह संकर सन्तानें मौलिक ज्ञान के धुरंधर सूर्य की भाँति प्रकाशवान हुई हैं।

वास्तविकता तो यह है कि धर्म में हो, शासन में हो या धन में हो, हम श्रेष्ठ हैं कि वासना जब तक बनी रहेगी तब तक हमारे पास किसी दर्शन का कोई अर्थ नहीं रहता, मात्र तोड़-फोड़ के अतिरिक्त।

अगर कोई अपनी सत्ता की फौलादी श्रृंखलाओं में हमें बाँधेगा तो उसे काटने के लिए कहीं-न-कहीं दूसरी फौलादी श्रृंखला तैयार हो जाएगी। इस रेस में मनुष्य धर्म और दर्शन को क्या समझेगा, जो रेस का विषय नहीं चिन्तन का विषय है।

यह क्या अकाट्य सत्य नहीं है?

सत्य तो यह है कि भौतिकी युग ने जिस स्पर्धा को जन्म दिया है, उसमें चिन्तन का स्थान गौण है।

पशुओं में आत्म चेतना नहीं होती वह नहीं समझता कि उसका सारतत्व क्या है? इसलिए वह दर्शन नहीं पढ़ सकता और भौतिकी मनुष्य इतनी तेजी से विज्ञानमय होता जा रहा है कि उसके पास चिन्तन का समय ही नहीं, इच्छा उत्कण्ठा दोनों ही उसके पास मृत प्रायः हो चुकी हैं।

यह ज्ञान कि मनुष्य का शरीर भौतिकी नहीं है अर्थात मशीन निर्मित नहीं है वरन एक आत्मा है उसके अन्दर जो स्वयं मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती उसे आत्मा के धरातल पर कुछ विशिष्ट व्यवहार और कार्य करने पड़ते हैं, वह भूल जाता है।

मोक्ष की कामना आज के युग में धर्म और दर्शन के लिए आवश्यक नहीं। है।

क्यों?

क्योंकि वह जानता है मृत्यु सबका अवसान है उसकी चिन्ता क्या?

मनु!

क्या तुम इस ऊँचाई पर कभी पहुँच सकोगी जहाँ प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो हैं?

प्रोफेसर के चेहरे पर स्मित की झीनी रेखाएँ थीं।

मनु का चेहरा गहरे उल्लास से दीप्त था। यह अनुभव उसके लिए एकदम नया था,

यहाँ की ठिठुरती सर्दी में भी उसने अँगीठी तापने जैसा सुखद अनुभव किया।

मिस चटर्जी, वास्तव में धर्म का अर्थ ही यह है कि,

"सर्वे सुखिनः संतु। सर्वे संतु निरोगमाः"

प्रोफेसर के मुख से संस्कृत का इतना स्पष्ट उदाहरण सुनकर मनु भौंचक्की रह गई।

यह आपके ही यहाँ का श्लोक है न ?

सब सुखी रहें, सभी निरोग रहें।

बौद्धिक कार्यों को सामान्तय श्रेष्ठ और शारीरिक कार्यों को हेयमाना जाता है। यह प्रवृत्ति मिथ्या है, वह सत्य है कि बुद्धि के द्वारा उत्तम विचार देने वाला व्यक्ति जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही शारीरिक श्रम से धरती पर अन्न उत्पन्न करने वाला किसान, पेट भरने के उपरान्त ही ज्ञान, धर्म, दर्शन की बातें समझ में आती हैं, सत्य को नकार कर क्या बिना ईंट के कोई दीवार खड़ी की जा सकती है।

सत्य तो मात्र इतना है कि—,

"धर्महि परमो लोके धर्म सत्यं प्रतिष्ठतम।"

संसार में धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है और धर्म ही सत्य पर स्थिर रहता है।

स्थिरता ही दर्शन है।

Every thing is written on a person's face, becouse life is the struggle to save one's face.

जानती हो जब मिखेल परसत्रीन ने यह लिखा होगा तो कितना गहरा चिन्तन होगा उनका।

तुमने भी तो कहा कि मानवीय मूल्य—मिस चटर्जी ज्ञान सहृदयता का विषय हैं। प्रेम और ज्ञान के मिलन का संकेत स्थल है। दर्शन प्रेम को प्रगाढ़ कर हम एकाग्रता प्राप्त करते हैं और इस एकाग्रता के उपरान्त ज्ञान—और तभी हम मूल्यों को समझने की सामर्थ्य जुटा पाते हैं। प्रेम और ज्ञान के बीच का रास्ता भक्ति है जो दर्द दूर करती है, वाद-विवादों पर प्रश्नचिह्न होते हुए भी मुँह फेरकर खड़ी हो जाती है हल्कापन या शून्याकाश ही उसके फल हैं। मात्र तरंग के संकेत से ही हृदय स्थल पर प्रलय मचा देती है—मस्तिष्क काम करना बन्द कर देता है, अनुभूतियाँ जागृत रहती हैं, मात्र अनुभूतियाँ।

मैं अन्दर आ सकती हूँ,

नस्तास्या की आवाज से मनु चौंक गई।

मनु,

को तो इसका भान ही नहीं रहा।

वह तो बात और व्यक्तित्व,

दोनों में आत्मसात हो गई।

शब्दों के उपरान्त भी,

विस्मृतता थी उसके पास।

कितने सहज थे प्रो० आलेक्सांद्राविनो,

यह सहजता उसके देश में क्यों नहीं ?

अगर आलेक्सांद्राविनो जैसा व्यक्तित्व उसके देश में होता तो क्या नस्तास्या उसे इतनी सहजता से उनके पास बैठाकर जा सकती थी।

या,

वह इतनी सरलता से मनु से बातें कर सकते थे ?

अरे क्या सोचने लगी,

तर्क और तर्क,

वह कुछ सोचना नहीं चाहती थी,

उसका ध्यान,

उसका केन्द्र,

तो मात्र सामने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ व्यक्ति···,

क्यों नस्तास्या आज भोजन नहीं करोगी ?

सर—नस्तास्या मुस्करा दी,

वह तो आवश्यक है,

तो चलो मेरे उबले हुए खाने में से हिस्सा कर लें।

प्रोफेसर और नस्तास्या के पीछे बिना ननुच के किए वह भी चल दी।

भोजन कक्ष भी उतना ही सुरुचिपूर्ण था जितना प्रोफेसर का अध्ययन कक्ष।

सुन्दर डाइनिंग टेबिल का काँच आर पार जगमगा रहा था।

चटर्जी,

जो राह मानसिक पीड़ाओं से मुक्ति दिलाती है उसी राह को हम भक्ति कहते हैं और जो जीवन का अर्थ समझता है वह दर्शन कहलाता है।

छोड़ो अब भोजन कर लो, तुम्हें तो यह खाना चटर्जी एकदम अच्छा नहीं लगेगा, एकदम उबला और फीका, फिर नस्तास्या की ओर उन्मुख होते हुए बोले—

तुम्हारी मित्र अपना विषय समझती है।

मनु,

आज निश्चित स्वर्ग में थी।

आज आपका बहुत समय हम लोगों ने खराब कर दिया।

मैं तो सिर्फ आपके दर्शन करना चाहती थी।

प्रोफेसर मुस्कराए—,

दर्शन भगवान के होते हैं इन्सान के नहीं भारत की बेटी को यह समझाने की आवश्यकता है क्या ?

सर,

विश्वास कीजिए,

मेरे लिए आपसे मिलना भगवान से मिलने से कहीं अधिक है,

कहते हुए मनु की दृष्टि उस भव्य ड्राइंग रूम के चारों ओर घूम गई।

अग्नि शावक के ऊपर एक बहुत सुन्दर लड़की का चित्र रखा हुआ था।

अत्यधिक आकर्षित,

चाहकर भी वह अपनी दृष्टि सरका नहीं सकी।

जितनी आकर्षक वह महिला थी उतना ही आकर्षक था उसका फ्रेम। महिला ने कीमती और खूबसूरत काला लिवास पहन रखा था, बाल सुनहरे थे और झील से भी गहरी नीली आँखें मानो कुछ कह रही हों, पर इस सुन्दरता के भीतर से दम्भ भी झांक रहा था। जो कुछ भी हो लेकिन तस्वीर बहुत सुन्दर थी उस पर से ध्यान हटाना असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही था।

प्रोफेसर ने ही उसका ध्यान भंग किया।

बहुत खुबसूरत है न ?

सर,

इच्छा रहते हुए भी वह कुछ बोल नहीं पाई।

वह चित्र ?

मेरी पत्नी है, लेकिन अब इस दुनिया में नहीं हैं 15 वर्ष हो गये स्वीट्जरलण्ड जाते समय एअर-क्रैश में···।

शीशे का गिलास जैसे झन्नाटे से टूटता है वैसे ही मनु के विचारों की शृंखला भी ध्वस्त हो गई।

ओफ्फ,

सारी सर।

मन में आया पूछे,

15 वर्ष।

आपके यहाँ तो वर्ष में दो तलाक और दो विवाह होते हैं,

पर साहस नहीं जुटा पाई।

सौ सॉरी,

इन दोनों शब्दों को उच्चारित करने में कितना कष्ट उठाना पड़ा, जिस प्रकार अक्षरों को लिखने की शैलियाँ बदलती हैं, उसी प्रकार जिन्दगी भी करवटें लेती है और न जाने कितनी सिकुड़नें छोड़ती चली जाती है, अन्तर केवल इतना है कि—लिपि पढ़ ली जाती है जबकि निशानों की कोई भाषा नहीं होती।

क्या सोच रही हो ?

सर,

हाँ,

दर्द की सिकुड़नों से झाँकते निशान—क्या कोई भाषा बना पाए हैं ?

अवश्य,

लिपि नहीं—शैली नहीं—इनकी भाषा है अनुभूति, शाश्वता का एकाकी प्रमाण !

शायद,

इसीलिए,

जीवनेच्छा किसी भी परिस्थिति में पराजय स्वीकार नहीं करती, हर स्थान से वह अपनी राह, अपना ढंग निकाल ही लेती है।

और उसी पर टिकी रहती है···,

सत्य की धवलता,

धर्म की उज्जवलता,

आत्मा की निर्मलता,

और,

सर,

तन—,

मनु जी,

तन की शुचिता तो नैसर्गिक खाद्य है,

खड़े होते हुए प्रोफेसर ने पूछा,

कहाँ रहती हैं आप ?

अभी इरीना के पास ही रहती हूँ।

कुतुजोत्स प्रोसपैक्ट में।

अभिवादन करते हुए मनु ने पूछा,

सर मैं कभी आपसे मिलने आ सकती हूँ।

जरूर,

आप कभी भी आ सकती हो।

सर,

इस घर को अपना ही घर समझना।

जी,

अपनी इस प्रतिभाशाली अतिथि के लिए मेरे दरवाजे सदा खुले हैं। मनु की आँखों में अहं के भाव थे या दीनता की नमी जानना बहुत कठिन था।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो मनु और नरतास्या तीनों बाहर आ गये।

आकर्षक उद्यान,

सब कुछ आकर्षक···आकर्षक।

सांध्य वेला में पीले रंग के फूल ऐसे झिलमिला रहे थे जैसे रेशमी सोने के तार जड़े वस्त्र।

अपने सपनों की दुनिया में रंग-बिरंगे रंगों से अठखेलियाँ करती जब मनु घर पहुँची तो न इरीना थी न नानी। वह जाकर धड़ाम से अपने बिस्तर पर गिर पड़ी।

भावनाओं की उड़ान ने,

कल्पनाओं का पल्ला कसकर पकड़ लिया, और वह उस प्रबल बहाव में बहती चली गई।

इस समय वह अपने को एक नन्हीं बच्ची अनुभव कर रही थी,

ऐसी बच्ची,

जिसे बिना माँगे मम्मी ने पूरी खिलौनों की दुकान दिला दी हो।

मनु !

तू बहुत भाग्यशाली है,

माँ, पिताजी,

डॉ० केपिलोव।

और,

इन सबसे श्रेष्ठ,

डॉ० आलेक्सांद्राविनो

great you are really great Manu.

मनु स्वयं पर कितनी प्रसन्न थी आज तो इसका भी अनुपात नहीं था उसके पास।

प्रो० भण्डारी कह रहे थे, एक ऐसा भी युग आया जब बुद्धि की श्रेष्ठता उभरी और शारीरिक श्रम का महत्व गौण हो गया। वह युग आज नहीं है क्या ?

मन-ही-मन मुस्कराती रही मनु।

विद्वानों से मिलना, उनके संसर्ग में रहना, उनसे बातें करना जीवन की कितनी सुखद अनुभूति होती है। इसका अनुभव वही कर सकता है, जिसने यह सब पाया हो जो इन क्षणों में जिआ हो।

जहाँ ज्ञान से जगत मथा जाता हो, जहाँ सारे सारभूत ज्ञान सदा विद्यमान

रहते हैं वही स्थान जीने योग्य होता है।

मनु सोच रही थी,

सौन्दर्यमय जगत का प्रारम्भ होता है तब विश्व मुस्कराता है और उसमें पलने वाले जीवों में नवचेतना का अंकुर फूटता है।

आज !

मनु !

सौन्दर्य का कोई नया शब्दकोश बनाना चाहती थी, आज उसके स्वर उसके विचारों के साथ मिलकर इतने गहरे और इतनी ऊँचाई में उड़कर खो जाना चाहते थे मानो अपनी ही अनंतता में एकाकार हो जाएँगे।

ऊँचाई

और,

गहराई का,

सभी अस्तित्व ही लोप हो गये।

हृदय सितार बज गया, और मनु उसे पूरी एकाग्रता से सुन रही थी।

क्यों नहीं ?

सुनेगी,

अपने हृदय की अपने विचारों की वह स्वामिनी है।

इरीना ने अनुभव किया,

पिछले एक सप्ताह से मनु बहुत खुश है, बिना कारण पूछे वह भी उसकी प्रसन्नता की भागीदार बन गई।

बीस दिन !

पंख लगाकर उड़ गए बीस दिन, कितनी बार उसने ऊँगलियों पर गिने थे।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो से मिले उसे पूरे बीस दिन हो गए, उसकी स्मृति पटल से एक क्षण के लिए भी प्रोफेसर की आकृति धूमिल नहीं हुई, कई बार उसके मन में आया की वह इरीना से पूछे क्या वह पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में नहीं जा सकती ?

डॉ० केपिलोव से बात करें ?

क्या वह तूल नहीं दे रही है अपनी कल्पना को ?

कल्पना नहीं यह तो सच्चाई है।

बीस दिन से उठते-बैठते, खाते-पीते वह सिर्फ प्रो० आलेक्सांद्राविनो के सम्बन्ध में ही सोचती रही है।

हालाँकि इन दिनों प्रोफेसर के अथाह ज्ञान के सम्बन्ध में उसने जितनी जानकारी इकट्ठी की है उतनी ही जानकारी उसे उनके प्रेम-प्रसंगों के बारे में मिली है।

मन-ही-मन मुस्करा दी मनु,

व्यक्तित्व ही ऐसा है,
इस हृदय को जीतने के लिए,
ज्ञान के इस आकाश को छूने के लिए,
कौन आँख झपकायेगा ?
सभी पाना चाहेंगे उसे,
सभी !

इस विश्वविद्यालय से उस विश्वविद्यालय की दूरी उसने पलक झपकते पार कर ली।

वास्तव में अब पार करेगी,
शायद चिन्तन—
—दर्शन—
सब छूट गया, लक्ष्य रह गया प्रो० आसेक्सांद्राविनो को पाना,
क्या वह प्यार करने लगी है,
प्रथम दृष्टि में—,
प्यार !
वह नहीं, उसका अंग-अंग मुस्करा रहा था।

वह मिसेज किलोवाअिना से मिली और बताया की वह यहाँ से पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में स्थानान्तर चाहती है।

डॉ० केपिलोव से मिली,
सीनेट के सदस्यों से मिली,

किलोवाअिना को उसने स्पष्ट रूप से बताया की वह डॉ० आलेक्सांद्राविनो के साथ काम करना चाहती है और अगर उन्होंने उसकी सहायता नहीं करी तो वह भारत वापस चली जाएगी।

मिसेज किलोवाअिना हँसमुख और जिन्दादिल औरत थी उन्होंने तो मनु से कह भी दिया,

मिस चटर्जी आप जानती हैं प्रो० आलेक्सांद्राविनो के पास वड़ा भारी जादू है किसी को भी अपना बना लेने में वह सिद्धहस्त हैं, उनकी छात्राएं दर्शन की विद्यार्थी के स्थान पर प्रेम की विद्यार्थीनिएं हो जाती हैं।

और फिर खिलखिलाकर हँस दी,

अगर मेरा बस चलता तो मैं भी अपना प्रार्थना-पत्र लेकर उनके पास अवश्य जाती,

सत्य होते हुए भी मनु बुरी तरह झेंप गई।
अपने को बचाकर रखना।
बचाकर,

अब तो सम्भव नहीं,
उसके हृदय की एक ही आवाज,
प्रो० आलेक्सांद्राविनो।

मनु बिटिया,
धारा माँ दूध का गिलास लिये कब से उसके सामने खड़ी थी,
बिटिया इतना मत सोचा करो।
हाँ धारा माँ,
दूध का गिलास धारा माँ के हाथ से लेते हुए मनु ने कहा,
काश !
कि मिसेज किलोवाजिना की बात उस दिन मान लेती, कितना सच कहा था उन्होंने।
उनकी विद्यार्थिनीयों,
का विषय दर्शन के स्थान पर प्रेम हो जाता है।
आज की इस कुण्ठा···,
नियति ने क्रूर उपहास किया है उसके साथ,
नियति क्यों,
वही जिम्मेदार है,
अपनी नासमझी के लिए।
अब नहीं सोचेगी वह,
धारा को खाली गिलास देते हुए उसने कहा, "धारा माँ तुम कितना खयाल रखती हो, तुम कितनी अच्छी हो।"
बेटी,
बस कुछ मत बोलो धारा माँ,
अच्छा अब सो जाओ, कुछ भी सोचना नहीं,
नहीं सोचेगी,
क्यों सोचती है वह ?
प्रो० किलोवाजिना की सहायता से उसका ट्रांसफर हो गया,
पीटर्सबर्ग···,
काल बेल पर हाथ रखते ही उसने देखा कि एक गुलाबी लड़की उसके सामने खड़ी मुस्करा रही है।
एक क्षण को झिझकी मनु,
दूसरे ही क्षण अभिवादन करके बोली,

मैं ···,
डॉ० आलेक्सांद्राविनो से मिलना चाहती हूँ।
ओह, आइये !
क्या लेंगी आप ?
आप भारत की हैं ?
क्यों ?
आपको दीदी कहूँ ?
अपने इस शानदार मेजबान को पहली बार देख रही थी,
चारों ओर दृष्टि डाली वैसे ही सब कुछ था जैसा उसने देखा था।
अचानक उसकी दृष्टि हाल में लगी एक पेंटिंग पर पड़ी, यह पेन्टिग पहले थी,
नहीं थी,
होगी,
संध्या का बड़ा ही आकर्षक चित्र था नीचे रवीन्द्र की दो पंक्तियाँ लिखी थीं—एकला एकला—पेंटिंग ऊँची होने के कारण वह आगे पढ़ नहीं पाई।
लेकिन चित्र बहुत ही आकर्षक था।
प्रोफेसर को चित्रकारी से भी लगाव है।
मन-ही-मन बुदबुदाई वह।
पहले विचार ने दूसरे विचार पर विजय पा ली प्रेम की पहली सीढ़ी मनु चढ़ गई थी।
यह चित्र,
जाना पहचाना-सा लगा उसे,
कौन है चित्रकार,
दिमाग पर बहुत जोर डालने पर उसे याद नहीं आ रहा था,
वह एकटक उस चित्र को देखे जा रही थी।
यह हॉस होल्बाइन की चित्रकारी है।
आवाज सुनकर चौंक कर पलटी मनु,
परदे के पास खड़े प्रो० आलेक्सांद्राविनो मुस्करा रहे थे।
एकदम भारतीय पद्धति के अनुसार मनु ने झुककर उनके पैर छू लिए।
आज की प्रातः कितनी खुशगवार है आलेक्सांद्राविनो अपने घर में मनु चटर्जी का स्वागत करता है।
अरे मेरा परिचय कोई नहीं देगा ?
गुलाबी लड़की सोफे पर धँसती हुई बोली,
हाँ,
सर,

हूँ,

आप मुझे सिर्फ मनु कहा कीजिए, प्लीज,

हाँ मनु, इनसे मिलो, मेरी गुरु तात्या।

बहुत प्यारी हैं।

सोफे में धँसी हुई तात्या कूद कर बाहर निकली और चीखकर बोली—नहीं एकदम नहीं,

अच्छा !

मैं इनकी मरहूम बहन तान्या की इकलौती बेटी हूँ और अब मेरी सारी responsibility प्रो०आलेक्सांद्राविनो की है। ऐसे में मुझे गुरु कहना कितता हास्यास्पद है ?

तात्या इतनी जल्दी-जल्दी बोल रही थी उसके आधे शब्द तो स्पष्टतय समझ में ही नहीं आ रहे थे।

आप भारत की हैं,

इसलिए ईश्वर को तो मानती ही होगी।

क्या आप चाहती हैं कि मेरा ईश्वर के प्रति विश्वास कम हो जाए ?

पर,

आप को एक बात बता दूं हमारे यहाँ ईश्वर का वह स्थान नहीं जो आपके यहाँ है, और जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं इतना कहूँगी की मैं नास्तिक नहीं हूँ।

एक दस ग्यारह वर्ष की बच्ची,

ईश्वर, नास्तिक,

संस्कार और वातावरण कहाँ नहीं मिलते विरासत में ?

तुम तो मरियम हो।

आदा—यही सम्बोधन था जो तात्या प्रोफेसर के लिए करती थी,

जीव ब्रह्म से अलग नहीं होता, अब आप इन्हें भी यही पढ़ायेंगे न।

और नन्हीं तात्या कूदती हुई बाहर चली गई।

कब और कैसे ?

मनु होस्टल छोड़कर, प्रोफेसर के घर में रहने लगी पता ही न । गा, ऐसा कब हो गया।

इस दौर में क्या घटा,

ऐसा क्यों हुआ,

सोचेगी तो भी काई उत्तर नहीं मिलेगा मनु को।

चेतन सत्ता में उत्पति, स्थिति और प्रलय का भ्रम उसी के द्वारा होता है,

और,

इसी भ्रम में फँसकर हमारा ध्यान ब्रह्म की ओर नहीं जाता, इसी कारण तो नात्या को उस दिन रिश्तों की दुहाई देनी पड़ी थी।

उसकी स्मृति में आनन्द है, प्राण में स्फुरण है और मन में कौतुहल-भरी जिज्ञासा।

मनु,

स्मृति बुद्धि के अधीन नहीं,

प्रोफेसर,

स्मृति तो हमारी चेतना की स्वयं भू ज्ञान शक्ति है।

स्वतः स्फुरित ज्ञान,

जिसका तर्क अथवा बुद्धि से हर स्थान पर जुड़े रहना आवश्यक नहीं।

बात नात्या से प्रारम्भ हुई थी और अचानक मुड़ गई ब्रह्म ज्ञान···जीव,

मनु,

जीवात्मा ब्रह्म से अभिन्न है।

प्रोफेसर,

तब भक्ति किससे की जाए, अगर ब्रह्म का नाता केवल ज्ञान से है, प्रेम से नहीं,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो मुस्करा दिए।

तुम राम के देश से आई हो न मनु 'रा' और 'म' धर्म रूपी अंकुर के दो दल हैं, ज्ञान रूपी देवी के कानों के जगमगाते हीरे, अज्ञान का अंधकार दूर करने के लिए यह दो अक्षर सूर्य और चन्द्र के समान हैं, यही दो अक्षर भक्ति, ज्ञान और वैराग्य मार्ग तक हमें ले जाते हैं।

मनु !

दर्द प्रेम की कसौटी है प्रेम भक्ति की कसौटी है, इस दर्द और प्रेम का विष पीकर ही तो तुम्हारे यहाँ देवता महादेव शंकर का जन्म हुआ।

आशिक को माशूक से कौन मिलाता है, दोनों के बीच की दूरी या भेद को कौन समाप्त करता है—भक्ति या प्रेम !

मनु अपलक प्रोफेसर का चेहरा निहारे जा रही थी।

वह देख रही थी,

वह सोच रही थी,

ज्ञान कितना जीवन्त हो गया, अपने अस्तित्व का परिचय देने के लिए।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो।

ज्ञान का स्तम्भ,

वह तो खो जाना चाहती है,

डूब जाना चाहती है,

इस विशाल पात्र में,

"प्रेम गली अति सांकरी—" क्या वह इस सँकरी गली में प्रवेश पा सकेगी ?

क्या सोच रही हो ?

प्रोफेसर,

हाँ,

जीवन इतना क्षण-भंगुर है फिर भी इससे इतना लगाव क्यों ?

जन्म

मृत्यु,

अवश्यम्भावी सत्य,

फिर यह चाहना क्यों ?

मनु जन्म और मृत्यु जुड़वाँ भाई बहन हैं, जन्म भाई है,

मैं यह नहीं कहूँगा की वह पुरुष है इसलिए संघर्ष उसका मोह है। सृजन उसकी प्रक्रिया है। पर यह वास्तविकता है।

और,

मृत्यु वह धवल शान्ति है जिसमें सूर्य नहीं, उर्जापन नहीं, निविड़ अंधकार और एकाकी मौन अस्तित्व है।

शब्द रचनाओं से क्या जीवन के अर्थ मिल जाते हैं ?

क्या सोच रही है ?

इरीना की आवाज से उसकी तन्द्रा भंग हो गई।

इरीना,

शब्दों से अपने को इतना मत उलझाया करो,

उलझाती कहाँ इरीना,

हाँ प्यार करती हो, प्यार भी तुम्हारा इतना आवेगशाली है कि उसमें बेचारे शब्द तो अस्तिवविहीन होकर रह जाते हैं,

शब्द,

अर्थ,

अर्थ के अर्थ,

बस यही ढूँढ़ती रहती हो।

जानती हो इरीना आज प्रोफेसर की वर्षगाँठ है।

ओह, तुम्हें बधाई, इरीना हँस दी।

क्यों हँसी,

सच बताऊँ,

मुझे कहना तो नहीं चाहिए पर आज कहकर ही जाऊँगी मैं यह भी जानती हूँ कि मेरा कहना तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा।

इरीना,

हाँ मनु, तुम प्रो० केपिलोव के यहाँ से हटकर यहाँ आ गईं, मैं मानती हूँ कि प्रो० आलेक्सांद्राविनो विश्व विख्यात दार्शनिक हैं पर केपिलोव भी कम नहीं थे उनके साथ काम करने के लिए विद्यार्थी इतना ही तरसते हैं जितना नन्हा शिशु दूध पीने के लिए।

लेकिन,

इरीना प्रो० आलेक्सांद्राविनो दर्शन जगत के अत्यधिक ख्याति प्राप्त—

व्यक्ति का नाम है,

मैं जानती हूँ,

तू जानती है इरीना, यहाँ आकर, यहाँ आकर मेरी सम्पूर्ण देह कपूर हो गई है।

कहते-कहते मनु की आँखें अश्रुओं से छलछला गईं मानो वह अपने हृदय की व्यथा अपनी आँखों से इरीना को स्पष्ट कर देना चाहती हो।

इरीना भी मानो बिना कहे बहुत कुछ समझ गई, पर उसकी आँखों में अब भी एक शिकायत थी, मानो कह रही हो मनु तुम्हारी सब बातें मैं मानती हूँ पर क्या कभी टेलीफोन पर अपनी मित्र से बात करने का भी समय नहीं मिलता तुम्हें,

तुम्हारा प्यार इरीना के प्रति प्यार नहीं···नहीं हो सकता मनु।

मनु ने भी समझा,

वह यह भी समझती थी कि इरीना की शिकायत गलत नहीं आजकल वह अपने दिल के हाथों विवश थी। सारा समय प्रोफेसर के आगे-पीछे घूमने में ही निकल जाता था। एक पल भी वह उनकी आँखों से ओझल नहीं होना चाहती थी।

जब अकेली होती तो उनके विचारों और उनकी प्रतीक्षा में डूबी रहती।

सारा दिन व्यस्तता में व्यतीत हो गया कितने लोगों से मिली वह सच में तो सभी अपरिचित चेहरे थे।

प्रोफेसर का ड्राइंगरूम फूलों से भर गया था, फूल ही फूल, सब ओर फूल।

लावण्य धरती का आसरा पाकर मानो फूलों का बगीचा यहाँ विश्राम कर रहा हो।

क्या इतना मान उसके देश में किसी विद्वान को प्राप्त होता है ?

क्यों ?

कारण ?

ईर्ष्या और द्वेष की जंजीरें इतनी सशक्त क्यों उसके देश में ?

उसकी दृष्टि बार-बार उन खूबसूरत फूलों से फिसल जाती, और याद आता

अपना देश।

जहाँ इन्सान को रोटी नहीं मिलती हो वहाँ वह फूल क्योंकर खरीदेगा ?

धनी और निर्धन,

उसके देश में यह लकीर पतली क्यों नहीं होती ?

क्या कभी नहीं होगी ?

होगी, एक दिन···,

फिर कुछ सोचने लगी, प्रोफेसर ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है की तुम धरती पर पैर रखना चाहती ही नहीं।

प्रोफेसर,

कहिए,

सच तो यह है मैं आपके पास हूँ, इस अहं में ही अपने को भूले रहती हूँ।

दोनों मुस्करा दिए।

अपनत्व की एक दृष्टि होती है एक भाषा होती है जिसके लिए न तो शब्दों की आवश्यकता होती है—,

वाक्य पूरा करने से पूर्व उन्होंने मनु की आँखों में झाँका पर वहाँ उनके स्वामित्व के लिए स्थान नहीं था, वहाँ तो प्यार का समुद्र हिलोरें मार रहा था।

और,

उन लहरों में

दो चेहरे थे,

एक,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो।

और दूसरा,

मनु चटर्जी।

और उस रात,

बहुत दिनों के उपरान्त मनु ने अपनी डायरी में लिखा,

"मैंने आदित्य समान,

महान् पुरुष, प्रो० आलेक्सांद्राविनो को जान लिया है जो समस्त अन्धकार से परे हैं, केवल उन्हें जानकर ही मनुष्य ज्ञान के अथाह समुद्र में तैर सकता है।

एकाएक उसे याद आया,

श्वेताश्वर उपनिषद में उसने पढ़ा था,

"वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।

आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाऽतिमृत्यु मेति
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

वह दर्शन पढ़ने आई है सत्य की उपलब्धि पाना चाहती है उसकी तृष्णा की पूर्ति यहाँ आकर अवश्य तृप्त हो जायेगी, दर्शन और जीवन,

रामकृष्ण परमहंस ने अपने शिष्य नरेन्द्रनाथ से पूछा था कि तुम क्या चाहते हो ?

उस समय नरेन्द्रनाथ ने प्रत्युत्तर दिया था, "शुकदेव की भाँति निर्विकल्प समाधि के द्वारा सदैव सच्चिदानन्द सागर में डूबे रहना," और उसी के उपरान्त उन्होंने अनुभव किया था कि—,

"शृणवन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा :
आ ये धामानि दिव्यानि तस्थु : ॥"

वह भी दर्शन में विद्वता प्राप्त करना चाहती है, विश्व में अपना प्रभुत्व जमाना चाहती है।

वह भी प्रो० आलेक्सांद्राविनो बनना चाहती थी ।

उसने दृष्टि ऊपर उठाई,

प्रोफेसर के कमरे में से अभी तक प्रकाश आ रहा है, घड़ी पर दृष्टि डाली पौने तीन बज रहे थे ।

क्या प्रोफेसर अभी तक काम कर रहे हैं ?

वह अपने पलंग से उठी,

प्रोफेसर के कमरे में दबे पैर दाखिल हुई, किताब का सफा खुला हुआ था, कुछ नोट कर रहे होंगे, पैन खुला तीन चार अक्षर चमक-चमक कर नोट बुक के सफेद पृष्ठ से झाँक रहे थे, शायद लिखते-लिखते प्रोफेसर की आँख लग गई। उसने उन्हें जगाकर डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा, अन्दर से लाकर वहीं पर उसने उन्हें कम्बल उढ़ा दिया नोट बुक बन्द करने जा रही थी तो उसने पढ़ा—

"यदि द्रुत उन्नतिशील तथा आपात मनोरम पाश्चात्य सभ्यता को वेदान्त के त्याग, विवेक व वैराग्य की नींव पर प्रतिष्ठित न किया जाएगा तो उसका नाश अवश्यम्भावी है।"

वह आगे पढ़ना चाहती थी पर प्रोफेसर की आँख न खुल जाए इस डर से आगे बढ़कर उसने धीरे से स्विच ऑफ कर दिया ।

वह स्वयं भी आकर अपने पलंग पर लेट गई ।

वास्तविकता लिखी है प्रोफेसर ने अगर आज की सभ्यता को रोका न गया तो शायद मनुष्य के अस्तित्व का पता भी नहीं लगेगा, इतने गहरे गड्डे में गिरने के बाद विनाश के अतिरिक्त और क्या शेष रहेगा उनके पास कुछ नहीं···

पता नहीं कब उसकी आँख लग गई,

उसके पास ही नात्या सो रही थी, गुलाबी लड़की उसने बड़े प्यार से उसका

यही नाम रख दिया था। वैसे भी नात्या और मनु की गहरी पटती थी।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो के घर शान्ति और ज्ञान का समुद्र हिलोरें मारता समुद्र है।

समय पंख लगाकर उड़ जाता है।

कब उसने इरीना का घर छोड़ा,

कब मास्को विश्वविद्यालय छूट गया,

छूट गये प्रो० केपिलोव जिनकी विद्यार्थिनी होने का स्वप्न लेकर उसने सात समुद्र की यात्रा की थी।

और,

इनके सब के साथ छूट गई उसकी प्रिय सखी इरीना।

अब तो वह,

रंग गई है, पूर्णरूपेण—प्रो० आलेक्सांद्राविनो के रंग में कभी-कभी प्रो० की सेक्रेटरी उसे याद दिलाती की वह यहाँ पढ़ने आई है।

प्रोफेसर की सेक्रेटरी मिसेज येपाचिना की मुस्कराती आँखें उससे कितनी बार गुपचुप बातें कर जातीं—बार-बार उसे याद दिला जाती की वह प्रो० आलेक्सांद्राविनो से प्यार करने लगी है।

जब भी मिसेज येपाचिना उसके सामने होती, उनके इस अनकहे वाक्य से उसके समस्त शरीर में स्फूर्ति का संचार हो जाता वह अनुभव करती की उसके शरीर में से प्यार की सुगन्ध आ रही है, और उसका सम्पूर्ण रूप जूही के फूलों की भाँति निखर गया है।

बस वह सोचती रहती,

और खोई रहती अपनी इस दुनिया में।

प्रोफेसर का घर उसे स्वर्ग लगता,

और,

प्रोफेसर साक्षात कामदेव !

उसकी संध्याएँ और···,

प्रोफेसर का सामीप्य,

मानो नित उत्सव चलता,

उसके मनोरथों का उत्सव।

और,

वह सदा भीगी रहती,

वह बहुत सुन्दर है,

इस सत्य को वह बचपन से पहचानती है।

लेकिन यहाँ आकर,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो को पाकर,

तो इस सत्य ने एहसास के स्थान पर गर्व का रूप धारण कर लिया है।

वह इस वास्तविकता से इतनी परीचित हो चुकी है कि—

मन ही मन मुस्करा दी मनु।

विश्वविद्यालय में सभी की दृष्टि उसकी परछाईं का सदा पीछा करती रहती है।

विदेशी—भारतीय—,

कहीं कोई अन्तर नहीं,

बस···,

प्रकृति और पुरुष सब धरती के समान होते हैं, आखिर मिट्टी भी तो एक-सी ही होती है।

क्या वास्तव में वह इतनी सुन्दर है···,

ज्ञान के सानिध्य में खिलना सीख लिया है उसने,

सौन्दर्य बोध और ज्ञान की परिपक्वता का सानिध्य है उसके पास, शायद इस कारण—

वास्तविकता में कम,

और,

स्वपनों में अधिक रहना सीख लिया है उसने।

हर समय मोह निद्रा में,

स्वप्निल स्वप्न सँजोती रहती है ··

एकाएक चौंक गई,

उसे लगा की प्रोफेसर बाहर किसी से बात कर रहे हैं, उसने कान लगाकर सुना,

हाँ, प्रोफेसर ही किसी से बात कर रहे थे,

"जानते हैं आप प्रो० ड्यूकंहाइस, जो कि एक विख्यात धर्म मनोवैज्ञानिक हो गए हैं, उनकी मान्यता है कि, "सहज अंधकार मरना नहीं चाहता।"

मन वह यंत्र है जो देहान्तरण की घटनाओं को अधिकृत करता है नवशरीरों की ओर आत्मा को प्रेरित करता है और सभी प्रमुख धर्म, हिन्दू, यहूदी, इस्लाम, ईसाई पूर्वजन्म के निश्चित सूत्र हैं।

क्या हम लोग नहीं मानते कि मनुष्य को यहाँ जो कुछ प्राप्त है यह सुख दुःख, धनी निर्धन, ऊँच-नीच यह सब मानवों के पूर्वोपार्जित पुण्य पाप का फल है और इस कर्म विधान को ही लोक की परिचालना का परम नियम कहा है।

इस भौतिक जगत में मनुष्य रंगमंच के ऊपर का एक अभिनेता है और किसी सूत्रधार के निर्देशन के अनुसार नाट्य करता रहता है।

शान्ति के लिए,
जीवन जीने के लिए।

पर जीवन का लक्ष्य एकमात्र वासनाओं या इन्द्रियों की तृप्ति नहीं होना चाहिए। मनुष्य को जीने की इच्छा अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि इसके द्वारा ही वह परम सत्य की जिज्ञासा करने में समर्थ होता है। आज इन्द्रिय तृप्ति के लिए लोग पागल हैं। जब मानव इन्द्रिय तृप्ति को जीवन का लक्ष्य बना लेता है तब वह निश्चित ही भौतिक जीवन के पीछे पागल हो उठता है और फिर उसे उचित अनुचित का ज्ञान नहीं रहता।

अमरत्व के लिए मनुष्य की सनातन अभिलाषा इतनी मौलिक है कि मृत्यु की बात सोचना भी उसके लिए असम्भव है।

फिर जीवन की वासनाओं का लक्ष्य इन्द्रिय तृप्ति क्यों ?

"कामस्य नेन्द्रियप्रीतिर्लाभो जीवेत यावता।
जीवस्यं तत्वजिज्ञासा नार्थो यश्चेद कर्मभि :॥

प्रोफेसर कितनी सुन्दर संस्कृत बोलते हैं।
कितना विशद अध्ययन है उनका,
प्रोफेसर !
उसने फिर अपने कान बाहर लगाए।

इसी प्रकार पास्तरनाक के कवित्व में जलती मोमबत्ती की लौ एक जीती जागती मानव आत्मा का अमरत्व प्राप्ति के यानि कि एक परम्परागत रूप में स्पष्ट रूपालंकार है।

छा गया धरा पर हिम,
अन्तहीन न ओर छोर था,
मेज पर रखी जो मोमबत्ती,
जलती रही अविराम।
Reliance of truth and Self confidence are the best Guides.
तभी तो,
उसे याद आया, कि,
प्रोफेसर की डायरी में किसी ने लिखा था—
"स्तब्ध क्षणों ने पूछो मौन का अर्थ।"
उसने पूछा भी था प्रोफेसर से।

प्रोफेसर जब भारत यात्रा पर गए थे तो वहाँ के किसी विद्वान गुजराती कवि ने लिखा था।

मौन और स्तब्ध,

कितना कुछ है दोनों में—,

प्रोफेसर अक्सर सभी से कहते हैं उनकी इस बार की भारत यात्रा की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, जो उन्हें एक भारतीय मित्र से मिली है।

अरे क्या पढ़ रही हो,

प्रोफेसर जब अन्दर आए—,

वह पढ़ कहाँ रही थी,

वह तो प्रोफेसर की चर्चा सुन रही थी।

किताब के पृष्ठ तो पता नहीं कब से उसके सामने ऐसे ही खुले हैं।

फिर भी वह शीघ्र सामान्य हो गई,

मैं बर्गसो—,

तृष्णा···,

हाँ मनु,

सामने ईजी चेयर पर बैठते हुए प्रोफेसर बोले,

तृष्णा का कारण वेदना है और वेदना के लिए स्पर्श आवश्यक है और स्पर्श बिना ज्ञानेन्द्रियों के हो ही नहीं सकता, फ्रांस के सुविख्यात दार्शनिक बर्गसो ने कहा है कि किसी भी वस्तु का विकास अन्तर्निहित शक्ति की प्रेरणा से होता है, वाचालता या शब्दजाल से नहीं। संसार परिवर्तनशील है। मनुष्येतर जीव या अन्य कोई भी वस्तु परिवर्तन से रहित नहीं है लोगों में विशेषकर हिन्दू राष्ट्रों में मान्यता है कि आत्मा नाम की एक चिरस्थायी वस्तु है उसकी सत्ता जन्म के पूर्व और मृत्यु क उपरान्त भी सतत काम करती रहती है, शरीर के नष्ट होने पर···

अपनी घड़ी की ओर देखते हुए वह कुर्सी से उठकर खड़े हो गए,

दस बज गए मनु,

पर आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है, कहते हुए वह तेजी से बाहर आ गए।

मनु सोचती रही,

कल प्रोफेसर ने कहा था,

ज्ञान केवल मन पर ही निर्भर नहीं है।

ज्ञान का आकार ज्ञात वस्तु के आधार पर ही होता है।

प्रभा का अर्थ ही यथार्थ ज्ञान है,

मनु सोचती रही,

सोचती ही रहती,

अगर गुलाबी लड़की आकर उसकी तन्द्रा भंग न करती,

हाँ सामने नात्या खड़ी थी,

स्कूल यूनिफॉर्म में तैयार।

मनु ने देखा प्रोफेसर कुछ ढूँढ़ने में व्यस्त हैं,

सामने रखी अलमारी में से।

मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूँ।

प्रोफेसर की चेतना स्वयं में इतनी व्यस्त थी की मनु के वाक्य उनके कानों तक पहुँचे ही नहीं।

अपने,

चिन्तक,

दार्शनिक,

को मनु एकटक देखती रही दुबारा बात करके उनकी तन्द्रा भंग करना उसे उचित नहीं लगा।

और वास्तव में शायद उनकी तन्द्रा भंग होती भी नहीं अगर टेलीफोन की घण्टी शोर न मचाती। जो कि बिलकुल उनके पास ही बज रही थी।

रिसीवर उठाते हुए उन्होंने आश्चर्य से पूछा, अरे तुम ?

कब से खड़ी हो ?

फिर कुछ झिझकते हुए बोले वर्ल्ड में एक लेख भेजना था मैंने यहीं तैयार करके रखा था मिल ही नहीं रहा।

हम ढूंढ़ दें ?

नहीं अब कालेज चलो, शाम को देखेंगे,

अलमारी बन्द करके वह मनु का हाथ पकड़कर बाहर ले आए।

घण्टी बज गई शायद,

प्रोफेसर ने बड़ी शीघ्रता से अपनी गाड़ी पार्क की।

गुड मार्निंग एवरी बडी,

हमारे दर्शन के अनुसार···,

न्याय के अनुसार चौथा प्रमाण शब्द है, सभी शब्द मान यथार्थ नहीं होते, शब्दों को प्रमाण तभी माना जाता है जब इसके द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलता है कोई वचन या वाक्य स्वत: तो वस्तुओं का ज्ञान नहीं करा सकता, शब्द यथार्थ या प्रमाणिक तब होता है जब वह किसी विश्वास योग्य व्यक्ति का निश्चितार्थ वाक्य होता है। शब्द दृष्टार्थ और अदृष्टार्थ होते हैं, दूसरे ढंग से भी शब्द के दो भेद किए जाते हैं। वैदिक और लौकिक,

वैदिक ईश्वर के,

और,

लौकिक मनुष्य के।

वैरी गुड।

थैंक्यू सर, कहकर मनु क्लास में बैठ गई।

प्रोफेसर मनु को बड़े मनोयोग से निहार रहे थे,
प्रतिभा !
सौन्दर्य,
यह मेरी है,
पुरुष की प्रतिभा काँप गई,
कहीं,
उनके यश की लौ तो काँप नहीं रही ?
सहसा उन्हें ख्याल आया कि यह क्लास है, यहाँ मनु उनकी विद्यार्थिनी।
और वह,
इस समय,
दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर,
मनु !
जी,
आपने कुछ कहा,
नहीं कुछ नहीं,
वह सोच रहे थे,
क्या ?
और, सामने बैठी मनु पढ़ रही थी,
मनु ने एक दिन उनसे कहा था,
कि,
तप तीन प्रकार का होता है,
सात्विक,
राजस,
तामस !
सात्विक तप—देवता, संन्यासी और ब्रह्मचारियों का।
राजस तप—दानव और मानवों का।
तापस तप—राक्षस और परमात्माओं का।
वह मानव है,'
उन्हें अपने तप से मनु चाहिए।
मनु भी तो उन्हें बहुत अधिक प्यार करती है।
नहीं,
नहीं,
प्रो० आलेक्सांद्राविनो, तुम मनु की दृष्टि में गिर जाओगे। उससे शादी कर पाओगे ?

वह करेगी तुमसे।
नहीं। कभी नहीं,
किसी को चाहना अपराध नहीं|है ?
क्या मैं मनु को नहीं चाहता ?
मेरी पहली पत्नी मर चुकी है—?
क्या यह सच है ?
भारतीयता में पगी यह लड़की…,
तो क्या हुआ ?
क्या यह मेरा दोष है ?

प्रोफेसर बुदबुदाए No man's life is perfect particularly if some on'e is bent upen finding only defects in it.

स्वयं सोचने की जंजीर को उन्होंने मन के हाथों कसकर पकड़ लिया।
मेरे में कोई कमी है ?
मैं !
विश्व विख्यात दर्शन शास्त्री,
वह सोचते ही रहे,
कब मनु अपनी टेबिल से उठकर रसोई घर में चली गई उन्हें पता ही नहीं चला।

दूर नदी के किनारे अर्धोपित सूर्य के चरण तल में धूल और गर्द के बादल उड़ रहे थे।

आँखें उसकी जलधार से गीली और धुंधली हो रही थीं। पौष की पूर्णिमा की प्रभात वेला थी।

मनु को प्रो० आलेक्सांद्राविनो विश्वविद्यालय बन्द हो जाने के कारण अपने फार्म हाउस पर ले गए थे, जब वह फार्म हाऊस पर पहुँचे—,उषा की प्रथम किरण फूट कर गेहूँ के लहलहाते फर्श पर वायु का स्पर्श पाकर चारों दिशाओं से स्वर्णिम कणों की वर्षा कर रही थी।

एक अनिर्वचनीय सुख से आविर्भूत होकर मनु उस सुनहरी फसल से चिपकी हुई स्वप्निल युगों की काल्पनिक यात्रा कर रही थी।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो मनु को निहारे जा रहे थे,

अभी सूर्योदय हुए एक प्रहर भी नहीं व्यतीत हुआ था, फिर भी सूर्य की किरणें तेज हो गई थीं।

प्रोफेसर ने पीछे से जाकर मनु के दोनों हाथ अपने हाथों में बाँध लिए,
मनु ने देखा,

अपलक,

एक क्षण,

दो क्षण,

तीन क्षण,

बिना एक शब्द बोले मनु समा गई प्रोफेसर की बाँहों में।

मानो वह प्रतीक्षा ही कर रही हो।

प्रातः की ठण्डी पवन के झोंकों के स्थान पर गर्म-गर्म सूर्य की किरणें बिखरने लगीं।

लेकिन,

दोनों के बीच एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं हुआ।

भूख, प्यास !

सभी,

से बेखबर।

क्यों ?

क्या इसका उत्तर आज तक कोई दे पाया है ?

कैसे ?

कोई इसका समाधान आज तक कर पाया है ?

न,

उत्तर।

न,

प्रश्न।

सूर्य भी दोनों को देखकर पिघल गया और उसके बीच तृतीया का अस्तंगत् चन्द्र क्षीण प्रकाश में गलने लगा, तभी उस प्रकाश की क्षीण रेखाओं में कुछ तारे टिमटिमाने के लिए मचलने लगे।

उठो,

प्रोफेसर ने कहा,

मुँह पर हाथ रखते हुए बोले, कुछ कहना नहीं कुछ पूछना नहीं।

मनु मुस्करा दी,

विजय की मुस्कान,

जिसका,

अर्थ एक विजेता ही समझ सकता है।

दूध जैसे स्वच्छ बिस्तर पर लेटे-लेटे प्रो० आलेक्सांद्राविनो ने कहा—

मनु,

जी,

मनु मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ,

मनु का हृदय निर्मल झील में गोते खाने लगा,

वह तो कब से यह सुनने को व्याकुल था।

अनुवाद है क्या,

नहीं,

एक सोवियत कवि ने कहा है कि—

अनुवाद प्रेम की सन्तान है,।

नाम जानती हो।

मनु ने अपनी गहरी नीली आँखें प्रोफेसर की आँखों में डालते हुए कहा,

हाँ प्रोफेसर, सैमुएल मार्शाक ने।

वाह !

आज तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।

मनु ने अपनी हथेली प्रोफेसर के मुँह पर रख दी।

नहीं मनु,

मनु की हथेली अपने मुँह से हटाते हुए बोले—किसी का अतीत वर्तमान को समझने के लिए ही नहीं बल्कि भविष्य का निर्माण करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण होता है

मुझे किसी निर्माण की आवश्यकता नहीं।

मैंने जो पाया है···।

उसका सुख,

अब कुछ मत कहिए प्रोफेसर।

मनु मेरी दृष्टि से प्यार एक युद्ध है, जिसे प्रारम्भ करना तो आसान है पर समाप्त करना कठिन, और जानती हो समाप्ती से भी दुरूह है उस पर चलना, जो सशक्त कदमों से चल पाया वही आगे जाकर कृष्ण, बुद्ध और ईसा मसीह बन गया। दूसरे शब्दों में वही शार्त्र और मजनूं कहलाया, शेष तो बस दिन गिनते रहते हैं। जीने के क्रम में मरने के क्षण तक दौड़ते रहते हैं।

प्रोफेसर आपको भी यह नहीं भूलना चाहिए कि इन दौड़ों के सहारे ही मानवीयअभिव्यक्तियों को जीवन की कसौटी पर कसा जाता है और इस दौड़ की परिधि से निकलकर प्यार सृजन और जीवन की ऊर्जा शक्ति का स्रोत समझा जाता है।

मनु जानती हो।

और प्रोफेसर उसका यही चरित्र या यही जीव एक अबोधगम्य सन्तुलन के साथ जीता है,

मनु,

जी,

बोलिए,

पाउस्तोव्स्की ने कहा है कि,

रोमानी मनोवृत्ति मनुष्य को झूठा, अज्ञानी, कायर और क्रूर नहीं होने देती।

प्यार !

प्यार !

प्यार।

ही जीवन है यह जीवन का ही नहीं सृष्टि का भी सत्य है।

अनायास प्रोफेसर का आलिंगन दृढ़ हो गया।

और,

मनु ने,

आकाश गंगा के महल की सीढ़ी चढ़कर समस्त स्वर्ग की यात्रा कर ली।

कितना बड़ा सामाजिक सत्य था···

प्रोफेसर ने मनु की बाँहों में बँधकर उन सीमाओं की मर्यादा पहचानने का प्रयत्न किया था।

जीवन की सुन्दरता के समस्त बिन्दुओं का एक साथ स्पर्श किया था।

उषा के जाने का,

सूर्य के प्रतिबिम्बित होने···का,

मानो सभी समय स्तब्ध हो गए।

प्रत्येक स्पर्श, पल-पल लहराने वाली हवा उनके स्नायु मण्डल के संगीत वाद्यों में भरकर एक विचित्र सरसराहट के साथ तलों से उठकर ऊपर आने लगी उस प्रेमिल स्पर्श से सब-का-सब अन्दर ही सिमटता चला गया।

खुली आँखों में वह रात भर स्वप्न देखती रही। सब ओर सागर ही सागर, अथाह पानी, ऊपर आकाश, एक छोटी-सी नौका उसमें मनु और प्रोफेसर—।

एक स्पर्श, एक गन्ध, कानों में कुछ स्वर और सामने प्रोफेसर की छवि उसमें। आकर वह बार-बार अटक जाती।

गन्ध और रूप,

रूप और गन्ध,

क्या यह उसका निर्णय ठीक है ?

किसी,

अज्ञात स्वर ने उससे पूछा,

किसी अज्ञात ने ही प्रत्युत्तर दिया,

रजनी चाँद के बिना, चाँद रजनी के बिना और कुमुदनी इन दोनों के बिना प्रमुदित नहीं होती, इसी प्रकार मनु आलेक्सांद्राविनो के बिना और आलेक्सांद्राविनो मनु के बिना अधूरे हैं।

प्यार ही प्रकृति है,

प्यार ही पुरुष है,

प्यार ही आनन्द है,

और,

प्रकृति, पुरुष और आनन्द यह तीनों आपस में गूँथकर ही मनोहारी माला तैयार होती है।

प्रातः नहा-धोकर जब वह प्रोफेसर के शयन कक्ष में आई, देखा प्रोफेसर अभी सो रहे थे। उनके मुख पर बाल सुलभ मुस्कराहट थी, इतने भोले प्रतीत हो रहे थे मानो एक नन्हा शिशु।

दर्शन, चिन्तन,

सबसे दूर,

दीन-दुनिया से बेखबर,

क्या,

यही वह प्रकाण्ड विद्वान हैं जिसके आगे विश्व मस्तक झुकाता है।

मन ने उत्तर दिया, हाँ यह वही दर्शन शास्त्री हैं।

मन-ही-मन,

मनु,

बुदबुदाई,

आज वास्तव में तो मेरा गुरुत्व कितना हल्का हो गया, भारहीन फूल-सा सुगन्ध भरा तन, मन तुम्हें अर्पित कर दिया।

इसे स्वीकार करो,

मेरे भीतर,

रहने वाला तुम्हारा व्यक्ति स्वरूप अब अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से तुम्हें पाकर तुम में ही लय हो गया।

मेरे जीवन,

जो मैं पाना चाहती थी···,

मेरा तो स्वतः ही समाप्त हो गया।

तुमने मुझे क्रय कर लिया,

जड़ भी कितना चैतन्य हो गया,

जड़।

मनु मुस्करा दी।

हाँ प्रो० आलेक्सांद्राविनो दर्शन शास्त्र का वह पत्थर है जिसके चारों ओर से झरने फूटते हैं, जिसको उसका एक बिन्दु भी स्पर्श कर ले वह धन्य हो जाता है।

यही तो विख्यात है इस दार्शनिक के सम्बन्ध में।

मौन ज्ञानी,

गम्भीर समुद्र। ठाठें मारता सागर।

जहाँ ज्ञान की मात्र प्रातः ही है, जहाँ रात कभी नहीं आती, जहाँ कभी किसी क्षण अन्धकार नहीं होता, यह वही तट है।

ज्ञान पयोदधि तट !

जहाँ उसने विश्राम किया है।

माई डियर चाइल्ड···,

प्रोफेसर की दृष्टि क्लास में बोलते-बोलते रुक गईं और मनु के ऊपर जाकर अटक गई।

सारी क्लास ने देखा कि प्रो० आलेक्सांद्राविनो मुस्करा रहे थे।

आश्चर्य !

विश्व के वण्डरों में एक संख्या और जुड़ गई।

विद्यार्थियों की आँखों में मात्र जिज्ञासा ही नहीं प्रसन्नता भी थी। स्वाभाविक भी था।

कितने सम्मान उन्होंने प्राप्त किए थे।

विश्व के श्रेष्ठ पुरस्कार, पर उनकी मुख मुद्रा में कभी कोई अन्तर नहीं आया। न सुख की आभा न दुःख का एहसास—

उनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध था कि प्रोफेसर के ऊपर धूप-छाँव का कोई असर ही नहीं होता।

उस व्यक्ति के होंठ मुस्करा रहे हैं,

वह भी क्लास में।

शायद प्रोफेसर की जिन्दगी में यह पहला अवसर था जबकि विद्यार्थी घण्टा बजने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पूरे विश्वविद्यालय में एक ही विषय था।

प्रो० आलेकसांद्राविनो।

उन्हें मुस्कराना किसने सिखाया ?

न्याय दर्शन, भारतीय···,

हाँ तो भारतीय न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं, भारतीय दर्शन में गौतम अष्टपाद के नाम से भी प्रसिद्ध हैं, अतः भारतीय दर्शन इसे अष्टपाद दर्शन भी कहता है, न्याय को न्याय विधा, तर्क शास्त्र तथा आन्वीष्टिकी भी कहते हैं। आन्वीष्टकी युक्तिपूर्वक आलोचना को कहते हैं। वास्तव में तो न्याय दर्शन का उद्देश्य शु द्ध विचार या तार्किक आलोचना के नियमों का अन्वेषण करना नहीं है।

भारतीय दर्शन इसको भी मोक्ष प्राप्ति का ही एक साधन मानता है। वैसे भी अगर हम सोचें तो, अन्य दर्शनों की भाँति न्याय भी जीवन की समस्याओं का ही समाधान करता है। विशेषत: इसकी कड़ी भी हम प्रमाण विज्ञान एवं तर्क विज्ञान से जोड़ सकते हैं।

भारत के एक महर्षि वात्स्यायन ने कहा है कि—

"प्रमाणैरर्थ परीक्षणं न्याय:"

अर्थात—

प्रमाणों द्वारा किसी विषय की परीक्षा करना ही न्याय है। जैसा कि मैंने बताया न्याय दर्शन का मूल ग्रन्थ गौतम का न्याय सूत्र है। प्राचीन समय में न्याय को प्राचीन न्याय कहते हैं तथा आधुनिक काल के न्याय को नव्य न्याय कहते हैं। नव्य न्याय का प्रारम्भ गंगेश की तत्व चिन्तामणि से हुआ इसका प्रचार सर्वप्रथम भारत में मिथिला नाम के स्थान पर हुआ। वहाँ इसकी बड़ी प्रगति हुई पर बाद में यह बंगाल के नवद्वीप में पठन-पाठन का केन्द्र बन गया। न्याय दर्शन तर्क प्रधान वस्तुवाद है और वस्तुवाद वह दार्शनिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार किसी भी वस्तु का अस्तित्व आत्मा के ज्ञान पर निर्भर नहीं होता। न्याय दर्शन को तर्कप्रधान वस्तुवाद कह सकते हैं और यह वस्तुवादी इसलिए है कि न्याय के अनुसार प्रत्येक प्रतीति ज्ञान का एक विषय है और न्याय का वस्तुवाद अनुभव एवं तर्क पर अवलम्बित है।

घण्टी की आवाज ने बताया कि प्रोफेसर अब समय, आपका समाप्त हो गया है।

प्रोफेसर के बाहर जाते ही, दूसरे पीरियड की चिन्ता करे बिना सब विद्यार्थी बाहर निकल कर खड़े हो गए सभी एक खजाने की खोज में व्यस्त, सभी की जबान पर एक ही प्रश्न—

तुम जानते हो ?

तुम जानते हो ?

गरमा-गरम बहस का यह मुद्दा बनता जा रहा था,

प्रत्येक विद्यार्थी इस चर्चा में भाग लेने को उत्सुक।

जबकि इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था।

रादोग्स्की ने एक सुझाव दिया कि क्यों न प्रो० के घर चलकर उसके बावर्ची से मिला जाए।

प्रोफेसर का बंगला,

एक आकर्षक गुलदस्ता था।

किसी ने कहा,

चिन्तन और मनन करने वाले महर्षि का इतना शानदार बंगला।

बावर्ची तो नहीं मिला।
काल बैल बजाते ही,
जो भद्र महिला सामने आई,
वह थी,
मिसेज येपाचिना,
उनकी आकृति ही कुछ ऐसी थी कि उनसे कुछ भी पूछना न पूछने के बराबर था।
सारा जोश भरभरा कर समाप्त हो गया।
एक साथ सभी के मुख से निकला, हम प्रोफेसर साहिब से मिलना चाहते हैं।
प्रोफेसर साहिब से मिलना है।
जी,
आप लोग कहाँ से आ रहे हैं ?
विश्वविद्यालय से।
फिर आपको यह नहीं पता कि प्रोफेसर इस समय घर नहीं अपितु यूनिवर्सिटी में ही मिलेंगे।
आवाज कर्कश तो नहीं थी पर उसे कोमल भी नहीं कहा जा सकता, चलो समझ लो परिस्थिति अपने अनुकूल नहीं है।
फाइन्ना सोलास्को ने कहा,
देख ली,
और,
आजमा भी ली,
अच्छा यही होगा कि अब घर लौट चलें,
इसी समय,
येपाचिना ने चिल्ला कर कहा कि आप जा सकते हैं,
मनु मन-ही-मन मुस्कराई,
अच्छा हुआ कि किसी ने परशुराम का रूप धारण नहीं किया—
वैसे भी लड़ना-झगड़ना यहाँ के विद्यार्थियों की दिनचर्या नहीं है।
वैसे उसने अनुभव किया है कि यहाँ के विद्यार्थी बड़े सुचारू रूप से अपनी बात को व्यक्त करते हैं।
भारतीय विद्यार्थियों से कहीं,
अधिक,
आदर,
प्रेम,
और अपनापन है इनमें।

गुरु और शिष्य के जिस रूप का वर्णन उसने भारतीय संहिताओं में पढ़ा था।

भारत में तो कहीं नहीं मिला,

पर यहाँ आकर उसने अनुभव किया कि तर्कों के झंझावात में बिना कारण विद्यार्थी नहीं पड़ते।

सत्य के लिए।

भूमि,

स्थान,

जल,

वायु,

किसी का कोई महत्व ही नहीं।

न विशेष,

न सामान्य,

मनु भी तो विद्यार्थिनी थी न, अतः इस भीड़ के साथ-साथ वह भी चली आई थी।

उसे भी तो रहस्य की खोज करनी थी,

मुस्करा दी मनु।

यूनान पश्चिमी सभ्यता का जन्म स्थान समझा जाता है, सभ्यता किसे कहते हैं, हमें यह जानना बहुत जरूरी है।

पहली पहचान,

जीवन का शासन बुद्धि द्वारा किया जाता है,

दूसरा,

सौन्दर्य की कीमत भली-भाँति समझी जाए।

हम लोग जब भी यूनान का इतिहास पढ़ेंगे या यूनान की बात करेंगे तो हमारी आँखों के सामने सुकरात, प्लेटो और अरस्तु का देश आ जाता है।

सुकरात के लिए कहा जाता है कि वह दर्शन शास्त्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर ले आया और मि० थेलस को तो यूनानी दर्शन के पिता की पदवी दी जाती है।

इसके बाद जो यूनान में दर्शन के फील्ड में नाम उभरे एनैक्सिमैडर एनैकिस-मिनीज, पार्मेनाइडिस जीनोफेनीज, हिरैक्लिटस। हिरैक्लिटस का स्थान यूनानी विचारकों में बहुत ऊँचा है। उसका जन्म एक अमीर परिवार में लघु एशिया में हुआ था। इनके बाद जर्मन दर्शनशास्त्री का प्रादुर्भाव हुआ उसका नाम था एनैक्सगोरस, और हिरैक्लिटस एनैक्सगोरस के साथ ही यूनान के प्रथम दर्शन का युग समाप्त हो गया। यह दर्शन शास्त्री अपने दार्शनिक चिंतन को एथेन्स ले गया और कुछ समय

बाद यही इसके उपरान्त एथेन्स एक दिन यूनान की सांस्कृतिक राजधानी बना। बुद्धि और चेतना का सहारा लेकर उसके विचार अरस्तु और प्लेटो से भी आगे बढ़ गए थे। सत्य तो यह है कि इस चिन्तक के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह अपने समय से बहुत पहले उत्पन्न हुआ था।

उस समय एथेन्स एक नगर राष्ट्र था। नागरिकता के अधिकार एकमात्र स्वतन्त्र पुरुषों को ही प्राप्त थे। स्त्रियाँ और दास इन अधिकारों से वंचित थे। राष्ट्र छोटे थे इसलिए प्रतिनिधित्व की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। सभी बालिग एक स्थान पर मिलकर जो निर्णय लेते थे वह सभी को मान्य होता था।

सुकरात, प्लेटो और जीनोफर तीनों के विचारों में बहुत साम्य है। सुकरात को जब विष दिया गया वह 70 वर्ष के थे।

वास्तविकता तो यह है कि,

सुकरात की मृत्यु उतनी ही शानदार थी, जितना शानदार उसका जीवन।

सुकरात मुख्य रूप से जिज्ञासु था। उसने अपना सारा जीवन सत्य की खोज में लगा दिया।

जिज्ञासा की तुष्टि के लिए लालसा और श्रद्धा पैदा करना उसका मुख्य कार्य था। उसने किसी सम्प्रदाय की नींव नहीं डाली वह तो चाहता था कि हर आदमी स्वयं ईश्वर की खोज करे। वह सदा नीति विषयक चर्चा किया करता था। उसके विचारों में नीति का स्थान प्रमुख था।

सच तो यह है कि सुकरात लक्षण और आगमन दोनों का जन्मदाता है। इसीलिए उसका स्थान चोटी के दार्शनिकों में है और शायद इसीलिए उसके शिष्य प्लेटो ने कहा है कि मनुष्य के क्लेशों का अन्त उन्हीं अवस्थाओं में हो सकता है। जब दार्शनिक शासन करें या शासक दार्शनिक बन जाए।

अरस्तु और प्लेटो—

यह एक निर्विवाद सत्य है कि एथेन्स ने प्लेटो जैसा शिक्षक और अरस्तु जैसा दूसरा शिष्य पैदा नहीं किया।

सुकरात अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक अपने भक्तों और शिष्यों से घिरे रहे। प्लेटो अपने एक शिष्य के यहाँ विवाह की दावत खाने गए थे वहीं उनकी मृत्यु हो गई पर अरस्तु के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उन्होंने विष खाकर आत्महत्या कर ली।

और,

अरस्तु के साथ ही—

एथेन्स का गौरव भी समाप्त हो गया।

सुकरात के उपरान्त एक नया नाम आया एपिक्यूरस।

एपिक्यूरस सेमास एक अध्यापक के घर उत्पन्न हुए थे।

टन-टन की घण्टी की आवाज ने क्लास की शान्ति को भंग कर दिया।

प्रोफेसर साहिब,

जी,

आजकल आपके विद्यार्थी बहुत परेशान और दुःखी हैं।

खाने की टेबिल पर सूप परोसते हुए मनु ने कहा।

क्यों ?

जब हमारी इच्छा पूरी नहीं होती तो हमारा परेशान और दुःखी होना स्वाभाविक नहीं ?

अवश्य, पर ऐसी कौन-सी इच्छा है जिसके लिए आप लोग दुःखी हैं— मुस्कराते हुए प्रोफेसर ने पूछा।

हमारी प्राकृत इच्छाओं का पूरा होना आवश्यक है, जब वह पूरी होती हैं तभी हमारे मन को शान्ति मिलती है।

मान लिया, पर किसी भी प्रकार की स्थिति में विचलित न होना प्रत्येक अवस्था में सन्तुलन बनाए रखना यह भी तो एक विद्यार्थी का गुण है और विशेष कर दर्शन को विद्यार्थी को कि वह स्वयं अपना ऐसा स्वभाव बनाए और दूसरों को ऐसा स्वभाव बनाने में सहायता करे जिसका अपना व्यवहार बुद्धि के अनुकूल और न्याय युक्त हो तभी वह मानसिक ऊहापोह से बच सकता है और जब वह इन ऊहापोहों से बच जाएगा तब दुःख और परेशानी स्वाभाविक रूप से उसके पास आएँगे ही नहीं।

प्रोफेसर ने जिज्ञासा भरी दृष्टि से मनु के चेहरे को पढ़ने का प्रयत्न किया।

मनु जोर से खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

वाह रे दर्शन शास्त्री,

यह आपका क्लासरूम नहीं है,

और न ही आपके सामने आपके विद्यार्थी हैं,

यह प्रो० आलेक्सांद्राविनो का घर है,

और वह अपनी होने वाली पत्नी के सामने हैं, क्यों ?

प्रोफेसर ने मुस्कराते हुए वाक्य पूरा किया।

मनु अब हमें शादी के लिए प्रार्थना पत्र दे ही देना चाहिए ?

दार्शनिकों की दार्शनिकता,

अचानक,

घर की चार दीवारों ने समेट ली।

क्यों ?

जी प्रोफेसर,

नारी सुलभ लज्जा की रेखाओं ने मनु के चेहरे पर अपना आधिपत्य जमा

लिया।

तुम अपने मम्मी-डैडी को पत्र लिख दो।

प्रोफेसर मैं चाहती हूँ कि शादी के बाद ही उन्हें हिन्दुस्तान जाकर सरप्राइज दूं।

लोग विदेशों में हनीमून मनाने आते हैं और तुम हिन्दुस्तान जाना चाहती हो और वह भी इस लाल बन्दर को लेकर,

प्रोफेसर खिलखिलाकर हँस पड़े।

पहली बार मनु ने प्रोफेसर को इस प्रकार मुक्त कण्ठ से हँसते हुए देखा था।

वह तो सोच भी नहीं सकती थी कि प्रोफेसर भी इस प्रकार हँस सकते हैं।

क्यों आश्चर्य हुआ न ?

इस प्रकार हँसते देखकर···प्रो॰ आलेक्सांद्राविनो को,

सच तो यह था। कि आलेक्सांद्राविनो को भी विश्वास नहीं आ रहा था कि वह इतनी जोर से हँस सकते हैं,

हाँ मनु,

लगता है, कि मैं अपनी हँसी भूल गया था। जीवन की सबसे मूल्यवान—,

सच कह रहा हूँ,

मैं क्लीरीना को बहुत प्यार करता था,

जानना चाहोगी मनु !

मैंने मास्को में जन्म लिया और दुर्भाग्य मेरा यह था कि जन्मते ही मैं प्रेम के स्वप्न देखने लगा था, जैसे-जैसे में बड़ा होता गया जीवन की वास्तविकताओं से जान-बूझकर अनभिज्ञ बनता रहा और कल्पनाओं को ही जीवन का सत्य मानने लगा। जब आँख खुली तो बहुत गहरी खाई में स्वयं को पाया। दर्शन शास्त्र का प्रोफेसर जो जीवन दर्शन पढ़ाता है कोई उससे पूछे कि वह जीवन दर्शन की सच्चाई से कितना अपरिचित है।

मनु मेरा जन्म दुशांबे में हुआ था, एक लाख की आबादी काली बस्ती में मैंने अपने प्रारम्भिक जीवन की आँख खोली और थोड़े वर्षों के उपरान्त में कजाखस्तान आ गया, क्यों और कैसे आया इसका उत्तर तो मैं स्वयं भी नहीं ढूंढ़ पाया।

वहाँ पहली बार विश्वविद्यालयों की एक कान्फ्रेंस में मुझे एक पेपर पढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया, विषय था, "अन्तरजातीय सम्बन्धों की संस्कृतियों में मानवीय जीवन दर्शन" और बस उसी दिन से मैं चिन्तक बना दिया गया।

मैं सफल वैज्ञानिक बनना चाहता था,

जिन्दगी बिलियर्ड की मेज की भाँति चिकनी और सपाट नहीं है।

कैसे और क्यों, इस समझौते में क्लीरीना पता नहीं कहाँ खो गई।

शायद,

यह अप्रत्याशित परिवर्तन शायद अनिवार्य हो गया,

सच बताऊँ, मुझे इस परिवर्तन ने वह सब कुछ दिया जो एक व्यक्ति को पाने की महत्वाकाँक्षा रहती है।

चिन्तक के रूप में एक प्रोजेक्ट में भारत जाने का मौका मिला तीन वर्ष वहाँ रहा, और जब लौटा तो भारतीय दर्शन के फीदर्स लगे थे मेरे कैप में।

फिर तो मैं डूबता ही गया भारतीय दर्शन मेरे जीवन का आवश्यक अंग हो गया।

सुखी तो मैं था ही, इसके उपरान्त व्यक्तिगत जीवन ने पुन: एक बार सुखद करवट ली।

वह क्षण था,
वालेन्तीना से मुलाकात,
वह पेशे से चिकित्सक थी और एक स्वास्थ्य केन्द्र की इन्चार्ज।
शायद तुमने पढ़ा होगा हमारे यहाँ कहते हैं कि—
ऐसे व्यक्ति का जीवन कभी व्यर्थ नहीं जाता,
जिसने,
एक बच्चे का पालन-पोषण किया हो,
एक मकान बनवाया हो,
और,
एक पेड़ लगाया हो,
वालेन्तीना एक अद्भुत स्त्री थी।
दूसरों के सुख-दुखों का एक आवश्यक अंग थी वह,
प्रोफेसर एक क्षण को डूब गए—
या कहीं दूर शून्य में कुछ निहारने लगे।
हाँ मनु !

जानती हो हमारी शादी में एकदम सन्नाटा था। हमारी परम्पराओं के अनुसार वैवाहिक पार्टियों में खूब खुशियाँ मनाते हैं पर उस दिन सब कुछ शान्त था।

मुझे बहुत खराब लग रहा था,
पर मजबूर था,

वालेन्तीना चाहती थी कि जरा-सा भी शोर नहीं मचे क्योंकि उसकी कोई बहुत प्यारी मित्र नहीं रही थी।

जीवन पानी का बुलबुला है। हम सबको एक दिन मरना है, पर उसके लिए आज का क्षण क्यों खराब कर दें, बहुत समझाया उसे पर वह किसी तरह तैयार ही नहीं हुई और हमारी शादी अत्यन्त साधारण ढंग से हो गई।

शायद मैं ज्यादा जोर डालता तो वह शादी से ही इनकार कर देती।

और अपनी इस सुन्दर पत्नी को पत्नी बनाने से पूर्व ही मैं खोना नहीं चाहता था।

सच मनु !

सच मनु वालेन्तीना प्रेम की प्रतिमा थी।

उसके प्रेम में आत्मा को स्पर्श करने की ताकत थी उसका जीवन प्रगतिशील नहीं गतिशील था। कभी-कभी लगता था कि वह गलती से हमारे देश में पैदा हो गई।

सच कहूँ मनु,

तुम्हें पाकर वालेन्तीना की छवि धूमिल पड़ने लगी।

वह दिन कितना कष्टदायी था,

मेरे बच्चे को जन्म देकर वह मुझे अकेला छोड़ गई, दुर्भाग्य देखो मनु मैं वालेन्तीना की शक्ल उस नन्हीं जान में पहचान भी पाया था कि वह भी मुझे छोड़कर चली गई। डॉ० ने कहा कि उसे निमोनिया हो गया था।

माँ और बेटी,

दोनों चली गईं,

और,

मैं रह गया अकेला।

नितान्त अकेला,

आज 15 वर्ष से भी अधिक हो गए।

मनु !

अभी भी कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह आएगी दौड़ती हुई और मेरे गले में बाँह डालकर कहेगी "दर्शन शास्त्री, ए पैनी फार यो थोट।"

प्रेम का अर्थ ही मैंने उससे सीखा,

जीवन दर्शन पढ़ने के उपरान्त भी जीवन के दर्शन का सही अर्थ उसी ने मुझे पढ़ाया।

मनु ने अनुभव किया कि प्रोफेसर का गला भारी हो गया है।

मुस्कराते हुए मनु ने कहा, प्रोफेसर आपके बगीचे के ढेरों यह मुस्कराते फूल वालेन्तीना की मुस्कराहटें ही तो हैं और उनकी मुस्कराहटों से पोषण पाता हुआ सबसे सुन्दर फूल हैं आलेक्सांद्राविनो।

क्या आप चाहते हैं कि यह मुस्कराहट कम हो जाए ? प्रोफेसर खोना और पाना यह तो नियति का चक्र है आप ही तो कहते हैं कि जो क्षण हमारे पास है उसकी मुस्कराहट सबसे मूल्यवान है। उसको संभाले रहना ही जीवन की कर्मठता है।

आप लापरवाही कर रहे हैं,

प्रोफेसर की आँखें उठीं, मानो पूछ रही हों मैं लापरवाही कर रहा हूँ, और

मनु के चेहरे पर चिपक गईं ।

उनकी याद एक मुस्कराहट है, दुःख का नगमा नहीं।

मनु !

प्रोफेसर ने मनु को अपनी बाँहों में भर लिया।

मनु, मैं और वालेन्तीना भारत में काशी विश्वनाथ के दर्शन करने वाराणसी गए थे उस दिन वालेन्तीना बिल्कुल ऐसी ही लग रही थी जैसी तुम उस दिन लग रही थी,

जब पहले दिन आपसे मिलने आई थी।

बुरा नहीं मानना मनु,

तुम्हें देखते ही मैंने सोच लिया था इस वालेन्तीना को पाना ही आलेक्सांद्राविनो अब तुम्हारे जीवन का लक्ष्य है

प्रकृति की बनाई हुई अनुपम कृति हो तुम।

जानते हैं प्रोफेसर।

हमारे यहाँ के कवि कालीदास ने स्त्री को प्रकृति के रूप में जी भर के शृंगारा है, वह प्रकृति और स्त्री सौन्दर्य का पुजारी है जिसकी तुलना में आज तक कोई विद्वान खड़ा नहीं हो सका। उसका विश्वास है कि बिखरी हुई प्रकृति उसकी प्रियतमा का आलिंग्न है। उसकी हरीतिमा उसकी मुस्कराहट है।

उसने ऋषि-मुनियों की प्रशंसा की है किन्तु नैराश्य और उदासीन वृत्ति का कभी समर्थन नहीं किया।

प्रो० कालीदास दर्शन शास्त्री नहीं लेकिन जिस सुन्दरता की उसने कल्पना करी, उसे मात्र शब्द ही नहीं दिए साक्षात् दर्शन करा दिए। कोई भी आदमी पूर्णता को नहीं पहुँच सकता जब तक वह अमानुषी जीवन के गौरव और मूल्य को नहीं समझता जीवन के सभी रूपों के प्रति हमारे अन्दर सहानुभूति उत्पन्न होना ही चाहिए और यही सहानुभूति शक्ति और सामर्थ्य बनती है सत्य को आत्मसात करने में सहायक होती है। जीवन की प्रेम रूपी सच्चाई को समझकर ही आप इस शिखर पर आज पहुँच सके, प्रेम करने वाले इतने संकुचित नहीं होते प्रो० आलेक्सांद्राविनो हम भारतीयों को तो सिखाया ही यही गया है, दीपक अनेक हैं पर प्रकाश में कहीं कोई अन्तर नहीं।

मनु !

प्रो० प्रेम तो बहुत विशद है। विवाह का प्रयोजन आध्यात्मिक सहचार है इसीलिए हमारे ग्रन्थों में कहा गया है कि "मेरा हृदय तुम्हारा और तुम्हारा हृदय मेरा रहे।"

प्रोफेसर चिन्तक गम्भीर होता है।

उदासीन नहीं।

मनु !

प्रोफेसर हमारे दर्शन और धर्म में पुरुष केवल ईश्वर के लिए है और नारी पुरुष रूपी ईश्वर के लिए।

मनु,

मानता हूँ तुम्हारे देश में एक ग्रन्थ में पढ़ा था जिसकी रचयिता तुम थीं—

मैं नहीं मेरे हम नाम।

प्रोफेसर मुस्करा दिए,

क्या नारी इतनी छोटी या तुच्छ हो सकती है ? कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि महर्षि मनु को किसी नारी ने बहुत गहरी चोट पहुँचाई होगी। उसी का परिणाम उनके यह शब्द, उनकी नारी के प्रति ऐसी धारणा—

मनु सच तो यही है—एक आचार्य का महत्व दस उपाध्यायों से बढ़कर है, एक पिता का महत्व दो सौ आचार्यों से बढ़कर है फिर एक माता का महत्व कम कैसे हो सकता है, जो जननि है। स्त्री—वेद न्याय कहीं पर भी स्त्री को हीन नहीं माना गया है, वेदों की स्त्रियाँ तो पुरुषों से भी आगे।

कहाँ की चर्चा,

कहाँ पहुँच गई,

और,

खाने की टेबिल को उबासी आने लगी, सब कुछ ठण्डा हो गया।

मनु सोते से चौंक गई,

उस दिन,

उस क्षण,

उस वर्ष,

क्या कभी भी पल-भर के लिए मनु ने कल्पना की थी कि इतना भावुक !

संवेदनशील !

हो जाने वाला,

यह,

विख्यात,

दर्शन शास्त्री,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो,

कितने,

अगणित !

मुखौटे लगाकर उसके सामने जी रहा है।

काश !

कि,
सच्चाई को अपने उस जीवन का एक पल दे सकती ?

हमें अपने ज्ञान को अनिवार्य और निश्चित नहीं मानना चाहिए, लाट्जा ने कहा है कि ईश्वर के अस्तित्व के लिए जितनी युक्तियाँ दी जाती हैं वह तो ईश्वर सम्वन्धी पूर्व से वर्तमान में हमारे विश्वास के समर्थन के लिए मिथ्या युक्ति मात्र है, वास्तव में तो ईश्वर का ज्ञान साक्षात अनुभवों के द्वारा ही होता है।

जिन्हें ईश्त्रर का या अन्य आलौकिक सत्ता का साक्षात अनुभव नहीं रहता है, उस अवस्था में उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम ऋषियों-महात्माओं के वचनों और उनके अनुभवों पर निर्भर रहते हैं, जिस प्रकार वैज्ञानिक एवं उनके विज्ञान ही प्रमाण हैं उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध में जानने के लिए उसका सामीप्य प्राप्त करने के लिए श्रुति हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि ईश्वर ने ही वेदों को व्यक्त किया है, वेद ईश्वर का प्रमाण हैं। आस्तिक की दृष्टि से अगर हम विचार करें तो यह समझ पायेंगे की ईश्वर ही प्रथम हैं उसने ही वेदों को व्यक्त किया है।

भारतीय दर्शन के विरुद्ध एक आक्षेप है। कि वह आप्त वचनों पर अवलम्वित है इसलिए युक्ति प्रधान नहीं है किन्तु जब हम न्याय दर्शन का अध्ययन करते हैं तो इस आक्षेप का पूर्ण निराकरण हो जाता है।

न्याय सम्पूर्ण विश्व के अन्तंगत एक ही परम सत्ता का अस्तित्व नहीं मानता और इस प्रकार भारतीय अद्वैतवाद को प्रश्रय भी नहीं देता। न्याय यह मानता है कि युक्तआत्मा चेतनाहीन होती है और इसीलिए जड़ द्रव्यों से इसको प्रथक करना कठिन है।

इसी के साथ न्याय यह भी स्वीकार करता है कि ईश्वर के साथ इस संसार का वही सम्बन्ध है जो शरीर का आत्मा के साथ, अत: हमारे जीवन के लिए न्याय का आस्तिकवाद अत्यन्त आवश्यक है। इस दर्शन को वैशेपिक दर्शन कहा जाता है और इसके जन्मदाता हैं महर्षि कानन्द।

सर,

यस कोजीगन,

अगर ईश्वर संसार का कर्त्ता है तो उसको अवश्य ही शरीर होना चाहिए, क्योंकि कर्म तो जब ही सम्भव होता है। जब शरीर हो।

कोजीगन भारतीय श्रुतियों में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध कर दिया है। यदि उसका अस्तित्व सिद्ध नहीं हुआ होता तो कर्म के प्रति आक्षेप एकदम निरर्थक होते।

सर कल आप टामस—

जी हाँ,

तीसरा विद्यार्थी बीच में ही बोला,

टामस, एक्विनस—सर कहते हैं एक्विनस सेनानी बनते-बनते दार्शनिक बन गया।

एक नहीं ऐसे कई होते हैं। कहते हुए प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो मुस्करा दिए। उनकी इस मुस्कराहट का रहस्य एकमात्र मनु ही समझ पाई,

प्रोफेसर भी तो वैज्ञानिक बनना चाहते थे !

हालांकि उनकी मुस्कराहटों की खोज अभी तक उनके विद्यार्थी नहीं कर पाए थे।

कहते हैं कि,

पाँव के नीचे का पानी ही अकसर लोगों को दिखाई नहीं देता, प्रोफेसर की मुस्कराहट पैरों के नीचे पानी आने वाली ही तो है, मनु, उनकी अपनी सहपाठिन —फिर भी अनभिज्ञ। फिर भी उनके विद्यार्थी प्रसन्न थे उनका लक्ष्य देवता जो अत्यधिक गम्भीर था।

अब मुस्कराने लगा था,

अब वह बात कर सकेंगे,

उनकी श्रद्धा मन के तहखानों में बन्द नहीं रहेगी, अब उसे अभिव्यक्ति मिलेगी।

और मनु, मनु तो बहुत प्रसन्न थी,

वह देखती और सोचती,

कहाँ है अन्तर,

विद्यार्थी, विद्यार्थी ही है कहाँ है अन्तर,

चाहे वह किसी देश का हो।

उसे चार्वक का एक श्लोक याद आ गया—,

"यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वां घृतं पिबेत्
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमने कुतः ॥"

खाओ पिओ और मोज उड़ाओ, विद्यार्थी भी तो यही सोचता है कि उसे तो बस घी खाना है।

वह तो इन देशों के सम्बन्ध में यही सोचती थी कि इनके पास मन नहीं मात्र बुद्धि होती है।

पर वास्तव में यह सत्य नहीं है,

इरीना उसकी मित्र है।

प्रोफेसर केलिओपा,
नन्हीं तात्या,
प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो,
और अब देखे उसने प्रोफेसर के शिष्य
मन और मानवीय मूल्य—दोनों में कहीं असमानता नहीं होती।

जो अन्तराल आता है वह परिस्थिति, जलवायु और वातावरण का किसी भी देश और समाज की उन्नति तभी हो सकती है जब उस समाज में रहने वाला मनुष्य संयम और संस्कार सीखे। वह अपने जीवन को समाज के लिए अनुकूल बनाए।

'लोकिको मार्गोऽनुसर्तव्य' अर्थात् दूसरों को समझना ही मनुष्य की श्रेष्ठता की कुंजी है।

मनु का जी चाहा अपने आप अकेले-अकेले खूब जोरों से खिलखिलाकर हँस ले।

ये विद्यार्थी भी तो व्याकुल हैं यह जानने के लिए की उनके प्रोफेसर इतने प्रसन्न क्यों ?

मनु जी,
प्रोफेसर की सेक्रेटरी येपाचिना सामने खड़ी थी।
गुड मार्निङ्ग
गुड मार्निङ्ग
ओह, बैठिए,
कैसी हैं आप ?
एकदम अच्छी,
आप कैसी हैं ?
क्या बात है आज कल आप रोज नहीं आतीं ?

येपाचिना मुस्करा दी अपने शब्दों को अत्यन्त मृदु बनाते हुए कहा, पुष्पों के इस नीड़ को एक अच्छे मित्र की आवश्यकता थी अब आप इसे सँभालने के लिए आ गईं तो मैं अपने उत्तरदायित्वों से मुक्त हो गई। सोचा थोड़ा सा मैं भी पढ़-लिख लूं। आप लोगों के सम्पर्क में आकर भी अगर मैं मूर्ख रह गई तो मुझसे अधिक वाक्य वाणों के प्रहारों से आप पीड़ित होंगी।

ज्ञानी का या विद्वान का चौकीदार ज्ञानी या विद्वान न हो सभ्य तो होना ही चाहिए।

क्यों ? कहते हुए येपाचिना मुस्करा दी।
उसकी आँखों में शरारत थी,
प्यार था,

और थे उल्लास के सभी रंग।

मनु इतना ही कह पाई,

आप बहुत प्यारी हैं।

धन्यवाद,

कहिए आज दर्शन कैसे दिए ?

ऐसा बोलकर आप हमें शर्मिन्दा मत कीजिए।

खिलखिलाकर हँस दी येपाचिना।

मनु जी भारतीयों के पास प्रेम का झरना होता है पर आपके पास तो सागर है।

सच !

मनु मुस्करा दी।

फ्रांस में 17, 18 नवम्बर को एक सेमिनार हो रहा है,

प्रोफेसर साहिब की इच्छा है ?

इच्छा नहीं उनके पास तो उनके पेपर का विषय भी आ गया "Philosophical theory of salf". 20 अक्टूबर से पहले उनके पास यह पेपर पहुँच जाना चाहिए, बैठो एक कप चाय पिओ। प्रोफेसर अभी आते ही होंगे, विश्व के सभी दर्शन शास्त्री इसमें भाग ले रहे हैं, प्रोफेसर साहिब को जो आमंत्रण मिला है, मैं क्या आप तो जानती ही होंगी क्योंकि मास्को विश्वविद्यालय आज खुशी से पागल है।

हाँ येपाचिना, वास्तव में इस सेमिनार की अध्यक्षता—उनके लिए ही नहीं सबके लिए बहुत गौरव की बात है।

अवश्य !

प्रोफेसर की तुलना करना सम्भव नहीं। मनु जी अब शीघ्रातिशीघ्र शादी कर लीजिए तो कम-से-कम हमें एक शानदार दावत तो मिलेगी। और इसके साथ बहुत से लोगों का बोझ हल्का हो जाएगा। आप शायद कल्पना नहीं कर सकतीं कि प्रोफेसर अपने इस अकेलेपन से शायद इतने चिन्तित न हों जितने दुखी उनके मित्र हैं।

मनु लजा गई।

आज से मैं आपको दीदी कहूँगी, आपके देश में बड़ी बहन को दीदी ही कहा जाता है।

जरूर !

तो दीदी झटपट हो जाए।

हाँ येपाचिना,

आजकल प्रोफेसर भी बहुत जल्दी कर रहे हैं। मनु बड़ी कठिनाई से अपना

वाक्य पूरा कर पाई । हालांकि शादी के लिए कम-से-कम उसके दो मित्र तो जबरदस्ती कर ही रहे हैं ।

एक येपाचिना । और दूसरी गुलाबी तात्या ।

प्रोफेसर की आवाज ने दोनों की तन्द्रा भंग कर दी ।

अपने स्थान से उठते हुए मनु ने पूछा ।

हाँ मनु जरा मेरे साथ आकर देखो तो वाहर कौन वैठा है ?

प्रोफेसर मनु का हाथ पकड़कते हुए वाहर ले आए ।

बाहर आकर देखा तो देखती ही रह गई,

जो आदमी सामने खड़ा था उसने साधारण ढंग का धोती कुर्ता पहन रखा था । इस भारतीय युवक का अभिवादन करते हुए पता नहीं क्यों मनु के हाथ काँप गये ।

मनु यह प्रोफेसर अनाश हैं, पिछले सप्ताह ही विजिटिंग प्रोफेसर होकर दो माह के लिए यहाँ आए हैं ।

आज आपने सीनेट में जो व्याख्यान दिया सच मनु मैं तो मंत्रमुग्ध हो गया ।

मेरा मस्तक झुक गया इनके आगे ।

प्रोफेसर अनाश जो अभी तक चुपचाप खड़े थे बोले हम प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो की मित्रता चाहते हैं झुका हुआ मस्तक नहीं । प्रोफेसर आपकी मित्रता पाना गौरव की वस्तु है ।

यह मनु है, मेरी होने वाली पत्नी, दर्शन की विद्यार्थी ।

नमस्ते, प्रोफेसर अनाश ने मुस्कराते हुए अभिवादन किया ।

मनु प्रोफेसर अनाश ने आज वेद का बहुत अच्छा अर्थ समझाया विश्वविद्यालय में,

जानती हो,

मनु की दृष्टि दोनों के चेहरों पर फिसलने लगी ।

आपने बताया,

समस्त संसार मुक्ति के रागात्मक ध्यान से और त्यागात्मक कृति से चिन्तरस्थैर्य का अनुलक्ष्य है—वहाँ के हरित वन की विभोरता यदि ऊष्णकाल में सूख जाए और उसे कोई चर जाए तब भी उन्हें रस पूरित विगुहा मति चुम्बिनी कादम्बिनी के अभिसार से अनुस्यूत रस झंकृत होना ही वेद है, वेद का ज्ञान कोष है ।

मनु दर्शन शास्त्र की नीति तक आपका अध्ययन है,

मनु सहज रूप से मुस्करा दी और बोली, "प्रो० अनाश वस्तुओं की अभिव्यक्ति को भी तो ज्ञान कहते हैं ।"

जी हाँ,

हम प्रत्यक्ष, ज्ञान को साधारणतय यथार्थ समझ लेते हैं, अतः प्रत्यक्ष की प्रमाणिकता के विषय में छानबीन करना हास्यास्पद नहीं तो कम-से-कम अनावश्यक तो जरूर समझा जाता है जब कि भारतीय दार्शनिक इस सम्बन्ध में अधिक अन्वेषी हैं। भारतीयों ने प्रत्यक्ष सम्बन्धी समस्याओं का अनुसंधान किया है और पाश्चात्य दार्शनिकों ने अनुमान सम्बन्धी समस्याओं का।

भारतीय दर्शन की दृष्टि बहुत व्यापक है।

और फिर जैसा की आपने कहा कि अभिव्यक्ति तो स्वयं एक दर्शन है। अभिव्यक्ति के कारण उसमें प्रगाढ़ता है और इस प्रगाढ़ता के कारण भारतीय दर्शन का ज्ञान बड़ी सुगमता से, पाश्चात्य दर्शन की जटिल-से-जटिल समस्याओं का समाधान कर देता है।

लेकिन,

प्रोफेसर साहब दर्शन और वेद में तो विभिन्नता है,

हाँ मनु जी,

वेद भारत का आदि साहित्य है और युक्तिपूर्वक तत्व ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही दर्शन कहते हैं।

अर्थात्।

भारतीय दर्शन के अनुसार हमें तत्व का साक्षात्कार हो सकता है। तो भारतीय दर्शन को हिन्दू धर्म की संज्ञा दी जाए !

नहीं मनु जी, भारतीय दर्शन का अर्थ कदापि हिन्दू दर्शन नहीं हो सकता।

प्रोफेसर साहिब,

वेद के बाद की जो विचारधारा चली वह वेद से बहुत अधिक प्रभावित हुई ऐसा हमें मानकर चलना चाहिए,

जी हाँ,

भारतीय दर्शन पर इस विचार धारा का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। कारण कि इस विचारधारा में एक का सम्बन्ध कर्म से था और दूसरे का ज्ञान से।

प्रोफेसर एक बात बताइये,

जी,

भारतीय दर्शन की उत्पत्ति तो आप्त वचनों से हुई है, अतः भारतीय दर्शन युक्ति से प्रतिपादित नहीं अपितु युक्तिहीन है।

अरे मनु मुझे पता होता कि घर पर तुम वेद और दर्शन की क्लास प्रारम्भ कर दोगी तो मैं प्रोफेसर अनाश को कभी घर नहीं लाता।

वेद और दर्शन के आगे एक और भी बड़ा सत्य है और वह है जीवन। जानती हो जीवन अब भूख सहन नहीं कर रहा।

तीनों ही इस वाक्य की समाप्ति पर खिल-खिलाकर हँस पड़े।

रात को लेटे-लेटे प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो ने मनु से पूछा,

कैसे लगे प्रोफेसर अनाश ?

मनु लाइट का स्विच बन्द करते हुए बोली अब तक उनके ही सम्बन्ध में सोच रही थी।

विजिटिंग प्रोफेसर बनकर आए हैं दो माह के लिए। लेकिन वह रुकना नहीं चाहते शायद अगले सप्ताह चले जाएंगे।

क्यों ?

कह रहे थे उनकी बहन बहुत गम्भीर है। वह तो आना ही नहीं चाहते थे जबरदस्ती उन्हें भेजा गया है।

वह सब खर्चा भारत सरकार को वापस करने के लिए तैयार हैं।

तो फिर आये ही काहे को ?

आपका पेपर तैयार हो गया ?

कल मैंने थोड़ा सा पढ़ा था, आपने लिखा है कि दर्शन अमूर्तों की एक अपनी छोटी योजना के लिए हुए विज्ञानों में एक विज्ञान है।

हाँ !

प्रोफेसर।

जीव विज्ञानवेत्ता यह समझता है कि जगत जैवकीय नियमों पर चलता है। जबकि दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक नियमों को बहुत महत्त्व देते हैं। केवल दार्शनिक ही विभिन्न विज्ञानों के निष्कर्ष के समन्वय से एक पूर्ण विश्वास और जगत का व्यवस्थित चित्र उत्पन्न कर सकता है। इसलिए दर्शन के सम्बन्ध में विद्वानों की परिभाषाओं में भी अन्तर आ जाता है।

लेकिन,

प्रोफेसर दार्शनिक का मस्तिस्क चाहे कितने ही ऊँचे गगन में विहार करता रहे परन्तु उसके पैर सदैव ठोस धरती पर टिके होने चाहिएं क्योंकि वास्तव में तो मनुष्य धरती का ही पुत्र है।

इसीलिए तो हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा है कि दर्शन प्रत्येक वस्तु से सम्बन्धित है वह एक सार्वभौम विज्ञान है।

प्रोफेसर आपकी व्यक्तिगत परिभाषा क्या है ?

प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो के होठों पर मधुर स्मित की रेखाएं खिंच गयीं।

मनु तार्किक दृष्टि से जाति उपजाति बताकर दर्शन की व्याख्या करना असम्भव है, दर्शन का अर्थ जानने के लिए उसकी विविध प्रक्रियाएं समस्याएं, दृष्टि-कोण एवं निष्कर्षों का विवेचन करना पड़ता है। इसी के द्वारा विज्ञान और दर्शन का अन्तर स्पष्ट होता है। पश्चिम में यूनानी दर्शन आश्चर्य से प्रारम्भ हुआ, परन्तु आज हमारे यहाँ का आधुनिक दर्शन सन्देह पर आधारित है।

प्रोफेसर ।

भारतीय दर्शन हो या पाश्चात्य दर्शन—अध्ययन और जिज्ञासा तो दोनों की एक ही हैं,

ज्ञान क्या है ?

जगत क्या है ?

इसे कब और किसने बनाया ?

ईश्वर है या नहीं ?

मैं कौन हूँ ?

मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है ?

जगत का लक्ष्य क्या है ?

मनु तुम तो स्वयं दर्शन शास्त्री की पंक्ति में खड़ी हो गई हो चलो तुम भी मेरे साथ चलो ।

नहीं, इस बार आप जाइये ।

अरे मन प्रसन्न हो जाएगा, एक से एक दिग्गज वहाँ पर एकत्रित होंगे ।

सब दिग्गजों का दिग्गज मेरे पास है ।

मनु नहीं मुस्कराई पर उसकी आँखें मुस्करा दीं ।

दर्शन का विषय शायद मनुष्य का अर्थ पहले समझ गया इसलिए उसकी चर्चा ने गौण रूप का अस्तित्व स्वीकार कर लिया ।

प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो को एअर पोर्ट ले जाने के लिए विश्वविद्यालय की गाड़ी बाहर खड़ी थी ।

मनु को अपनी बाँहों में भरते हुए प्रोफेसर के होंठ मनु के अधरों में खोने का प्रयत्न करने लगे ।

मनु का स्वामीत्व मुस्करा रहा था ।

दर्शन की क्रिया ही दर्शन है ।

नमस्कार,

मनु ने चौंक कर पीछे देखा,

प्रोफेसर अनाश खड़े थे ।

आइये प्रोफेसर बहुत अच्छे समय पर आए ।

दुष्टता देखिए बिना बुलाए अतिथी की भाँति प्रातः ही आपको कष्ट देने आ पहुँचा ।

लगता है कि आप जाने की तैयारी में हैं ।

हाँ ।

कष्ट नहीं प्रोफेसर जाते समय एक कप चाय आपके साथ पीने का मजा ही कुछ और है ।

मैं भी नमस्कार करने नहीं आया हूँ चाय पीने ही आया हूँ।

वैलकम प्रोफेसर आपके आने से मेरा भी लाभ हुआ नहीं तो यह भारतीय नारी मुझे चाय नहीं देती।

दोनों मुस्करा दिए।

प्लीज जरा जल्दी बहुत कम समय है,

जब मनु चाय की ट्रे लेकर बाहर आई तो प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो कह रहे थे,

वास्तव में प्रोफेसर दार्शनिक का लक्ष्य तो दार्शनिक चिन्तन बनाए रखना है।

शायद इसी सत्य को शाश्वत मानते हुए यूनानी दार्शनिक सुकरात ने कहा था कि सच्चे दार्शनिक तो वह हैं जो कि सत्य की झाँकी के प्रेमी हैं, दर्शन प्रश्नों को उठाता है और उनके उत्तर देता है,

बीच में चाय बनाते हुए मनु बोली,

सच तो यही है न कि दार्शनिक लक्ष्य पूरी तरह से कभी प्राप्त नहीं कर पाते और न ही उनकी जिज्ञासा ही कभी पूरी तरह शान्त होती।

इसका एक विशेष कारण है मनु जी,

अगर जिज्ञासा शान्त हो जाए तो मानव के चिन्तन की प्रगति ही रुक जाएगी। और वैसे भी मनुष्य विचारहीन जीवन नहीं जी सकता। मनुष्य को अनेकानेक समस्याओं के विषय में सदैव चिन्तन करना पड़ता है, आश्चर्य यह है कि अधिकतर लोग चिन्तन के नियमों से और उनकी विधियों से परीचित नहीं होते लेकिन चिन्तन अवश्य करते हैं। व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक या राजनैतिक सभी में चिन्तन का अपना एक विशेष स्थान है और इसीलिए दर्शन का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है,

अच्छा लिजिए,

कप बढ़ाते हुए मनु ने कहा,

नहीं तो चाय एकदम ठंडी हो जाएगी।

फिर प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो की ओर देखते हुए बोली, "आपका प्लेन उड़ जाएगा, और प्रोफेसर अनाश का गर्म चाय पीने के लिए यहाँ तक आने का परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा।"

चाय के घूँट जल्दी-जल्दी भरते हुए प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो ने कहा अच्छा अब मैं चलता हूँ नहीं तो प्लेन बिना मुझे लिए उड़ जाएगा।

आप बैठिए मैं अभी आई। नहीं अब मुझे भी आज्ञा दीजिए।

मनु बड़ी देर तक उड़ती हुई धूल को देखती रही।

उसे क्या पता था,

कि,
एक दिन,
उसके जीवन की धूल भी इसी प्रकार उड़ेगी।
काश,
की वह समझ पाती,
गाड़ी की धूल नहीं,
यह तो उसके जीवन की धूल उड़ रही है।

प्रोफेसर अनाश !
नमस्ते,
क्या पढ़ रही हैं ?
डिवी,

वाह मैं भी कल रात डिवी ही पढ़ रहा था, क्या लिखता है "The philosophy marks a change of culture. Informing patterns to be conformed to in future thought and transforming in its role in the history of Civilization."

दर्शन संस्कृति में एक परिवर्तन का परिचायक है। भावी विचार और क्रिया में परिणत होने वाले प्रतिमान बनाते हुए वह सभ्यता के इतिहास में परिवर्तन की अभिवृद्धि का कार्य करता है। प्रोफेसर बाम ने तो इसको और भी स्पष्ट कर दिया है उनकी तो मान्यता है कि दर्शन के बिना कोई भी सभ्यता नहीं होती और सभ्यताएं एक दूसरे से रोमांचवादी, बुद्धिवादी, प्रशान्त, आक्रामक रहस्यवादी, अथवा स्थूलवादी रूप में बहुत कुछ दार्शनिक अन्तर के कारण भिन्न होती हैं।

यह बहुत बड़ा सत्य है मनु जी जिस राष्ट्र में दार्शनिक प्रगति नहीं दिखलाई पड़ती वहां की संस्कृति को मृतप्राय: समझा जाना चाहिए। व्लैशार्ड ने कहा है कि दर्शन समुदाय की बौद्धिक अन्तर्चेतना बनाए रखता है।

प्रोफेसर अनाश,

यूनान में जब सुकरात को उसके तथाकथित अपराध के लिए विषपान कराया गया तो उसका मूल कारण अन्य लोगों की सुकरात के प्रति शत्रुता नहीं बल्कि तात्कालीन समुदाय का दर्शन था। इसी कारण विभिन्न युगों में विभिन्न समुदायों के प्रचलित दर्शन को चुनौती देने के कारण ईसा, ब्रूनो, स्पिनोजा जैसे कितने ही मनीषियों को प्राण देने पड़े।

आपकी चाय तो एकदम ठंडी हो गई।

अरे यह तो तीसरा कप था,

अन्तिम सिप लेकर प्रोफेसर अनाश उठ कर खड़े हो गये,

अच्छा—अभिवादन करते हुए बोले,

अब इजाजत चाहूँगा।

कल सवेरे चाय पीने नहीं आइएगा?

मनु ने पूछा।

प्रोफेसर अनाश मुस्करा दिए। इच्छा तो अवश्य होती है मनु जी, आप यह तो जानती ही होगी की भारतीय कितने आलसी होते हैं। शरीर को तनिक भी कष्ट देना उन्हें रुचिकर नहीं लगता और जोर से हँस दिए प्रोफेसर अनाश।

प्रोफेसर के जाते ही मनु ने अपने दोनों पैर आराम कुर्सी पर फैला दिए, आँखें बन्द करके बहुत देर तक पता नहीं वह कहाँ उड़ती रही—,

किसी भी व्यक्ति के विषय में सबसे अधिक व्यावाहारिक और महत्त्वपूर्ण बात जगत के प्रति उसका दृष्टिकोण है, उसका अपना दर्शन है।

चैस्टर्न ने छोटे से शब्दों में कितना बड़ा सत्य कह दिया है

वह अपनी रेखाओं को पढ़ रही थी,

कि,

एक बहुत सुन्दर सी चिड़िया सामने डैफोडिलस पर आकर बैठ गई। ढेर सारे रंगों का परिधान पहने उस नन्हीं गौरेया के प्रति न चाहते हुए भी मनु का ध्यान आकर्षित हो गया। उसने देखा उस गौरेया के साथ एक और नन्हीं सी गौरेया है जिसने शायद अभी-अभी उड़ना सीखा है। वह अपलक उनको देखती रही।

अनायास उसे माँ की याद आ गई, कितने दिन हो गए माँ का कोई पत्र मिला ही नहीं। उसने भी तो कोई पत्र नहीं लिखा,

यहाँ आकर तो वह अपनी दुनिया ही भूल गई है।

प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो!

और,

कुछ नहीं।

प्रोफेसर 15 दिन बाद आएंगे उसको छोड़ कर पहली बार प्रोफेसर इतने दिन के लिए बाहर गए थे। वह तो अपने साथ चलने का इसरार कर रहे थे वही नहीं गई।

आखीर,

शादी की तैयारी भी तो उसे खुद करनी हैं।

अकेले,

प्रोफेसर के आते ही वह परिणय के पवित्र बन्धनों में बंध जाएगी,

जिसके लिए वह चिन्तित थी।

क्यों न आज वह माँ को पत्र लिखे?

कलम कागज लेकर बहुत देर तक बैठी रही पर कागज पर चलने की कलम ने इजाजत ही नहीं दी।

फोन पर बात करती है,

माँ की आवाज सुने कितने महीने व्यतीत हो गये।

फोन लगाया,

पर दोनों में से कोई नहीं मिला। पता चला की इलाहाबाद गए हुए हैं 15 दिन वाद लौटेंगे।

पता नहीं,

कब दुपहर व्यतीत हो गई,

शाम ढल आई,

उसे कुछ पता ही नहीं लगा,

उसकी तन्द्रा तब टूटी जब तात्या ने आकर उससे सोने की जिद करी।

जब वह तात्या को लेकर शयन कक्ष में आई—

सब कुछ वैसा ही तो था, पर पता नहीं उसका मन क्यों नहीं लग रहा।

तात्या के सो जाने के उपरान्त वह पलंग से उठकर प्रोफेसर के विद्याध्यन कक्ष में आ गई।

वहुत देर तक पुस्तकों को उलटती पलटती रही।

मनु का मन वहाँ भी नहीं लगा।

आज ही प्रोफेसर गए हैं।

वह तो अकसर वाहर जाते हैं फिर इतनी बैचेनी क्यों ?

नींद भी नहीं आ रही थी,

अत: क्यों नहीं कमरा व्यवस्थित कर दिया जाए।

यह सोचकर प्रोफेसर की अलमारी खोल दी,

अलमारी खोलते ही मनु ठिठक गई।

सामने ही प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो

का फोटो थी।

और प्रोफेसर की गोद में एक प्यारा सा बच्चा था।

एक खूब सूरत डायरी।

पहला वाक्य लिखा था—

"काम को दबाओ मत मन यह काया रूपी चूल्हे में जलती अग्नि है उस पर कुछ पकाओ,

उसकी दृष्टि पुन: उसकी फोटो पर अटक गई।

प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो,

उनकी झील से गहरी आँखें,

इन आँखों में तो उसने मात्र अपने ही लिए प्यार का समंदर देखा था।
लेकिन,
यह वह तस्वीर नहीं है जिसे प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो ने उसे बताया था।
यह उनकी पत्नी की तस्वीर नहीं है।
उसके हाथ में ही नहीं सम्पूर्ण शरीर में बिजली का करैन्ट लगा,
अलमारी की सारी चीजें उसने बाहर फेंक दीं।
दो तस्वीरें और मिलीं,
दोनों महिलाओं की थीं,
अपरिचित।
बहुत देर तक वह कागजों में कुछ ढूँढ़ती रही,
अन्त में जाकर उसे पता लगा कि प्रोफेसर की चार शादीयां हो चुकी हैं,
और निकले,
अगणित महिलाओं के प्रेम पत्र।
तीन पत्नियों से उनका डायवोर्स हो चुका है।
एक पत्नी अपनी बेटी ऐलेना को लेकर इसी शहर में रह रही है।
मनु को लगा उसके सीने में बहुत जोर का दर्द हो रहा है।
उसका सम्पूर्ण अस्तित्व कण-कण होकर ढह रहा है।
निस्तेज !
प्राणहीन।
कितना गर्व था उसे,
क्योंकि उसके पास की सूचना के अनुसार प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो— प्रेमी, दिलफेंक···,
नहीं—मजाक, कुछ कहा, कुछ सुना,
और आज की हकीकत,
कितने बड़े भ्रम में जी रही थी वह,
गणना और वणना से परे समझती थी वह अपने आपको,
प्यार की पसन्द,
प्यार का अभिमान,
उसका उपहास उड़ाते हुए, उसी के सामने खड़ा, था
उसका चेहरा, मुस्करा रहा था।
शायद इसीलिए,
निद्रा रानी भी रूठ कर प्रस्थान कर गई।

विचारों की उड़ानों ने इतनी ऊँची उड़ाने लगानी प्रारम्भ कर दीं की पृथ्वी के तीन खण्ड भी उसे कम पड़ गये।

यह क्या हो गया ?

कैसे हो गया ?

वह तो—,

वह तो उस पवित्र नदी की पोपित कन्या है जिसे हिरण्यवती कहते हैं, वहीं खेलकर तो उसे जीवन के निर्णय लेने आए थे उसने उसी पवित्र जल से स्नान किया है जिसमें सीता,

मैत्रेयी ने स्नान किया है।

उसके इस पवित्र शरीर को,

घृणा से मितली आने लगी उसे,

पाप का समर्थन कभी नहीं हुआ है,

पाप !

पाप ही तो है,

पंक्तियाँ बद्ध पत्नियाँ ?

और यह पत्र,

जो उसके सामने पढ़े थे,

उसे झूठ से चिढ़ है,

उसके जीवन में झूठ और झूठा शब्द ही नहीं,

फिर,

वह इसे झूठे पुरुष को अपना जीवन साथी कैसे बना सकती है ?

उसका शरीर—

प्रोफेसर का स्पर्श—

असंख्य विच्छू रेंग रहे थे।

कितनी रातें उसकी आँखों के सामने बिना स्क्रीन के साकार होकर आ गई—और—और वह रात, जिस रात वह लड़की से औरत बन गई प्रोफेसर वह दोनों अगल-बगल के कमरे में सोते थे।

उस दिन वह अपना एक आर्टीकल प्रेस में भेजने के लिए तैयार कर रहे थे। वह सो गई थी, अचानक उसकी आँख खुली घड़ी पर दृष्टि डाली दो बज चुके थे वह उठकर बाहर आई, प्रोफेसर के कमरे की लाइट जल रही थी। उसने झाँक कर देखा,

कितनी प्यारी थी तल्लीनता की वह मुद्रा !

पास आकर कलम लेते हुए बोली जानते हैं क्या बज रहा है ?

बस मनु थोड़ा सा काम बाकी है।

उसने कलम छीन ली।

इस छीना-झपटी में वह प्रोफेसर की गोद में आ गई थी।

पलँग पर लिटाते हुए···,
उस आवेग में वह बुरी तरह व्याकुल हो गई,
नारी की नैतिकता,
उसके आदर्श,
भारतीय संस्कृति,
कुछ भी सुरक्षित न रख पाई।
वह स्त्री थी।
और
प्रोफेसर पुरुष।
थोड़ी देर बाद सब कुछ शान्त हो गया।
प्रोफेसर मुस्करा रहे थे।
वह अशान्त,
योगी का संकल्प,
फिर भी कुछ था जो उसके हृदय में नहीं आत्मा में रच रहा था,
उसे तब भी—,
विश्व का श्रेष्ठ पुरुष,
प्रो० आलेक्सांद्राविनो ही लगता था
कितनी नादानी थी उसकी।

विरह,
मिलन,
सबके अर्थ बदल गए।
माँ की याद में व्याकुल हो गई मनु,
कहीं शान्ति नहीं,
कहीं स्थिरता नहीं,
उसे याद आया माँ अक्सर कहती थी,

"यत्पाद पंकज पलाश विलास भकत्या,
कर्माशयं ग्रथित मुद्ग्रथ यन्ति सन्तः॥

केवल वासुदेव को पूजने से सकाम कर्म की इच्छाओं से मुक्त हुआ जा सकता है, वासुदेव की पूजा किए बिना योगियों तथा ज्ञानियों को भी इच्छाओं से मुक्ति नहीं मिलती,

दूसरे ही क्षण उसके विचारों ने दिशा बदल ली।

बहुत सी सत्यताओं ने उसके मन में करवटें बदलना प्रारम्भ कर दी।

एक दिन,

उसकी गुलाबी मित्र तात्या ने बताया की प्रोफेसर फाइन्ना सोलास्को का चुम्बन ले रहे थे।

उसके आने से पूर्व वह अक्सर रात को यहीं रह जाती थी।

वह इतनी खराब है कि वह उसे प्रो० के पास जाने ही नहीं देती।

उसकी एक बेटी राविका है वह उसे भी अक्सर यहाँ लाती और फ्रिज में से निकाल-निकालकर सब अच्छी चीजें राविका को खिला देती।

वह उनकी पत्नी बनना चाहती है,

फाइन्ना प्रो० की विद्यार्थिनी है।

उसे भी शंका हुई थी, पर उसने उस दिन स्वयं को झिड़क दिया,

वह भारत से आई है न, इसीलिए शक की संकीर्णता उसके लहू में रम रही है।

उसका सर फटा जा रहा था।

उसने एक पुस्तक उठाई पढ़ेगी तो विचारों पर प्रतिबन्ध लग जाएगा,

कुछ क्षणों के लिए ही सही,

जो पहला पृष्ठ खुला वहीं से पढ़ना आरम्भ कर दिया।

कर्नल हंट ने मेजर फुजीवारा को भारत के हिन्दुस्तानी अफसर भेड़-बकरियों की भाँति सौंप दिए थे और तब जापानियों ने उन्हें एक सुनहरा अवसर दिया कि तुम सब आजाद हिन्द फौज का निर्माण करो। इस प्रकार हजारों युद्धबन्दी इसमें भर्ती हुए और आजाद हिन्द फौज का जन्म हुआ। फिर जर्मनी से आकर नेताजी ने इसका दायित्व उठाया। चाहकर भी वह आगे नहीं पढ़ सकी।

ढेर सारे काले-काले बिन्दु शब्द बनकर उसकी आँखों के सामने मँडराने लगे।

वह त्रिशंकु हो गई,

वह यहाँ पढ़ने आई थी।

प्रो० को उससे झूठ बोलने की क्या आवश्यकता थी।

वह चित्र तो उसे मिला ही नहीं—,

यहाँ ! इस अलमारी में।

"मनु यह मेरी पत्नी है, पन्द्रह वर्ष पूर्व एअर क्रैश में नहीं रहीं।"

फिर !

अभी तो वह एक और बाकी है।

माँ भी तो नहीं,

एक हिचकी उसकी टेलीफोन के तारों की यात्रा कर लेती तो शायद उसके हृदय को थोड़ी सी सान्त्वना मिलती।

वह कहीं विक्षिप्त तो नहीं हो जाएगी ?

वह जोर से हँस पड़ी।

बहुत जोरों से !

उसे ख्याल आया,

वह अपना और प्रोफेसर का जीवन भारतीय संस्कृति का एक जीवन्त पृष्ठ बनाना चाहती थी।

वह प्रो० के साथ एक सेमीनार में अफगानिस्तान गई थी वहाँ उसने यूनानी शासक अगाथोविल्स के समय के सिक्कों पर राधा और कृष्ण की छवि अंकित देखी थी।

सिक्कों पर तो वह अंकित नहीं हो सकती थी,

पर उसके मिलने वाले पहचानने वालों के लिए तो वह राधाकृष्ण बन ही सकती थी।

वैसे भी कृष्ण उसके जीवन के नायक पुरुष थे।

वह रो पड़ी।

कृष्ण को अपने जीवन का नायक पुरुष मानती है न फिर दुःख कैसा, कृष्ण के पास न पत्निओं की कमी है न प्रेमिकाओं की, वह तो 'बहु' नायक है, उसका तो जीवन ही 'बहु' है।

फिर प्रो० के सम्बन्ध में उसकी तड़फ क्यों ?

जी चाहा वह इतनी जोर से हँसे की आकाश और पाताल एक हो जाएं।

कृष्ण की छवि का यह भी तो एक रूप है।

नही-नहीं !

किस जाल में फँस गई,

अच्छा हुआ उसने अभी तक प्रो० से शादी नहीं की।

मन के दसों बलिष्ठ नौकरों ने कहा—भाग चल मनु,

पाँचों कर्मेन्द्रियाँ,

और,

पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ,

एक साथ मिलकर भागने के लिए मचलने लगीं।

क्या करेगी यहाँ रहकर,

प्रो०,

क्या करेगी तू उससे मिलकर।

झूठ पर खड़ी दीवार का प्लास्तर कितना भी सुन्दर हो पर अगर उसमें भी तू अपने जीवन की कील नहीं ठोक पाई,

तेरी नियति,

तेरा स्वभाव।
कौन-सी चील है,
जिसे भाग्य का नाम दिया गया है,
वही चील,
आज भाग्य के नाम, सब कुछ उसका उड़ाकर ले गई और वह बेवस, स्तब्ध, मूक बनी खड़ी रही।
झाँकना तो सभी को पड़ता है,
कोइ आगत तो कोई विगत में।
सारा अतीत चुपचाप उसकी आँखों में आकर बैठ गया, हौले-हौले वह अतीत की धूल साफ करने लगी।
उसने पाया !
मनु नाम का एक बुत उसके सामने खड़ा है, जिसमें प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, आकांक्षाएं, महत्वाकांक्षाएं सब कुछ एक साथ धू-धू करके जल रही हैं।
वह एकटक देखती रही।
कितनी पीड़ाओं की अनुभूतियाँ झेली हैं इस बुत ने।
उग्रता का स्थान करुणा ने ले लिया।
करुणा,
लेकिन क्यों ?
जलन ने करुणा कहाँ दी। वहाँ तो उसे पीड़ा ही मिली है।
उसके पास एक आस थी,
एक विश्वास था,
और अब है,
एक विस्तृत आकाश।
उसकी जिन्दगी का गणित एकदम उलटा हो गया।
बहलाना —कल्पित भ्रम एक साजिश है जो वर्षों से चली आ रही है,
इतनी बड़ी विशाल पृथ्वी !
अनन्त काल का प्रवाह—,
कहीं तो कभी कोई किसी के मर्म को नहीं समझेगा,
स्वयं को समझना,
या,
समझा लेना,
जीवन है ?
यह इच्छा क्यों ?
मनु,

मनु।

मानव जाति का पूरा इतिहास साक्षी है कि जहाँ तक स्त्री का सम्बन्ध है उसकी तुलना में पुरुष ने अपनी श्रेष्ठता की भावना को कभी प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा ही नहीं, वास्तव में पुरुष की श्रेष्ठता की धारणा एक सामान्य पुरुष केन्द्रिक दृष्टि का परिणाम है—

फिर प्रो० आलेक्सांद्राविनो कैसे अछूते रहते ?

प्रोफेसर ने उससे कहा था—,

सच्ची और वास्तविक स्वतंत्रता ही, मानवीय व्यक्तित्व और उसकी सृजनात्मक प्रवृत्तिओं की सच्ची तृप्ति ही उसका लक्ष्य है। पश्चिम में विकसित मानववाद परम्परा की यह एक कड़ी है। एक दिन मनुष्य पूरी मानवीय गरिमा के साथ यहाँ विचरण करेगा।

मानवीय गरिमा—,

जिसके पास चरित्र ही नहीं, वह मानवीय गरिमा की बातें करता है।

प्रो० शायद यह भूल गये।

कि,

स्त्री अग्नि है।

मनु ने आठ दिन काटे,

कैसे ?

पीली पड़ गई मनु,

मानो वर्षों का कंकाल।

अतीत का उज्जवल प्रतिबिम्ब आज पहली बार मनु देख रही थी, अतीत के अस्तित्व का मानवीय जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है, हमारे जीवन का प्रवाह अनादि काल से अविच्छिन्न रूप से चला आ रहा है। जीवन के मूलस्त्रोत तक पहुँचने की समस्त श्रृंखलाओं को क्या कभी कोई पा सका है फिर भी किसी एक परम्परा या केन्द्र बिन्दु को पकड़कर हम उसे अपने वर्तमान उद्भव का मूल मान लेते हैं।

ध्यान से शायद निकाल देते हैं।

कि—

कौन सी परम्परा

और···,

कौन से केन्द्र बिन्दु।

दुख के दो रूप

इसमें सन्देह नहीं परिस्थितियों का बहुत कुछ उत्तरदायित्व स्त्री पर है—क्योंकि उसे जीने की कला नहीं आती। न तो वह युगयुगान्तरों से चले आने वाले

सिद्धान्तों में जीती है और न ही आधुनिकता की शृंखलाओं में रुखाई और कड़ाई का उत्तरदायित्व समझने के लिए अपने को तत्पर पाती है।

मन के किसी कोने ने कहा,

जीवन में तुम भी सोच सकती हो ?

माँ कहती थी

कष्टों से मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है और वह है भगवान में प्रीति, उसमें भक्ति—,

कृष्ण ने गीता में कहा है कि—,

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:
त्यक्तां देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥

और शायद,

यही सुख की चरमावस्था है।

पापा ने उसे पहली बार टोका था, जब उसने उन्हें अपनी यूनिवर्सिटी बदलने की सूचना दी थी। और डॉ० केपिलाव के स्थान पर डॉ० आलेक्सांद्राविनो की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। वह पापा का मुँह तो टेलीफोन में नहीं देख सकी पर आज वह उन शब्दों का अर्थ समझ रही है।

मनु एक बात याद रखना की मनुष्य के जीवन का जितना अंश, नीति शिक्षा, आचार आदि सामाजिक संहिताओं के सम्पर्क में आता है। उतना ही समाज द्वारा शासित माना जाता है और सदा-सदा माना जाता रहेगा।

अतीत की परछाइयों ने उसका प्रगाढ़ आलिंगन कर लिया—

माँ नरोत्तम दास ठाकुर का एक भजन गाती थीं—

"साधु शास्त्र, गुरु वाक्य, चित्तते करिया ऐक्य।"

हाँ !

कितना सत्य है,

पूर्व के बनाए वाक्य, जीवन की बहुत बड़ी सच्चाई है।

मनु !

मनु !

उसकी सूरत तो—बस उजाड़ सूने मन्दिर की शान्त घण्टियाँ थीं।

सच !

नहीं वह उपहास का बिन्दु नहीं बनेगी,

वह अलेगी निर्देशिका हैं,

अगेली केन्द्र कैसे बनेगी ?

पुरानी परम्पराओं को उसने तोड़ा है,

तो अब !

इस जीवन की दुरूहता से भी वह स्वयं बाहर निकलेगी,

"अप्प दीपो भव।"

अपने दीपक स्वयं बनो अपना रास्ता खुद खोजो,

यह मानसिक विडम्बना है कि मनुष्य जीवन की पराजयों को भी भगवान के वरदान के रूप में स्वीकार कर ले। और उसे जीवन भर अपने पूर्व जन्म के दुश्कर्मों का फल समझता रहे।

वह नहीं समझेगी,

उसने गलती की है,

वह सुधारेगी भी,

उसे प्रो० आलेक्सांद्राविनो के कुछ शब्द याद आ गये—,

जीवन कहीं अधिक यथार्थ है, फिर यह क्यों न कहा जाए की जीवन में रुचिकर वस्तुएं ही यथार्थ हैं। वास्तव में अपने जीवन के अन्तिम प्रयोजन को समझना मानव के लिए दुष्कर है। सत्यं, शिवम् और सुन्दरम् की स्थिरता नहीं वह तो बोध है ईश्वरीय बोध। जैसे ईश्वर को कोई नहीं बाँध सकता इसी प्रकार शब्दों की समाप्ति कहीं नहीं है। और इसीलिए हम कल से आज अधिक सुन्दर और आज से आने वाले कल में अधिक सत्य, अधिक शिवम् और अधिक सुन्दरतम वस्तु पा लेते हैं, इसी का नाम जीवन है। आज से कल अगर आकर्षक न मिले तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। प्रत्येक नया स्तर पिछले स्तर से अधिक जटिल, सूक्ष्म और अपरिष्कृत से परिष्कृत की ओर जाता है। यही सृष्टि का प्रयोजन है और यह प्रयोजन विकास क्रम की बौद्धिकता को मानवीय मनों में महत्वाकांक्षाओं के रूप में पिरो दिया जाता है।

सच है···,

पाश्चात्य संस्कृति ने न कभी अतीत पर विश्वास किया न वर्तमान पर न कभी भविष्य की योजना बनाई।

कितना सच है,

जो आवश्यकता को ही अहम् समझता है वह स्वयं को बहुत बौना बना लेता है।

मनु !

तुम तो इस घर को बैकुण्ठ बनाना चाहती थी।

एक बार अपनी माँ की बात न मानकर वह गलती कर चुकी।

दूसरी बार वह किसी भी गलती से समझौता नहीं करेगी।

उसने सीधे एअर लाइन्स का नम्बर मिलाया।

इण्डिया की फ्लाइट

बम्बई की,

11.45 पर

मनु बोल रही थी

रिसीवर रखते ही उसे लगा की वह बहुत हल्की हो गई है, वह शीघ्र-से-शीघ्र अपने कागजात तैयार करवा लेना चाहती थी।

आज सातवाँ दिन है,

13 तारीख···,

तीन दिन बाद प्रो० आलेक्सांद्राविनो लौटेंगे।

उससे पहले वह भारत पहुँच चुकी होगी।

मन ने कहा,

कम-से-कम एक बार इरीना से तो मिल ले?

इरीना!

उसकी प्रिय मित्र

यह सत्य था,

कि,

उसने इरीना को कभी अपना राजदार नहीं बनाया फिर किस मुँह से उसके पास जाएगी,

इरीना उसे प्यार करती है,

और,

उसने क्या किया?

और,

आज,

आज तो पराजित, असहाय है, अपनी असहायता का साझीदार वह कभी नहीं बनाएगी, किसी को भी नहीं।

प्यार तो उसे नन्हीं गुलाबी तात्या से भी बहुत अधिक है जिसने उसको सर्व-प्रथम खतरे की घंटी की सूचना दी। प्यार तो वह अपनी माँ से भी करती थी, जिसके बार-बार मना करने पर भी वह यहाँ चली आई!

प्यार तो वह अपने पिताजी से भी बहुत करती थी, जिनके सभी अनुरोध उसने वैस्ट पैपर बास्केट में डाल दिए।

प्यार!

प्यार!

मनु हिचकियों से रो पड़ी, पता नहीं कब तक रोती रही।

आज तो घर में उसकी गुलाबी मित्र भी नहीं है वह भी सप्ताह मनाने गई हुई है।

बरसात की !
और,
आँखों की झड़ी,
आज तो,
आँख की झड़ी बरसात की झड़ी के मुकाबले में पराजित हो गई।

इंडियन एअर लायन्स 1647 की एअर बस उसे उड़ाए लिए जा रही थी।
वह घर लौट रही है।
हाँ घर,
वह फिर से अपना एक नया जीवन प्रारम्भ करेगी।
वह नहीं रोऐगी,
एक स्वप्न था,
जो उसने देखा था,
उसे ढेर सारी अस्वरूपता देकर गायब हो गया।
अब !
अब क्या ?
वह अपने मन को शिथिल नहीं होने देगी।
क्यों किसलिए ?
प्यार का अर्थ समझने में वह नाकामयाब रहीं,
लेकिन उसका मन जीवित था,
उसके संस्कार उसके साथ थे

परम्पराओं की मान्यताओं ने कहीं बहुत गहरे अपने नियंत्रण का पहरा बैठा दिया था,

तभी तो वह वापस आ रही है,
अपने माँ पिताजी के पास,
अपनी भूल की क्षमा माँगने।
वह प्रसन्न है,
या
अप्रसन्न,

यह तो वास्तव में वह भी नहीं जान पाई। पर यह वह जानती है कि उसका निर्णय गलत नहीं है।

अरे मनु जी आप ?

अपनी दुनिया की ऊँची और निरर्थक उड़ान से सीधी धरती पर आ गई मनु

सामने प्रो० अनाश खड़े थे।

आप तो···,

घबराहट में मनु अपना पूरा वाक्य नहीं बोल पाई।

मेरी बहन बहुत सीरियस है,

सॉरी,

क्या हो गया उसे ?

इरा मेरी नन्हीं गुडिया कैंसर अस्पताल बम्बई में भर्ती है मैं तो आना ही नहीं चाहता था लेकिन प्राइम मिनिस्टर ने कहा की प्रो० दुःख तो तुम्हारा अपना है पर गौरव सारे भारत का है, अपने व्यक्तिगत श्रेय के लिए···एक क्षण चुप रहे प्रोफेसर फिर बोले—इरा ने भी बहुत जोर दिया।

प्रो० अनाश का गला भर आया।

इतना बड़ा दार्शनिक और इतना भावुक !

अफसोस···,

कुछ नहीं बोलिए मनु जी, इसी को नियति कहते हैं।

यही जीवन है,

वह सब कुछ नहीं होता जिसे मनुष्य चाहता है,

जीवन का यथार्थ है।

जी हाँ, और यही जीवन का यथार्थ जहर है।

सत्य—

मनु की आवाज आवेश से काँप रही थी।

इस अचानक परिवर्तन के लिए प्रोफेसर एकदम तैयार नहीं थे।

फिर,

पुनः संयत होकर बोले,

जीवन और यथार्थ आप मिली हैं कभी उनसे,

जी हाँ,

कहाँ ?

यहीं।

आश्चर्य से प्रोफेसर ने मनु की ओर देखा।

जीवन में,

यथार्थ आप।

मनु के इस वाक्य से सारी विषमता जैसे घुल गई।

दोनों ही मुस्करा दिए।

आप भारत जा रही हैं, इसका जिक्र तो आप दोनों में से किसी ने किया ही नहीं।

मैं तो शर्मिन्दा अनुभव कर रहा था अपने को

क्यों ?

प्रो० आलेक्सांद्राविनो जी ने बताया था कि अगले माह की 28 तारीख को आपकी शादी होने वाली है।

आप भाग्यशाली हैं जिसे आलेक्सांद्राविनो जैसा विश्वविख्यात दार्शनिक जीवन साथी मिल रहा है,

मनु के चेहरे पर कितनी रेखाएं उभरी और विलीन हुईं,

विशाद और घृणा की। हाँ बस विश्व विख्यात दार्शनिक ही है वह,

पर,

प्रो० अनाश इससे बेखर दोनों की प्रशंसा के पुल ही बांधते रहे एअर होस्टेस ने जब कॉफी का कप सामने रखा तो उन्हें अनुभव हुआ की कितनी देर से वह अकेले ही बोले जा रहे हैं,

लीजिए !

मैं तो भूल ही गया था, कि बोलने का एकाधिकार मेरे पास सुरक्षित नहीं है।

चलिए कॉफी पीजिए, बहुत बोर कर दिया आपको,

प्रो० अनाश,

जी,

मेरी शादी प्रो० आलेक्सांद्राविनो से हो रही है तो यह आपके दिमाग का भ्रम है।

मनु की आवाज में झुंझलाहट थी।

प्रोफेसर के माथे पर पसीना चुचाने लगा। वह बहुत ज्यादा बोल गये।

लीजिए रूमाल देते हुए मनु ने कहा पसीना पोंछ लीजिए।

कॉफी पीजिए, नहीं तो वह एकदम ठंडी हो जाएगी।

मनु जी,

कुछ मत कहिए, कॉफी पीजिए,

भारत,

हाँ वापिस आकर,

मनु ने,

जो कुछ भी उसकी जिन्दगी में घट गया था, बिना कुछ छिपाए बता दिया।

उसने माँ और पिताजी से…,

पिताजी ने अपनी बेटी को गले से लगा लिया,

और,

माँ तो प्रसन्न हो गई की मनु वापस आ गई।

घर का बोझिल वातावरण एकदम सामान्य हो गया। मनु का चहकना, सारे घर को रास आया।

माँ पिताजी,

और

क्या मनु भी ?

सभी प्रसन्न थे।

कभी-कभी मनु को स्वयं आश्चर्य होता कि उसने इतने शानदार मुखौटे में इतनी शीघ्र अपने को कैसे छिपा लिया मनुष्य भावनाओं का जीता जागता तव्वसुर है।

मनु को प्रो० अनाश की मदद से लेडी श्रीराम कालेज में लेक्चरार का जॉव मिल गया।

माँ नहीं चाहती थी।

चाहते तो पिताजी भी नहीं थे पर फिर सोचा की वाहर जाएगी लोगों से मिलेगी जुलेगी तो शायद जीवन पर छाई उदासी के वादल छँट जाएं।

चाहे वह कितनी भी सामान्य थी।

पर वह उसके माता पिता थे।

कालेज से लौटने पर उसे एक दिन इरीना की शादी का आमंत्रण पत्र मिला।

इरीना का आग्रह भरा पत्र भी था कि वह उसकी शादी में अवश्य आए।

एक साथ ढेरों चक्रव्यूहों में फँसती चली गई मनु।

हाँ,

अतीत। की यादें भी तो एक चक्रव्यूह ही हैं।

अरे !

वह कहाँ खो गई ?

उसे तो प्रसन्न होना चाहिए कि ढाई वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद भी इरीना ने उसे याद रखा।

वह उसे वहुत सुन्दर उपहार भेजेगी।

माँ मैं आज देर से आऊँगी,

मुझे थोड़ी शॉपिंग करनी है।

गाड़ी स्टार्ट करने ही जा रही थी कि—,

सामने से डॉ० अनाश ने अपनी गाड़ी में जोरदार ब्रैक लगाए।

अरे आप ?

हाँ, आज कोलेज की छुट्टी हो गई,

अच्छा,

चलो अच्छा हुआ।

आज आपका बाहर निकलना बन्द,

मनु मुस्करा दी।

नहीं आज तो मुझे जाना है,

कहाँ ?

मेरी एक बहुत प्यारी मित्र की शादी है उसके लिए उपहार खरीदने।

अच्छा आपकी कोई बहुत प्यारी मित्र भी है,

दोनों हँस दिए।

प्रोफ़ेसर ने दरवाजा खोलते हुए, आइये मैं ले चलता हूँ आपको, मनु कुछ बोले इससे पूर्व ही वह बोले, चिन्ता मत कीजिए घर छोड़कर जाऊँगा।

जिन्दगी ने एक नई करवट ली।

अनाश से मुलाकातें बढ़ने लगीं।

माँ और पिताजी को भी प्रो० अनाश बहुत अच्छे लगते, बिना कोई रिश्ते, की,

श्रृंखलाओं को आपस में फँसाए बिना सब एक-दूसरे से जुड़ गए।

कभी-कभी उसे यह भी लगता की माँ और पिताजी कुछ अधिक ही इज्जत करते हैं प्रो० अनाश की।

कुछ भी इस जुड़न ने उसे सार्थकता दी है।

वह,

फिर से उलझने लगी पुस्तकों में,

उसमें समर्थता आने लगी।

विचारों की चादर कितनी लम्बी और चौड़ी है ?

मुस्करा दी मनु।

समर्थ तो वह पहले से ही,

सशक्त भी है,

नहीं तो,

इतना बड़ा कदम कैसे उठा सकी बिना प्रो० आलेक्सांद्राविनो के वह भारत कैसे आ गई ?

मुड़कर पीछे देखना तो उसका स्वभाव ही नहीं।

मन को जो नहीं अच्छा लगा,

मन जिससे सहमत नहीं हुआ,

उस सब कुछ को काँटे के समान निकाल कर फेंक दिया उसने।

मनु !
क्या यह सच है ?
प्रो० आलेक्सांद्राविनो को वह भुला पाई ?
उसकी आत्मा ने प्रश्न किया,
उसी ने उत्तर दिया, जिसकी साक्षी बनकर खड़ी हो गई बुद्धि,
दिल से···,
यह कोई काँटा थोड़े है जिसे सुई से निकाला और फेंक दिया;

आलेक्सांद्राविनो के साथ उसने अपना नारीत्व जोड़ा था। वह उस मनुष्य को कैसे भुला सकती है जिसके साथ बिस्तर पर उसका अछूता नारीत्व टूटा था,

और जिसके लिए,
स्त्री मात्र बिस्तर की हम सफर हो।
वह उसे कभी नहीं भूल पायेगी।

पिछले वर्ष उसकी पुस्तक 'पाश्चात्य दर्शन' ने धूम मचा दी थी विश्व के कोने-कोने से उसके पास बधाई पत्र आते रहे उनमें से एक तार आलेक्सांद्राविनो का भी था।

मन ने कहा बिना खोले वैस्ट पेपर बॉस्कट में फेंक दे। पर ऐसा कर नहीं सकी।

उसने पढ़ा था,
अनाश ने उसे टेबिल पर रखे देखा था।
दोनों ही चाहते थे,
कि इसके सम्बन्ध में कुछ बोले ?
पर दोनों ही प्रतीक्षा में रह गये,
शायद सोचते रहे कि पहल कौन करेगा ?

वह तो इत्तिफाक की बात थी की पिताजी अन्दर आए दोनों को एक साथ इतना सीरियस देखकर कुछ कहना चाहते थे कि टेबिल पर सामने तार पड़ा था।

पिताजी ने उठाकर उसे चिन्दी-चिन्दी करके वैस्ट पेपर बॉस्कट में डाल दिया।

जानती हो मनु,
कुछ नहीं जानती,

विचारों के आडम्बरों ने उसका सिर खा लिया, वह एक दिन इसी प्रकार घुट-घुट कर पागल हो जाएगी।

वह वापस आ गई धारातल पर,

वह क्यों सोचती है? क्यों समय मिलते ही अतीत के स्वप्नों से खेलने लगती है।

अपने पर भी काबू पा लेगी।

पिताजी,

माँ।

कितना प्यार···,

माँ चली गई,

पिताजी की भी जाने की बारी है। क्यों वह इतना सोचती है सोचने के लिए और भी तो बहुत सी बातें हैं।

घड़ी पर दृष्टि डाली,

ओफ़्फ छह बज गए,

अब नहीं सोचेगी।

आज मंगलवार है, प्रो० अनाश अवश्य आएंगे,

प्रो० हैंगरी—

जभी नीचे से धारा माँ की आवाज आई,

बिटिया डॉ० साहिब को ऊपर ही भेज दूँ?

हाँ धारा माँ।

आते ही प्रोफेसर ने कहा,

जानती हो मनु प्रो० हैंगरी तुम्हारी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे,

वह कह रहे थे अगर तुम चाहो तो हावर्ड में वह तुम्हें अपने पास बुला सकते हैं।

प्रो० अनाश की आँखों में चमक थी,

जानती हो मनु आज उनकी गणना, बरगसन, सिपी नोजा, पेरी, बर्कले, रोयसी आदि की श्रेणी में की जाती है।

उनके सामने स्वीलर और अरविन्दो भी सोच कर ही बोलेंगे,

फिर धीरे से बोले,

मनु तुम इतनी ऊपर पहुँच जाओगी तो मेरा तो स्थान ही गौण हो जाएगा। लेकिन एक बात अवश्य है तुम्हारे पीछे रहकर अपने को दर्शन का स्कालर समझने का फायदा तो मुझे मिलेगा ही।

अनाश अपनी ही धुन में बोले जा रहे थे।

मनु वास्तव में अगर तुम वहाँ चली जाओ तो विश्व की चोटी पर तुम्हारा नाम होगा।

अचानक अनाश की दृष्टि मनु के मुख पर पड़ी,

उसकी आँखों से श्वेत बिन्दु बाहर आने के लिए मचलने लगे।

अरे मनु!

मैं तो प्रो० हैंगरी की प्रसन्नता में स्वयं इतना डूब गया था—एक क्षण रुककर बोले—"सच मनु मैं तुम्हें बहुत ऊँचा देखना चाहता हूँ बहुत ऊँचा।"

मनु प्लीज,

मनु कुछ बोले इससे पूर्व ही टेलीफोन की घण्टी टनटना उठी—

प्रो० अनाश ने रिसीवर उठाया।

मनु उत्तर ही सुन सकी।

हम अभी आ रहे है,

मनु अस्पताल से फोन था पिताजी की हालत ठीक नहीं।

तुम्हें बुला रहे हैं। तुम नीचे आओ मैं गाड़ी बाहर निकालता हूँ।

और उस दिन मनु के सिर से पिता का साया भी उठ गया,

मनु कैसी हो गई ?

मनु क्या चाहती है ?

मनु क्या सोचती है ?

किसी का उत्तर नहीं है मनु के पास।

उसके पास कुछ शेष ही नहीं रहा।

माँ पिछले वर्ष छोड़कर चली गई।

और,

अब पिता भी मुक्त हो गए।

आधुनिक सुख साधनों से सम्पन्न मनु आज कितनी अकेली हो गई।

यातनाओं से जूझती मनु, पीड़ा झेलती मनु, सम्पन्न मनु सभी कुछ···

अति थी,

उसके पास।

लगातार काल बैल की आवाज ने उसका ध्यान भंग किया।

दृष्टि गई साढ़े बारह बजे थे।

धारा माँ बाहर गई थी,

प्रो० अनाश,

नहीं उनको तो मास्टर लॉक की की पता है,

फिर

इस समय कौन हो सकता है ?

स्वयं उतर कर नीचे आई,

दरवाजे !

पर,

एक अत्यधिक आधुनिक युवती खड़ी थी।

उम्र में उससे दो चार वर्ष छोटी ही होगी।

शायद,

28-29 बसन्त देखे होंगे,

पल में उसने अपनी दृष्टि अपने ही ऊपर डाली,

वह तो 34 बसन्त देख चुकी है।

यह क्यों सोच रही है?

संयत हो गई मनु, मनु कुछ पूछे इससे पूर्व ही आवाज उसके मष्तिष्क से ठकरा गई।

मेरा नाम इति है, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?

आइये।

लगता है आप अभी सोकर उठी हैं मेरी घण्टी की आवाज ने ही आपकी नींद में खलल डाला है क्या क्षमा कर देंगी?

हालांकि इति बहुत सभ्य ढंग से बात कर रही थी। फिर भी मनु को यह महिला अच्छी नहीं लगी।

मन ने कहा की बाहर निकाल दे इसे,

पर क्यों?

औपचारिकता तो निभानी ही चाहिए।

वह सोच ही रही थी कि इति पुनः बोली,

आपकी कोठी भव्य ही नहीं अत्यन्त भव्य है। इसके लिए आपको बधाई देना आवश्यक है। धन्यवाद कहकर मुझे औपचारिकता के भार से मत दबा दीजिएगा आपका तो नहीं जानती लेकिन मेरा मन जरा भी औपचारिकता का भार सहन करने की सामर्थ्य नहीं रखता, मनु जी जीवन सहज होना चाहिए।

उसमें औपचारिकता—वाक्य पूरा करने से पूर्व ही उसके सामने खड़ी हुई इति खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

मनु को लगा,

कि,

यह इति नाम की लड़की उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ जानती है।

आप एक कप चाय नहीं पिलायेंगी?

मनु अपने से बाहर निकली। हाँ अन्दर आइये।

धारा माँ,

वह तो बाजार गई हैं।

मनु चौंक गई।

उसके घर की खबर इस लड़की···,

आई बिटिया,

इति शायद मनु के भाव भांप गई,

बोली,

घबराइये नहीं, वापस आ गई।

फिर मुस्कराते हुए बोली,

वाह मनु जी, आपके बगीचे के महकते गुलाब, वासन्ती फूलों के गुच्छे—धरती से बाते करते हुए—स्वागत करती हुई नरगिस और लिली, किसी का भी मन बांध लेती हैं।

जितना सुन्दर घर है,

उतनी ही आकर्षक और मन को लुभाने वाली विविधताएं—

मनु जी आपका घर देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने अपनी गोद आपके आँगन में खाली कर दी है। आपके इस घर में जीवन ही जीवन है सच तो यह है कि आपके घर में धवल मखमली उजाला है।

प्रकृति के उपहारों से लदा आपका यह घर वास्तव में अवर्णिय है।

बुरा मत मानिएगा—

इतने पर भी ऐसा लगता है कि किसी कोने ने काली चादर ओढ़ ली है।

एक क्षण रुक कर बोली,

आपके यहाँ बैठकर माजी से गुजर जाना नियामत ही नहीं खुदा का भेजा एक आकर्षक सकून है।

आने वाली महिला मात्र आकर्षक ही नहीं, जिन्दादिल भी थी।

जीवन के तौर-तरीकों से वाकिफ। बोलने में अत्यधिक तीखी और कड़वी।

अभी तक मनु सुन ही रही थी।

पहली बार बोली,

लीजिए चाय—

चाय का प्याला हाथ में लेते हुए उसने अपनी झील सी नीली गहरी आँखें मनु की आँखों में डालते हुए कहा, "मनु जी बड़ा नाजुक प्रश्न है फिर भी पूछ रही हूँ, इसलिए, धृष्टता के लिए पहले से क्षमा माँग लेती हूँ।"

आपने शादी क्यों नहीं की ?

सूखे भूसे में जो चिन्गारी काम करती है वही काम किया इस वाक्य ने।

व्यत्तिगत प्रश्नों के उत्तर, क्या आपके प्रचार अभिमान का एक आवश्यक अंग हैं।

मनु की कड़वाहट ने इति के मन की जरा-सी भी असमानता की रेखा को छूने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया।

माथे पर क्षोभ की एक भी रेखा दृष्टिगोचर नहीं हुई।

मुस्कारते हुए बोली,

मनु जी जीवन दर्शन नहीं है। And you know after all man is social animal.

इसके लिए शादी ही एकमात्र आवश्यक नहीं ?

मनु के शब्दों में अभी भी उपेक्षा थी।

हाँ आप ठीक कहती हैं।

एक कप चाय और देंगी।

मनु ने अपनी दृष्टि, इस महिला के चेहरे पर पुनः गड़ा दी।

क्यों आई है ?

कौन है ?

क्या चाहती है ?

इति का व्यक्तित्व बड़ा ही विचित्र और रहस्य से भरा लगा मनु को।

मनु को अपनी ओर देखते हुए, इति खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

आपका दोष नहीं मनु जी, कलियुग ने हमें—घूर-घूर कर देखना ही सिखाया है।

शंका हमारी माँ बन गई है।

लेकिन विश्वास कीजिए मुझे आपकी कोई भी दृष्टि वेदना का अनुभव नहीं करा पाएगी। अरे मैं तो उस धरती की बेटी हूँ, जहाँ कर्म करने में इंसान विश्वास रखता है। आप तो जानती ही होंगी की सारी गीता कृष्ण के कर्म पर ही आधारित है। फिर मेरी यह भूमि जिसमें विचित्रताएं ही विचित्रताएं भरी हैं—कहीं धीर-गम्भीर सिन्धु नाद है, कहीं आशिकों को बुलाती चिनाव, कहीं मोक्ष का द्वार दिखाने वाली गंगा है, कहीं छैल-छबीले कृष्ण के सम्मोहन से आलिंगन करने वाली यमुना, कहीं दुख से आँख-मिचौनी करती सरस्वती है और कहीं अपनी ही ढेर सारी बेटियों को अपने आँचल में छिपाए ब्रह्मपुत्र है। प्यार की इस धरती पर चारों ओर प्यार ही प्यार है। आवश्यकता है तो बस इतनी कि तुम्हारा आँचल किस प्यार को समेटना चाहता है।

मनु जी,

एक क्षण रुककर फिर बोली,

मैंने भी अपना आँचल फैलाया था, मेरे आँचल में भी शायद वही सिमट कर आ जाता जिसे मैं चाहती थी।

लेकिन आपके अस्तित्व ने मेरे आँचल के तार-तार कर दिए

जिन्दगी बड़ी नाजुक है।

बिजली के तार पर लटकती हुई यह जिन्दगी रूपी महीन रेखा—आपने इसे मिटा दिया।

जानती हैं कितने वोल्ट का करेन्ट था,
फिर भी मैं बच गई।
जी हाँ,
मृत्यु किसे प्रिय लगती है।
आप दर्शन शास्त्री हैं, विद्वान हैं, मैंने कहीं पढ़ा था,
मृत्यु उन्हें प्रिय नहीं लगती जो मात्र इस भौतिकी जीवन के प्रति अनुरक्त रहते हैं।
हाँ !
मेरी अनुरक्तता है,
मेरा जन्म ही इस भौतिक संसार को भोगने के लिए हुआ है,
मैं क्यों मृत्यु से मित्रता करूँ ?
क्यों ?
मनु जी क्रोध की पूँजी लुटाने के लिए नहीं होती। और कोई भी युद्ध जीतने के लिए भीष्म प्रतिज्ञा आवश्यक नहीं, और न ही यह सम्भंव है।
आप तो जानती ही होंगी क्रोध की कटार को क्रोध ही काट सकता है।
मैं जानती हूँ कि आप मेरी बातों से अत्यधिक बोर हो रही हैं,
लेकिन,
आप शायद नहीं जानतीं,
कि,
मेरी भावनाओं के ऊपर गर्द जमती जा रही है अगर इस गर्द के ढेर में मेरे अधिकार दब गए तो फिर मैं कहाँ जाऊँगी इसी विश्वास से आपके पास अधिकार माँगने चली आई।

अब मनु को यह महिला और इसकी बातें असहाय लगने लगीं। अतः चिढ़कर बोली,

आप कहना क्या चाहती हैं,
अधिकार, क्रोध, गर्द मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा।
मनु जी, बीज को पनपने के लिए अन्तरिक्ष का नहीं पृथ्वी का संरक्षण चाहिए।

लगता है आप किसी गलत स्थान पर आ गई हैं, नारी हूँ इस नाते आपकी बातों से इतना सार निकाल पाई की आप किसी वेदना की भट्टी में झुलस रही हैं। लेकिन मेरी समझ में यह अभी तक नहीं आया की मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ ?

मनु—
एक क्षण रुककर बोली,

सच तो यह है कि समस्त विश्व धू-धू करके जल रहा है इससे प्राणी मात्र झुलस रहा है, कहाँ और कितने फफोले पड़े हैं यह जानने और गिनने का भी समय नहीं है उसके पास।

जब आप मेरे पास आई ही हैं तो मैं चाहूँगी की आप मुझे स्पष्ट बताइये कि आपके यहाँ आने का प्रयोजन क्या है ?

मनु जी;

भाग्य—इति आगे बोले इससे पूर्व ही मनु बोली, "इति जी भाग्य अथवा नियति का अर्थ सम्भवतः मनुष्य द्वारा करी हुई घटनाओं पर निर्भर रहता है।"

मनु जी, जब मन सब ओर से घिर जाता है तो निराशा बिना कुण्डी खटखटाए सामने आकर खड़ी हो जाती है और उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि उसने सब कुछ खो दिया।

इति जी,

कौन किसको खोता है,

कौन कुछ पाता है,

खोने और पाने के बीच मनुष्य सदियों से बस यंत्रणाओं के पृष्ट ही पलटता रहता है न खोने के अर्थ ने कभी अपना स्वामीत्व जमाया न पाने का अर्थ ही कभी अपना उत्तरदायित्व समझ सका,

फिर भी प्यार !

प्यार का अर्थ तो मैं आज तक नहीं समझ पाई, कभी आँसूओं को प्यार समझा जाता है और कभी हँसी को प्यार कहा जाता है, हँसी की अभिव्यक्ति तो सरल हो सकती है, लेकिन आँसू की अभिव्यक्ति अत्यन्त कठिन है, इति जी हँसी बँट जाती है पर आँसू कभी नहीं बँटते ! बाँटने भी नहीं चाहिएं।

मनु जी, फिर,

जीवन के अर्थ क्या ?

प्यार का भ्रम—मात्र,

जीवन नितान्त एकाकी,

हँसी और आँसूओं के बीच की पगडण्डी !

नहीं इति जी,

अगर मेरे से,

मेरी व्यक्तिगत राय पूछें तो मैं कह सकूंगी कि—

"Knowledge and under standing are life's faithful companions who will never prove untrue to you. Knowledge is your crown and understanding is your staff and when they are with you, you can posses no greater treasures and love gives,

you strength how to live."

आप वास्तव में आदरणीय हैं मनु जी,

इति एक बात सदा याद रखना, जब हम प्यार चाहने लगते हैं तो शायद प्यार करना भूल जाते हैं, प्यार करने से प्यार शायद मिल जाए, पर प्यार चाहने से तो प्यार कभी नहीं मिलता।

इति झूल गई,

चाहने और न चाहने के क्षणों में।

अचानक उसके मुख से निकला—

आप ठीक कहती हैं, चाहने की ही गलती शायद मैं कर बैठी।

इसीलिए खोने का एहसास मुझे प्रति पल ग्रस रहा है।

क्या प्रतीक्षा फलीभूत होगी ?

इसके द्वारा मैं अपनी चाहत को पा सकूंगी ?

शायद आप भूल जाती हैं कि प्रतीक्षा और चाहने में बड़ी गहरी रिश्तेदारी है। प्रतीक्षा और चाहना दोनों ही सामाजिक अपराध हैं।

फिर मनुष्य यह अपराध क्यों करता है ?

आप सच कहती हैं, अपराध करना मनुष्य का काम नहीं, यह अधिकार तो देवताओं के पास ही सुरक्षित रहने देना चाहिए।

मनु न चाहते हुए भी मुस्करा दी।

इतनी देर के बाद भी मनु इस महिला के आने का कारण नहीं समझ पाई थी, पर हाँ बातें interesting थीं इसकी।

इति कहीं खो गई।

मानो उसके शब्दों की माला, एहसास की शृंखला में बराबर पिर नहीं रही थी।

मनु ने कहा,

आप जानती हैं हमारे में एक बड़ी भारी कमजोरी है।

क्या ?

इति की दृष्टि उठी और मनु के चेहरे पर चिपक गई।

हम···

जो जीवन भोगा गया उसे सहसा ही श्रेष्ठ की संज्ञा दे देते हैं जो जीवन भोगा जा रहा है उसे अधम की संज्ञा दे देते हैं और जो जीवन आने वाला है—काल्पनिक है उसे हम श्रेष्ठतम समझ लेते हैं।

इन्हीं तीन काल चक्रों में हम आप, यह विश्व जन्म से मृत्य तक घूमता रहता है।

बिटिया साढ़े चार बज गए,

मनु वास्तव में चौंक गई,

पाँच घण्टे,

क्यों ?

लगता है कि आपकी वेदना का काँटा कोई पुरुष है, सच्चाई तो यह है कि नारी की सभी समस्याओं का कारण प्रमुख रूप से पुरुष ही होता है। उसका यह समझना की वह योग्य है, उसका अवलम्बन पुरुष है, वह पराधीन है यही सारे शब्द एक साथ मिलकर धीरे-धीरे उसे अवहेलना, अत्याचार और उत्पीड़न रूपी कुएँ में धकेल देते हैं, आप जो कोई भी हों लेकिन इतना जरूर समझ लीजिए की माँगने से न कभी कुछ मिला है न मिलेगा, जो आप पाना चाहती हैं उसे आपको अपने ही पुरुषार्थ से प्राप्त करना पड़ेगा।

मनु जी आपसे मिलकर बहुत दुख हुआ,

क्या ?

सहसा मनु का मुँह आश्चर्य से खुला ही रह गया,

सच कह रही हूँ,

मन और बुद्धि से लड़ते-लड़ते आपके पास लड़ने ही आई थी मैं डॉ० अनाश की विद्यार्थिनी हूँ, पता नहीं—कब से उन्हें प्यार करने लगी···मनु बीच में ही बोली और अब ऐसा लगा की तुम्हारा प्यार मैं छीन ले रही हूँ, क्यों ?

जी हाँ आप सच कह रही हैं। मैं वर्षों तक तो उनसे कह ही नहीं पाई और जब कहने का साहस जुटाया तो मुझे लगा की आप दीवार बनी खड़ी हैं। मुझे लगता था कि प्रोफेसर मात्र मेरे हैं,

आपके आने के उपरान्त मैं जब-जब उनके घर गई मुझे नौकर ने बताया की वह आपके घर है। मैं जो वर्षों में नहीं कर सकी वह आपने दो वर्ष में कर लिया अत्यधिक वेदनाओं से भरे पीड़ाओं के समुद्र में, मैं गोते लगा रही हूँ, डॉ० अनाश को मुझसे छीनने वाली आप हैं।

आप ?

मनु ठहाका मारकर बहुत देर तक हँसती रही जब उसकी हँसी का आवेग कम हुआ तब वह अपने स्थान से उठकर इति के पास आई—उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए बोली,

अब समझी तुम्हारे आने का प्रयोजन !

फिर एकदम गम्भीर होकर बोली,

बहन प्यार क्या माँगने की वस्तु है ?

या,

किसी से छीन लेने की ?

जो माँगा जाए वह प्यार हो ही नहीं सकता और जो वस्तु छीनकर ली

जाए वह सुखद कैसे हो सकती है ?

इति ने अनुभव किया, मनु के चेहरे पर अगणित भाव आ जा रहे थे।

देखो इति,

इस पर भी तुम्हें बता दूँ कि मेरे और प्रो० अनाश के बीच में प्रेम का कोई स्थान नहीं है। स्त्री और पुरुष में और भी एक बड़ा प्यारा रिश्ता होता है और वह है दोस्ती का, डॉ० इंसान ने मुझे कभी एक स्त्री के रूप में नहीं देखा, वह मुझे सदा इंसान के रूप में देखते हैं, और हम दोनों में एक अच्छे इंसान का रिश्ता कायम है, स्थिर है, स्त्री और पुरुष से कहीं ऊँचा रिश्ता। धरती बार-बार करवट लेती है मुझे दुख है कि उस हर करवट में एक ही कहानी दबी रहती है, 'स्त्री' 'पुरुष' प्यार करने वाले के पास इतना अविश्वास, प्रारम्भ से ही छीना-झपटी, इसका भविष्य क्या होगा कभी सोचा स्त्री ने ? समय तेज गति से आगे बढ़ता जा रहा है लेकिन मैं अनुभव करती हूँ कि सच्चाई यह नहीं है, समय स्थिर नहीं रहता तभी तो हम अपने ही व्यूहों से निकल नहीं पाते।

वास्तव में—,

समय स्त्री और पुरुष रूपी महामानवों की विद्रूप भावनात्मक जलूस का एक दरिद्र साझीदार बन गया है।

मनु जी,—,

इति, कितनी ही कड़वाहट लेकर तुम यहाँ आई हो फिर भी तुम मुझे अच्छी लगीं, डॉ० अनाश को मुझसे वापस माँगने का साहस—

बहुत बड़ा काम है यह।

विष प्याले में नहीं होता,

विष की सबसे तीव्र और विषाक्त मात्रा तो शब्दों में है।

और जानती हो इसका स्वाद एकमात्र पत्थरों ने नहीं चखा है।

इंसान तो इसका स्वाद बार-बार चखता है, कराहता है—पर मरता नहीं है।

दीदी !

इति चेतन-अचेतन की परिपूर्णता में मानव सामान्य बुद्धि भी खो देता है।

जानती हो ऐसे में क्या होता है ?

इति की प्रश्नवाचक दृष्टि स्थिर हो गई।

वह या तो डॉ० अनाश जैसा देवता बन जाता है या फिर जानवर।

आप ठीक कहती हैं,

इति,

एक विश्वास होता है और दूसरा अविश्वास, विश्वास सफल और गतिशील होता है जहाँ अविश्वास का प्रभुत्व रहता है, जानती हो वहाँ जीवन धूमिल नहीं बाँझ हो जाता है।

दीदी प्रेम···,

प्रेम एकतरफा नहीं होता,

तुम मुझसे छोटी हो इसलिए बार-बार कह रही हूँ कि प्रेम न तो माँगा जाता है और न ही छीना जाता है। एकतरफा प्रेम भावनाओं के फ्रेम की एक निर्जीव तस्वीर होता है, इति प्रेम के अर्थ पहचानो प्रेम रूपी रास्ते की परिक्रमा के चरम सत्व का एहसास करना सीखो।

जीवन का यही सार तत्व है।

क्या कभी किसी ने नीले आसमान से पूछा है कि तुम क्यों नंगे या आधे ढँके रहते हो फिर प्रेमी से यह पूछने का अधिकार ले लिया जाता है कि क्या तुम मुझ से प्रेम करोगे ?

यह पूछने के, कहने के प्रश्न नहीं होते,

यह अनुभूतियाँ हैं।

तुम अपने ही आन्तरिक भावों से कट गईं, इसीलिए तुम यहाँ आईं, जानती हो जब हम अपने ही आन्तरिक भावों से कटते हैं तो उस अन्तरंग संवाद सूत्र से भी कट जाते हैं जो हमें अपने से, अपने विश्वासों से बाँधे रखता है।

यह स्थिति बड़ी पीड़ादात्री है।

एक छोटे से शब्द ने हमारी तुम्हारी ही नहीं संसार की नींद हराम कर दी है, यह शब्द बम नहीं है, मौत भी नहीं है और न ही है जन्म, यह शब्द है 'प्यार'।

मैं यह तो नहीं कह सकती कि—,

डॉ० अनाश···और तुम—

एक मिनट तक गहरी निस्तब्धता कमरे में व्याप्त रही।

मौन मनु ने ही भंग किया।

इति !

आदमी के मन में यथार्थ की दुनिया के साथ ही इच्छा की भी एक दुनिया रहा करती है जब की इस इच्छा की दुनिया का यथार्थ की दुनिया से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

जानती हो प्यार क्या होता है ?

एक व्यक्ति आकर किसी की नपी तुली जिन्दगी में—अनियमबद्धता, विस्मयकारी आवेग और रोमांचों की लहर जगाकर, आँख में किरकिरी डाल दे तो उस पीड़ा को ही प्यार कहते हैं।

फिर ?

जीवन के अर्थ ?

चरित्र के अर्थ ?

जीवन का अर्थ मृत्यु है,

और,

चरित्र का अर्थ तो जीवन भर ढूँढ़ते रहने पर भी कभी-कभी नहीं मिलते,

दीदी,

एक बात और बता दूँ, ध्यान से सुन लो कि डॉ० मनु शंकर में किसी पुरुष को अपना बनाने का साहस ही नहीं है, फिर तुम्हीं सोचो कि किसी से छीनने का साहस उसमें कहाँ से आएगा?

इति के मन मस्तिष्क पर अपराध बोध की रेखाएं गहरी होती गईं,

उसे लगा की उसने यहाँ आकर जीवन की सबसे बड़ी भूल की है,

अब उसे यहाँ से शीघ्र चला जाना चाहिए।

जाने से पूर्व क्या वह इस महिला से क्षमा माँगे जिसे पता नहीं बातचीत के दौरान दीदी की संज्ञा दे डाली थी।

पर कुछ ना कह पाई,

नमस्ते,

के लिए हाथ जुड़े वाणी की वाचालता मौन थी।

तीन रात व्यतीत हो गईं,

मनु सो नहीं सकी,

डॉ० अनाश और इति,

कालेज में भी उसका मन नहीं लगा।

कई बार उसके मन में आया की वह डॉ० अनाश से पूछे कि इति कौन है?

कितनी बार उसने उनके घर नम्बर डायल किया और काट दिया।

वैसे तीन दिन से प्रोफेसर उसके यहाँ नहीं आ रहे थे,

उनके विश्वविद्यालय में रुमानिया का डेलीगेशन आया हुआ था। इसी कारण वह अत्यधिक व्यस्त थे।

इति प्रोफेसर से प्यार करती है?

उसने भी तो प्रो० आलेक्सांद्राविनो से प्यार किया था।

कितने वर्ष हो गये,

वह तो उस अध्याय को विस्मृति के कराल में कब की भटका चुकी,

इति ने फिर से अतीत की परतें खोल दीं।

परतों, परतों से ढँका उसका जीवन,

कितने वर्ष हो गये,

प्यार।

प्यार।

प्यार।

इति अपने प्यार के लिए उससे लड़ने आई थी,

लेकिन !

मनु तुमने तो बात करने का भी अवसर नहीं दिया, सब कुछ छोड़कर चली आई।

और,

प्रो० आलेक्सांद्राविनो जिन्होंने प्यार के लम्बे-लम्बे वायदे किए थे उन्होंने मुड़ कर यह जानने का भी प्रयत्न नहीं किया की मनु क्यों वापस चली गई ?

सहसा ?

मनु के पास आया उनकी शादी का निमंत्रण, उन्हीं के हाथ से लिखा हुआ।

मनु कैसे भूल सकती थी ?

सब कुछ भूलने के उपरान्त भी,

उस दिन, आमंत्रण-पत्र पढ़कर उसकी आँखें छलछला आई थीं,

हृदय में बरछी चुभ गई थी,

क्यों ?

क्यों ?

एक नहीं, अनेक अनुत्तरित प्रश्न हैं उसके जीवन में जिनके उत्तर कभी उसे नहीं मिले,

अध्यायों को पलटकर पढ़ने में मनु का विश्वास ही नहीं।

अतीत की कहानियाँ !

प्रारम्भ से वाद विवादों, तर्कों से दूर रहने वाली मनु कहाँ तक उलझती रहेगी ?

विदेश से वापस लौटने के बाद तो सोच ही सोच थे, उसके मित्र या आने जाने वालों में एक ही नाम शेष है प्रो० अनाश।

और आज तो—,

पढ़ना और पढ़ते रहना ही मनु के जीवन का व्यसन हो गया ड्रग का नशा भी इतना तेज नहीं होगा जितना की आजकल मनु को किताबों का हो गया था।

प्रो० अनाश,

इति आज एक नई कल्पना दे गई,

जो उसके मस्तिष्क में कभी थी ही नहीं,

वह पूछेगी प्रोफेसर से,

नहीं वह इति की चर्चा कभी नहीं करेगी, वह नहीं चाहती की इस प्रकार की बातचीत उन दोनों के बीच हो इस अध्याय की समाप्ति तो उसके इसी बैड-रूम में ही हो जानी चाहिए, जहाँ आज तक प्रो० अनाश के कदम पड़े ही नहीं।

धारा माँ ने आकर बताया,
बिटिया प्रो० साहिब आए हैं।
उस क्षण लाखों बिच्छुओं ने एक साथ कितने ही डंक मार दिए।
पर क्यों ?
कारण !
शीघ्र ही सामान्य हो गई।
पूरे एक सप्ताह से दार्शनिक महोदय कहाँ थे ?
कृत्रिम रोष दिखाते हुए मनु ने पूछा।

तुमने भी तो एक फोन नहीं किया डॉ० ने उपालाम्भ दिया, घण्टी व्यवस्तता में टकराहट पैदा नहीं करती ?

और फिर दोनों एक साथ मुस्करा दिए।
हालाँकि,

जीवन रूपी इतिहास के उत्थान और पतन की कहानियाँ मनु के हृदय को झझकोर रही थीं, और कहीं दूर अन्तस में प्यार रूपी वृक्ष आँधी में थर-थर काँप रहा था। और इस काँपते पेड़ के नीचे एक मानवीय आकृति खड़ी थी और वह थी इति की जिसे कुछ दिन पूर्व तक वह जानती भी नहीं थी। लेकिन आज वह संशकित थी···क्यों ?

जानती हो मनु विश्वविद्यालय में जो डेलीगेशन आया है उसमें एक बर्गसा का शिष्य भी है। उसने बताया की विकास की व्याख्या एक ऐसे सृजन के रूप में की जा सकती है जिसमें मूल गतिशील तत्त्व से विविध दिशाओं में विकास होता है। विकास की प्रक्रिया में प्राण, प्रवाह, आत्मविभाजन के द्वारा नए-नए रूप ग्रहण किए जाते हैं। नवीन उत्पति को पूर्णतया नवीन ही माना है।

लेकिन,
यह उचित नहीं।
क्यों ?

क्योंकि विकास को निरन्तर बहने वाला प्राण प्रवाह मानना उचित नहीं। प्राण प्रवाह द्वारा सुन्दर, सुव्यवस्थित और समन्वित सृष्टि की रचना कैसे सम्भव है।

मनु सब कुछ भूल गई,
प्रो० अनाश के साथ बह गई मि० बर्गसा—
विचार···विचार।

सच तो यह है मनु कि वह अपने रहस्यवादी अनुभव को सामान्य मनुष्य की भाषा में समझाना चाहता है।

जीवन की विविध गतियों, आरोहों, और अवरोहों, प्रगतियों और अवगतियों

में जो अन्तर्दृष्टि बर्गसा के दर्शन में दृष्टिगोचर होती है वह बहुत कम उनेक समकालीन पाश्चात्य दार्शनिकों में पाई जाती है। हमें यह तो मानना ही पड़ेगा की जगत में कोई पूर्व निर्धारित व्यवस्था नहीं है अपितु परिवर्तन है और उसके गर्भ में नई-नई प्रेरणाएं छिपी हुई हैं तथा उसकी प्रगति की सम्भावनाएं असीम हैं।

इसीलिए ब्रिटीश अनुभववादी परम्परा में डेविड ह्यूम ने अनुभववाद को उसकी पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया तथा काण्ट के अनुसार, ज्ञाता स्वयं ज्ञेय नहीं हो सकता।

दर्शन तो आत्मगत है।

यदि प्रत्यक्ष अभाव में वस्तु का अस्तित्व नहीं होगा तो हमारे प्रत्यक्ष का विषय न होने पर वस्तु का अस्तित्व कैसे रहेगा ?

देखो मनु यह तो इसलिए होता है, क्योंकि वह वस्तु अन्यमनस या महान मनस ईश्वर के प्रत्यक्ष का विषय रहती है।

अच्छा !

अगर यह प्रत्यक्ष वस्तु है तो कल्पनाओं और यथार्थ वस्तुओं में क्या अन्तर ?

कल्पनाएं हमारे मनस की उत्पति हैं और यथार्थ वस्तुएं महान मनस की उत्पति हैं। यहाँ ज्ञान और वस्तु का अन्तर नहीं बल्कि मनस का प्रत्यय और ईश्वर के मनस के प्रत्यय का अन्तर है।

देखो वस्तु का ज्ञान मनस पर निर्भर है अस्तु वस्तु का अस्तित्व भी मनस पर निर्भर है।

वास्तव में वस्तु का एकमात्र गुण प्रत्यक्ष होना नहीं है,

प्रत्यक्ष के अभाव में भी उसका प्रत्यक्ष होता है मनस पर तो केवल प्रतिभाओं का अस्तित्व निर्भर है, वस्तु का अस्तित्व प्रत्यक्ष तथा संकल्प पर निर्भर नहीं करता है।

एक चन्द्रमा का प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग अनुभव करता है, अर्थात सभी के मन का चन्द्रमा अलग-अलग है, परन्तु वास्तविक चन्द्रमा तो एक ही है, क्योंकि उसका अस्तित्व व्यक्तिगत मनसों पर नहीं बल्कि महान मनस पर निर्भर है।

वैसे भी जगत तो दो भागों में बँटा है।

हाँ, प्रपंचात्मक और परमार्थ।

परमार्थ बुद्धि की मान्यताएं हैं।

और,

प्रपंचात्मक जो कि बुद्धि और इन्द्रियों के साँचे के माध्यम से हमें प्राप्त होता है। प्रपंचात्मक वस्तुओं का ज्ञान प्रत्यक्ष होता है।

मनु एक पल अनाश को निहारती रही।

और फिर बोली,

अनाश ईश्वर क्या है ?

क्यों मनु आज ईश्वर कैसे याद आ गया ?

आ नहीं गया, वह तो सदा ही याद रहता है।

मनु दर्शन के इतिहास में आदि काल से ही ईश्वर के अस्तित्व पर चर्चा होती रहती है। वैसे भी ईश्वर की सत्ता असीम होने के कारण वह सीमित बुद्धि का विषय नहीं है, फिर भी हमारी मानव बुद्धि ईश्वर को लेकर सोचती है, विचार करती है, ईश्वर अतिन्द्रिया है। उसे इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता। ईश्वर के अस्तित्व और वस्तुओं के अस्तित्व में मौलिक अन्तर है।

ईश्वर तो।

"आइया अजीज" हैं

अर्थात

"प्रियतम"

उसका अधिकांश भाग वर्णन सादृश्य से भरा पड़ा है। यदि कहीं अन्तर है तो मात्र अभिव्यक्ति की शैली में, वास्तव में शक्तियों का जोड़-तोड़ वही है।

सच तो यह है कि वही एकमात्र यथार्थ है।

वास्तव में हम उसके कृतज्ञ हैं, उसको न देखते हुए उसका अस्तित्व हर पल हम अपने चारों ओर अनुभव करते हैं।

वह शाश्वत है सुखद है—मौन है।

उसकी कल्पना ही अत्यन्त शान्तियुक्त एवं प्रकाशपूर्ण विवर हैं।

और आज जानती हो मनु हम उसके प्रति शंकालु क्यों हो गये हैं ?

मनु अभी तक चुपचाप अनाश की बातें सुन रही थी लेकिन उसके मुख के भाव स्पष्ट बता रहे थे कि उसे प्रोफेसर के कथन की यथार्थता में शंका है।

प्रो० अनाश भी इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि मनु का विश्वास ईश्वरीय सत्ता से उठ तो नहीं गया है पर अकसर डगमगा जाता है।

अकसर जब भी दोनों की चर्चा लम्बी छिड़ जाती तो उसका अन्त असीमित, अपरिचित सत्ता ही होता है।

देखो मनु,

हमने आजकल एक नयी भाषा निर्मित कर ली है और जानती हो इस भाषा के पास न तो शब्दों की सामर्थ्य है और न ही अभिव्यंजना की सामर्थ्य—

और इसी कारण इसमें स्पन्दन का अभाव है।

स्पन्दन और निश्छलता जैसे शब्दों का अर्थ भी आज पहचाना जाएगा डॉ० साहिब।

बहुत देर बाद मनु बोली।

पहचाना जाता है अभी भी मनुष्य ने जब कि बहुत कुछ खो दिया है पर क्षमता नहीं खोई आज भी वह सामर्थ्यवान है।

विवेकी है।

मनु मुस्करा दी।

गतिविहीन मत करो मनु और न ही निर्लिप्ता को बरबस ओढ़ लो।

जीवन के निर्बाध रूप से बहते रहने में ही सार्थकता है।

निर्बाधता आएगी कहाँ से ?

अचानक मनु के मुँह से निकल गया।

क्यों ?

आश्चर्य से प्रोफेसर ने पूछा।

जीवन की निर्बाधता को मनुष्य निर्बाध गति से बहने कहाँ देता है ?

तुम अगर प्यार···?

प्यार की बातें मत करो प्रोफेसर मैं तो आज तक प्यार के अर्थ ही नहीं समझ पाई।

यही तो तकलीफ है मनु,

व्यक्ति ने प्यार के बहुत छोटे अर्थ कर दिए हैं, प्यार अर्थात् व्यक्तिगत हित के संदर्भ में ही उसके अर्थ आँक दिए हैं। मुझे तुमसे अगर कहीं भी जरा सी चोट लगती है तो मैं निराश हो जाता हूँ और मेरा प्यार उसी क्षण समाप्त हो जाता है।

कुछ मिला नहीं, कुछ पाया नहीं,

इसका अर्थ प्यार नहीं है, ऐसा नही होता,

अपने मन की चार दीवारी से बाहर निकलो मनु और फिर प्यार के अर्थ ढूँढ़ो तो पाओगी प्रकृति में हर चीज प्यार करने लायक है, मनुष्य के पास घृणा, नफरत तो बहुत कम है।

लेकिन,

होता क्या है जानती हो ?

वेदना की छोटी सी श्रृंखला भी उसके लिए अत्यधिक लम्बी हो जाती है और सुख की अत्यधिक बड़ी श्रृंखला खुलते ही वह सुख के एहसास को भूल जाता है। इसीलिए सुख कम और दुख अधिक अनुभव करता है। और अपने इस दुख को हृदय की समस्त स्मृति, विस्मृति को ही ज्ञान का केन्द्र बना लेते हैं। दुख नाम की कोई वस्तु ही नहीं। प्राण सदैव आत्मा के संग रहते हैं। प्राण शाश्वत हैं। प्राण सुख-दुख की धुरी में कहीं फिट नहीं होते लेकिन जीव इस जगत में इन्द्रिया-तृप्ति के लिए आता है, इसीलिए उसे मनुष्य देह मिली है और इस देह को प्राप्त करते ही वह परिवार, राष्ट्रीयता एवं रीति रिवाजों में बँध जाता है।

बँधना सुख का द्योतक है,
दुख का नहीं ।
सुख का भी क्या कोई संविधान है !
मनु संविधान क्या है ?
कभी जानने का प्रयत्न ही नहीं किया—अतीत—

इतिहास साक्षी है कि संविधान की क्लोज वास्तव में मनुष्य के संवेदनशीलता की ही यात्रा है।

तो,
अनाश क्या तुम यह कहना चाहते तो कि मैं मनुष्य नहीं,
मात्र काली हूँ,

जो मात्र एक कड़वाहट लेकर ही जीती है। जिसके पास श्वेत···पवित्र··· प्यार का एहसास ही नहीं ।

नहीं मनु,
नहीं,
कौन कहता है कि तुम्हारे पास कड़वाहट की कालिमा है,
तुम तो मनु,
चाँदनी की किरणों से उजली और दूध की श्वेत फेनिल धाराओं से धुली हो,
नहीं अनाश,

मेरे पंखों में कौमार्य ने बेबसी, लाचारी और घृणा रूपी छोटे-छोटे न जाने कितने पर्वत बांध दिए हैं। फिर···, आज तुम मुझे समझा रहे हो कि मैं उड़ती नहीं।

यह मेरे जीवन की त्रासदी नहीं तो क्या है ।
मनु ऐसा कुछ नहीं है,
और,
अगर कुछ है तो तुम्हारा एहसास और उस गतिहीन को सोचने का भ्रम,
उसकी दिशा,
फिर !

सच तो यह है मनु की तुम कोई क्षण अपने अतीत का छोड़ने को तैयार नहीं हो,

जिद्दी बच्चा जिस प्रकार जिद की पोटली अपने सीने से चिपकाए फिरता है उसी प्रकार तुम भी जी रही हो ।

बुरा मत मानना !

बहुत दिनों से सोच रहा था, पर कह नहीं पाया, आज कहता हूँ कि केवल प्रेम से जीवन जिया नहीं जाता, ज्वालामुखी के वृक्ष पर बैठकर कोई पक्षी गाना

नहीं गाता इतिहास साक्षी है,

कि,

जिसने उसकी शिक्षा स्वीकार की है, उसने अकेले ही चलने के व्रत का शुभारम्भ किया है।

अगर,

तुम इसे इतना ही पीड़ादायक समझती हो तो वहाँ से आई क्यों, लड़ते-झगड़ते, रोते-हँसते वहीं रहकर अपना जीवन यापन करतीं—

लेकिन,

वह भी नहीं, तुम सामान्य जीवन नहीं जी सकतीं, तुम हर पहलु में विशिष्टता लेकर जीना चाहती हो, फिर जब कोई विशिष्ट टकराता है तो यह पीड़ा क्यों ?

मनु आसमान के बदलते चित्रों को कोई भी उड़ती हुई परी अपने आँचल में कभी भी समेट पाई है ?

नारी तो धैर्य की पराकाष्ठा है,

तुम्हारे ज्ञान का आकर्षण,

तुम्हारे व्यक्तित्व का माधुर्य,

क्षण-क्षण नया सा है।

अनाश !

हाँ मनु,

उठो और बाहर आओ,

अनाश मुझे भी···,

हाँ अनाश !

आकाश के तारों को स्पर्श करने की चाह है किन्तु कल्पना के वायुयान के बिना मैं कैसे उठूं, किसको छुऊं ?

कल्पना में क्यों ?

हकीकत में उड़ो मनु, और नीलाकाश को छू लो।

तुम्हारा जीवन सामान्य नहीं, लेकिन जभी, जब की तुम,

अतीत से दूर हो सको,

वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध में सोच सको,

अनाश,

हाँ,

पता नहीं क्यों मुझे हर स्थान पर काँटे ही मिलते हैं, मनु की आवाज भर्रा गई।

जानती हो मनु, इतिहास के पृष्ठों पर जिनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है उन लोगों के जीवन का इतिहास भी यही रहा है। उन्हें फूलों की सेज

कभी नहीं मिली है।

तुम भी उन्हीं में से एक हो।

आलेक्सांद्राविनो से अगर तुम्हें पराजय मिली है तो इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं की नियति को दोष देकर तुम स्वयं को निराशा के गर्त में डाल दो,

मनु !

मृत्यु या बादलों को कोई स्मरण नहीं रखता, लेकिन जीवन और सूरज को कोई भूलता नहीं और यही कारण है कि मानव जीवन सतत आगे चलता रहता है एक बार,

कार्ल मार्क्स से किसी व्यक्ति ने पूछा,

सुख क्या है ?

उत्तर मिला,

संघर्ष

मनु मुस्करा दी,

कुछ क्षण के उपरान्त बोली,

मन में अशान्ति का तपता सूरज, और बाहर से मुख पर मुस्कराहट इसी सफल अभिनय का नाम है, पाश्चात्य शिष्टाचार।

अगर वास्तव में तुम इतना समझती हो फिर तो तुम्हें कभी दुखी होना ही नहीं चाहिए।

मनु !

मानव जीवन,

असंख्य सफलताओं और विफलताओं से पूर्ण है उससे विराग करने की आवश्यकता नहीं।

अनाश सोचती हूँ,

आकांक्षा हिमालय के मनोरम पर्वतों पर विचरती रहती है किन्तु नियति नाम का भीषण झझकोरा अकस्मात् आकर आकांक्षा की प्रबल चाह को छिन्न-भिन्न कर देता है।

और मनुष्य यह विस्मय भरा दृश्य देखता रह जाता है।

सच तो यह है,

कि,

जीवन की जटिल पहेलियाँ एक रहस्य बन गई हैं।

सजीले स्वप्न अश्रुओं में झर गए।

कुछ नहीं मनु, ऐसा कुछ नहीं है।

सच यह है कि···,

सत्य को पुनः पाने के लिए बड़ी साधना और शक्ति चाहिए।

साधना, शक्ति,

हाँ मनु।

सत्य हमें जँचता है, आस हमें प्यारी लगती है, विश्वास हमारे दाएँ-बाएँ घूमता हैं, कैसे हम मान लें या कैसे हम विश्वास करें की यह सब स्वप्न है ?

फिर भी,

अनाश।

अतीत के कितने संदर्भ धुँध भरे सागर में डूबते नहीं है, एक छोटे से टापू की भाँति लुका-छिपी करते रहते हैं।

क्योंकि,

तुम,

उसी एक टापू से चिपकी बैठी हो।

मनु की दृष्टि उठी और अनाश के चेहरे पर जाकर चिपक गई।

प्रयोग मैं,

जीवन ढूंढ़कर,

किस,

सार्थकता पर पहुँचना चाहते हो ?

अपने पास लाना चाहता हूँ।

अनाश बोल तो गया, पर उसने स्वयं ही अपनी जबान काट ली।

इस असमय के वाक्य से मनु न जाने उसके सम्बन्ध में क्या सोचे ?

उसका कदापि यह आशय भी नहीं था।

मनु के चेहरे की प्रतिक्रिया जानने के लिए स्वाभाविक रूप से उसकी नजरें मनु की नजरों से जा टकराईं।

कितने क्षणों का मौन छाया रहा।

काफी देर के बाद अनाश स्वयं ही उठकर खड़ा हो गया

कमरे के बाहर तक गया पुनः वापस आया,

एक क्षण तक मनु का मुख निहारता रहा और फिर धीरे से मनु का मुख ऊपर उठाया।

"मनु पवित्रता वह सम्पति है जो प्रेम के बाहुल्य से ही पैदा होती है।"

रवीन्द्र,

के इस वाक्य का अर्थ समझने का प्रयत्न करना,

समझीं ?

कुछ पलों की शान्ति के उपरान्त,

मनु ने गाड़ी को स्टार्ट करने की आवाज सुनी।

चाहकर भी,
मनु आज कालेज नहीं गई ।
उसका मन रो रहा था ?
या
हँस रहा था ?

जब दोनों प्रक्रिया मनुष्य एक ही समय भोगता है, तब उसका अन्दाजा एकमात्र भोगने वाला ही अनुभव कर सकता है ।

कुछ ऐसी ही अवस्था से मनु गुजर रही थी ।
उसे विवेकानन्द का एक वाक्य बार-बार याद आ रहा था ।
Arise awake and stop not, till the goal of life is reached.
लाइफ का गोल क्या है ?
कहाँ पहुँचना है ?
प्रो० अनाश,
एक मधुर व्यक्तित्व,
एक प्यारा दोस्त,
एक सच्चा हमदर्द,
एक सच्चा साथी,
एक सच्चा रहनुमा,
समाज का एक विशिष्ट व्यक्तित्व ।

प्रो० आलेक्सांद्राविनो में भी उसने इसी से मिलते-जुलते गुण देखे थे, शायद इससे भी अधिक ।

फिर उसने धोखा कैसे खाया ?
वह तो प्यार का एक आकर्षक महल बनाना चाहती थी,
जिसको देखकर लोग ताजमहल को भूल जाएं,
ऐसा व्यक्तित्व निर्माण करना चाहती थी,
लोग,
शीरी फरहाद, हीर राँझा, रोमियो जूलियट को भूल जाएं ।
प्यार का पारदर्शी महल जिसमें दो प्राणी—
मनु, आलेक्सांद्राविनो—बस और कुछ नहीं,
हाँ पारदर्शी महल जहाँ से सब उसे देख सकें,
क्यों यह सब कुछ छिन्न-भिन्न हो गया ?
क्या उसके प्यार में सच्चाई नहीं थी ?
कहाँ कमी थी ?
कौन ?

उसे !

आलेक्सांद्राविनो से दूर कर गया।

और आज,

प्रो० अनाश,

इति !

हाँ, इति ही नाम था उस लड़की का,

उसकी शंका ?

उसका साहस !

प्रो० अनाश के प्रेम में ही तो वह यह पागलपन कर सकी।

पगली !

मुझसे,

बेचारी,

प्रेम की भीख माँगने आई थी।

या ?

बेचारी,

न कुछ माँगने आई थी, न कुछ खरीदने अपनी असहायता का बोझ अकेले नहीं सह सकी उसे बाँटने आई थी।

क्यों ?

विचारों के चकडोल में झूलती रहती है।

क्या प्रो० अनाश को नहीं पता की इति उनसे प्यार करती है ?

भारत लौटे उसे पाँच वर्ष से अधिक हो गए, पिछले पाँच वर्ष से प्रोफेसर रोज ही उसके घर आते हैं, पर उसने कभी भी इति का जिक्र नहीं किया।

पुरुष—पता नहीं क्या कहना चाहती थी पर स्वयं ही अपने से अपने शब्द छिपा गई।

क्या यह भी आलेक्सांद्राविनो जैसा कोई खूबसूरत धोखा है।

एक वर्ष साथ रहने पर भी वह आलेक्सांद्राविनो को नहीं पहचान पाई। अगर, उसकी नन्हीं गुलाबी दोस्त उसे सत्य से अवगत नहीं कराती तो जीवन का परिच्छेद क्या होता ?

माता, पिता, देश बन्धु, समाज संस्कृति अपना सब कुछ खोकर भी क्या वह प्यार के अर्थ समझ पाती ?

कराहती रहती !

कौन सा आदर्श ?

कल्पना !

बस कल्पना ही बन जाती।

इस हवन कुण्ड की अग्नि में,
वह झुलसती रहती,
या,
स्वाहा हो जाती।
आज,
अनाश के साथ…!
इति का आकर्षण…,
स्वाभाविक है, आकर्षण तो मनुष्य की स्वाभाविक प्रक्रिया है,
स्त्री और पुरुष,
दोनों की निकटता, यह सब सोचने के प्रश्न कहाँ होते हैं ?
अगर इस सम्बन्ध में पूछना ही चाहती है तो आकाश से,
क्यों ?
प्रो० आलेक्सांद्राविनो से क्यों नहीं पूछा उसने ?
क्या पूछना ही उसकी नियति है।
उसने तो जीवन इस विश्वास के साथ प्रारम्भ किया था—

भारतीय नारी के पास एक विशिष्ट गुण है, जिसे पाकर वह 'मानवी' से देवी बन सकती है।

वह त्यागमयी माता है।
प्यार करने वाली पत्नी है।
स्नेहमयी बहन है,
समझने वाली दोस्त है,
और,
आज्ञाकारिणी पुत्री है।
जबकि,

आज के जाग्रत देशों की स्त्रियों के पास भौतिक जीवन के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। भले ही स्त्री होने के कारण शाब्दिक अर्थों से वह भलीभांति परीचित हो पर जीने की वह कला नहीं आती जो भारतीय नारी के इन गुणों को पल्लवित करती है।

उसके अहम् को कितनी ठेस लगी थी,
जब,

उसे पता लगा की आलेक्सांद्राविनो ने उससे झूठ बोला आहत का ही तो परिणाम था,

कि,
उसने प्रोफेसर से बात करना भी उचित नहीं समझा,

फिर,
आज,
वहीं,
नहीं मनु,
मन के किसी कोने से आवाज आई,
दोनों में बहुत अन्तर है,
दोनों को एक करने का प्रयत्न नहीं करो।
प्रोफेसर अनाश,
एक सुख है।
और,
कार्ल मार्क्स के अनुसार,
सुख का अर्थ है संघर्ष।
लेकिन यह पुरुष···।
क्या वह प्रोफेसर अनाश से शादी···!
क्या सोचने लगी वह—?
मुस्करा दी मनु।
क्यों प्रोफेसर आलेक्सांद्राविनो उसके मन मस्तिष्क में···?
क्यों यह नाम बार-बार याद करती है?
बहु पत्नियों का नायक,
उसी हीर ने,
उसी जूलियट ने,
अपनी शादी का आमंत्रण भेजा था।
क्यों नहीं भूल जाती ?

सभी को अपना जीवन जीने का हक है, सभी को अपना अध्याय प्रारम्भ करने का अधिकार है।

मनु !
तुमने कौन-सा अध्याय प्रारम्भ किया ?
क्या वह पूर्ण है ?
इति !
मिथ्या क्या है ?
अनाश !
वह पूछे ?
इति से मिले ?
इति !

इति !

इति !

नहीं !

शंका प्यार का समान्तर अर्थ नहीं है,

वह अनाश से बात करेगी !

लेकिन क्यों ?

यह उनका निजी जीवन है,

वह अनाश की मित्र है।

किसी ने कहा···,

मनु मित्रता की भी मर्यादाएं होती हैं, मर्यादा भी तो कभी-कभी पूर्ण होने पर एकाकार का काम कर जाती है, लगता है वह वास्तव में पागल हो गई है।

रामू काका ने आकर सूचना दी कि मनु मेम साहिब आई हैं।

अनाश पाश्चात्य दर्शन की पुस्तक में डूबा हुआ था चौंककर खड़ा हो गया।

उसकी तो कल्पना से भी परे था कि मनु उसके घर। पाँच वर्ष में यह पहला दिन,

पुस्तक हाथ में लिए ही वह दौड़कर बाहर आया,

सामने इति खड़ी थी।

गुड ईवनिंग प्रोफेसर साहिब,

गुड ईवनिंग, आओ !

मैंने आपको डिस्टर्ब तो नहीं किया ?

नहीं विद्यार्थी को गुरु के घर आने का अधिकार है, गुरु और शिष्य का संबंध परेशान या डिस्टर्ब करने का नहीं होता।

मुस्करा दिए प्रोफेसर अनाश।

फिर आप मुझे देखकर चौंक क्यों गए ?

रामू काका को तुम्हारा नाम याद नहीं रहा होगा मेरी एक मित्र है उन्होंने उनका नाम बताया मैं आश्चर्य से घिर गया और सामने तुम्हें देखा।

निराशा हुई।

प्रोफेसर मुस्करा दिए।

इसी मुस्कराहट को अपने अस्तित्व में आत्मसात् करने के लिए कितने वर्षों से पीड़ित है इति, कितना भव्य और मधुर व्यक्तित्व। इस पुरुष को पाना मात्र उसकी महत्वाकांक्षा ही नहीं, जीवन का लक्ष्य है।

क्या सोचने लगी ?

इति सपाट धरातल पर लौट आई।

पढ़ाई कैसी चल रही है? कहाँ तक पहुँची तुम्हारी थीसिस?

सर, थीसिस तो एक बहाना है।

क्यों, तुम्हें तो डॉ० सत्यार्थी जैसे विद्वान का विद्यार्थी होने का गर्व होना चाहिए।

लेकिन आपके अण्डर काम करने का···

स्टोप इट इति, बोलो चाय पिओगी या कॉफी?

रहने दीजिए।

अरे, तुम्हारे साथ में भी पी लूंगा।

मन ही मन बुदबुदाई इति···,

आप मेरे साथ जन्म-जन्म तक चाय पीते रहें इसी मृगतृष्णा के पीछे तो इति भटक रही है।

मृगतृष्णा नहीं, यही सत्य है उसके जीवन का,

रामू काका आप हमें चाय पिलाएंगे? आवाज देते हुए प्रोफेसर अनाश ने कहा।

इति की ओर मुखातिब होते हुए प्रोफेसर ने कहा, "हाँ बताओ कैसे आई?"

सर एक प्रश्न बहुत दिनों से दिमाग में चक्कर काट रहा है,

सोचा आज थोड़ा सा समय आपका नष्ट कर दूं।

हाँ कहो!

सर न्याय दर्शन के प्रवर्त्तक महर्षि गौतम थे फिर अक्षपाद कौन थे? तथा आधुनिक काल के न्याय दर्शन को हम किस नाम से सम्बोधित करेंगे?

इति, महर्षि गौतम का नाम ही अक्षपद है, न्याय का दूसरा नाम ही अक्षपाद दर्शन है, न्याय दर्शन का मूल ग्रन्थ गौतम का न्याय सूत्र है, प्राचीन समय में न्याय को प्राचीन न्याय कहते हैं, तथा आधुनिक काल के न्याय को नव्य न्याय कहते हैं, प्राचीन न्याय के अन्तर्गत गौतम का न्याय सूत्र उसके भाष्य उसके विरुद्ध किए गए आक्षेपों का खण्डन है और नव्य न्याय का प्रारम्भ गंगेश की तत्व चिन्तामणि से हुआ, इसका प्रारम्भ मिथिला में हुआ तथा इसके पठन-पाठन का केन्द्र बंगाल नवद्वीप रहा।

आज इति,

मन और ज्ञान दोनों को ही सहेज कर यहाँ आई थी।

हाँ,

अपना प्रभुत्व स्थापित करने।

वह प्रोफेसर अनाश को बता देना चाहती थी वह भी विश्वविद्यालय की बुद्धिमान छात्रा है, दर्शन में उसकी भी गहरी पैठ है।

अतः पूछ बैठी,

सर वस्तुवाद…?

इति, न्याय दर्शन तर्क प्रधान वस्तुवाद है, यह वह मत है जिसके अनुसार बाह्य वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञान पर निर्भर नहीं होता, मन ज्ञाता से स्वतंत्र रहता है। वास्तव में न्याय का वस्तुवाद अनुभव एवं तर्क पर अवलम्बित है और वस्तुओं की अभिव्यक्ति को ज्ञान या बुद्धि कहते हैं।

चाय की ट्रे टेबिल पर रखते हुए रामू काका ने पूछा।

चाय बना दूं,

नहीं रामू काका आप जाइए हम बना देंगे।

चाय का कप देते समय इति ने जानबूझकर प्याला हाथ से छोड़ दिया।

प्रोफेसर की सारी पैंट गीली हो गई,

कोई बात नहीं, मैं चैंज…,

सॉरी सर,

कहते हुए इति अपने दुपट्टे से प्रोफेसर की पैंट साफ करने लगी।

यह क्या कर रही हो?

काश कि आप इसे समझ सकते,

इति ने कस कर प्रोफेसर के दोनों हाथ पकड़ लिए,

प्रोफेसर न जाने कितने युगों से आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ पर आप तो हिम की वह चट्टान हैं जिसकी बर्फ शायद कभी पिघलती ही नहीं।

इति,

आज मुझे मत रोकिए। आज प्रकृति पुरुष के पास आई है।

तुम पागल तो नहीं हो गई हो?

इति को अपने से दूर करते हुए प्रोफेसर ने कहा।

हाँ, प्रोफेसर, मैं पागल हो गई हूँ तभी तो नारी सुलभ लज्जा मर्यादा, सब कुछ छोड़कर आपके पास चली आई।

इति,

शाम हो गई है, अपने घर जाओ। प्रोफेसर के शब्दों में क्रोध था।

अपने हृदय के जलते चिरागों को लेकर उसकी बत्तियों को ज्वाला का रूप देने आई हूँ।

बिना ज्वाला बने कैसे चली जाऊँ!

इति तुम पागल हो गई हो!

नहीं प्रोफेसर, आज नहीं जाऊँगी, शायद आपको नहीं मालूम जब औरत निर्लज्जता की सीमा पार कर जाती है फिर उसके वापस जाने का प्रश्न उठता ही नहीं।

इति, आवेग में प्रोफेसर की आवाज अष्ठम सुर को छू रही थी।

शोर मत मचाइए प्रोफेसर ।

जहाँ तक मैं चली आई हूँ वहाँ से अब मेरा अकेले जाना असम्भव है ।

अचानक इति की आवाज एकदम बदल गई ।

प्रोफेसर मैं आपसे प्यार करती हूँ, मैं आपको पाना चाहती हूँ ।

आपके बिना मेरा जीवन शून्य है, एक निविड़ अंधेरी रात प्रोफेसर मैंने हर पल अपने को आपकी बाँहों में पाया है, मेरा रोम-रोम आपकी प्रतीक्षा कर रहा है ।

इति,

तुम दर्शन की विद्यार्थिनी हो, प्रखर भविष्य है तुम्हारा फिर तुम कहाँ जा रही हो ? यह कौन-सा दर्शन है, कौन-सी संस्कृति है तुम्हारी ?

प्रोफेसर प्यार का न तो कोई दर्शन होता है और न कोई संस्कृति आप तो बहुत विद्वान हैं, आप नहीं जानते की प्यार की रेखाओं से ही तो संस्कृति और दर्शन का आकार बनता है, आप ही बताइए ऐसी कौन-सी संस्कृति है जिसकी नींव का पत्थर प्यार न हो, बताइए ऐसा कौन-सा दर्शन है जिसने मानवीय भावनाओं को छोड़कर अपनी भूमि बनाई हो, नहीं प्रोफेसर नहीं प्यार शाश्वत सत्य है और इसी के आगे पीछे नाचते हैं, दर्शन, संस्कृति, इतिहास,—जो भी चाहे आप इसे नाम दे दीजिए ।

इति !

तुम्हारे कथन में आडम्बर नहीं है, पर प्यार का Concept वह नहीं जो तुम कर रही हो, और न ही प्यार प्रदर्शन की वस्तु है ।

प्रोफेसर आदि अनादि काल से क्या स्त्री को अपना पति चुनने का अधिकार नहीं, उसे अपना जीवन साथी चुनने के लिए किसी की आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं ।

प्रोफेसर स्त्री पुरुष के प्यार पर ही तो यह सृष्टि, समाज परम्पराएं, ज्ञान, धर्म, दर्शन की दीवारें खड़ी हुई हैं,

एक क्षण चुप रही इति पुनः बोली,

प्रोफेसर क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ ?

क्या मैं बुद्धिमान नहीं हूँ ?

क्या मैं विश्वविद्यालय की एक होनहार छात्रा नहीं हूँ ?

तुम में सब कुछ है इति,

फिर,

लेकिन तुम में वह नहीं है जो एक भारतीय पति चाहता है ।

अपनी पत्नी में ।

इति चीख पड़ी ।

क्या चाहता है, भारतीय पति, एक नौकरानी ।

मापदण्ड भाग-2

अगर तुम ऐसा समझती हो तो ठीक है, सबकी अपनी-अपनी समझने की शक्ति होती है, भारतीय पति अपनी पत्नी को नौकरानी नहीं समझता, वह अपनी पत्नी को मात्र पत्नी ही बने रहने देना भी नहीं चाहता, आज वह उसे प्रेयसी के रूप में पाना चाहता है, माँ के रूप में उसकी श्रद्धा करना चाहता है, बहन के रूप में उसे स्नेह करना चाहता है और पत्नी के रूप में समर्पण चाहता है।

इति,

एक क्षण रुककर पुन: बोले,

इतने रूप वह उसमें एक साथ देखना चाहता है। एक साथ इतने रूपों को सँभालने की शक्ति तुममें नहीं है।

प्रोफेसर की आवाज गम्भीर हो गई।

इति उत्तेजना में काँपने लगी।

जीवन के सत्य को सत्य के रूप में ही स्वीकार करना चाहिए,

तुम मेरी छात्रा हो,

एक अच्छी विद्यार्थिनी हो,

तुम्हारे विश्वविद्यालय का प्रोफेसर होने के कारण तुम्हारे भविष्य के प्रति कुछ मेरे भी उत्तरदायित्व हैं। इति हम पाश्चात्य संस्कृति में नहीं पल रहे और कितनी भी नकल करें, नकल कभी असल में परिवर्तित नहीं होती। हमारी धरती बड़ी नम धरती है इसीलिए इसे कृषि प्रधान देश कहा जाता है,

यह लज्जा और मर्यादा की धरती है, बिना बोले बहुत कुछ समझने की हमारी बहुत प्राचीन प्रणाली है। हमारे पास शब्दों से अधिक शक्तिशाली भाषा मौन की है। जानती हो हमारे यहाँ प्यार के लिए कोई शाब्दिक भाषा नहीं है, वह तो नेत्रों से बात करता है नेत्रों से, हम जीवन की दौड़ में भाग लेते तो हैं, पैर हमारे अपने होते हैं लेकिन कल्पनाओं की दुनिया में विचरने के कारण हम अपना सब कुछ खोकर उस दुनिया में पहुँच जाते हैं, जहाँ हम अपने जीवन के एक पल का भी सामंजस्य वास्तविकता के साथ स्थापित नहीं कर पाते, यह विदेशी संस्कृति यह विदेशी सभ्यता के रंग में हम कुछ पाते तो नहीं हैं पर अपना बहुत कुछ खो देते हैं।

तुम भी उस पथ की ओर अग्रसर हो रही हो, अभी भी समय है इति, जीवन में कुछ ऐसी वस्तुएँ होती हैं जिनके साथ लेन-देन, छीना-झपटी का प्रश्न ही नहीं आता। चार शब्द अंग्रेजी के बोलने से, होंठों पर लिपस्टिक लगा लेने से या माँ को माम और पिता को डैड कह देने से, हम विदेशी नहीं हो जाते। सच तो यह है कि इस लिप्सा में जीवन से मृत्यु तक हम अधकचरा जीवन जीते रहते हैं। जो

पाना चाहते हैं वह तो पाना सम्भव नहीं होता, जो हमारा है जिसे हम अपना समझते हैं वह भी हमें छोड़कर चला जाता है, इस मृगमरीचिका में से निकलना सहज नहीं।

तुम मेरी मित्र हो सकती हो, बहन हो सकती हो पर पत्नी नहीं।

मैं फिर से कहूँगा भारतीय पति को नौकरानी नहीं चाहिए। लेकिन हाँ वह कितना भी अपने को आधुनिक कहे पर प्यार करने के लिए एक सजी-सजाई गुड़िया ही चाहिए, बिस्तर पर छुई-मुई सी लहराती लता ही चाहिए, भोजन के समय वात्सल्य की मूर्ति जो प्यार से उसे देख सके और ममत्व से खिला सके और अध्ययन कक्ष में उसे वह स्त्री चाहिए जो शंकर, काण्ट और बेकन पर चर्चा कर सके। और आराम के कुछ क्षणों में वह साथी चाहिए जो उसके टेन्शनों की भागीदार बन सके।

क्या मैं इस काबिल नहीं ?

बहुत काबिल हो सकती हो, पर पत्नी के रूप में—तुम्हारा पति बनने की चाहना मेरे हृदय में नहीं है। तुम मेरी शिष्या हो और तुम्हारा भविष्य मंगलमय हो मेरे हृदय में यही कामना सदा तुम्हारे लिए रहेगी क्या किसी शिष्या ने आज तक अपने गुरु से विवाह नहीं किया ?

जरूर किया होगा,

फिर ?

सबकी अपनी-अपनी मान्यताएं हैं, मेरी दृष्टि में गुरु शिष्या का सम्बन्ध हिमालय और गंगा जैसा है हम अपने रिश्ते भूल गए हैं,

यह भी एक बहुत बड़ा कारण है हमारे नैतिक पतन का।

इति,

हमने उस भूमि पर जन्म लिया है जिसमें केसर की पवित्र सुगन्ध है, दूध की निर्मलता है, इनके द्वारा एकाग्रता, एकनिष्ठता और सत्यता आती है सारे आदर्श सुगन्ध की इस हवा का स्पर्श पाकर ही पल्लवित होते हैं, कहते थे न कि हमारे देश में दूध की नदियाँ बहती थीं,—वह क्या था ? इशारा था हमारे जीवन की सहजता का, जो, सतत बहती रहती थी समस्त बुराइयों के आन्दोलनों को अपने में समेट कर भी हम सामान्य गति से चलते रहे, हमारे मन में निर्मलता हो स्वच्छता हो,

गंगा कितनी पवित्र है इति, किनारों की सब गन्दगी अपने में समेट कर बहा ले जाती है उसमें कहीं अवरोध नहीं है, वह अपनी पावनता को स्थिर रखते हुए सतत बहती रहती हैं। तुम भी गंगा हो। जाओ बहुत देर हो गई।

प्रोफेसर आप यह क्यों नहीं कहते की आप किसी और से प्यार करते हैं इसलिए इति वह लड़की नहीं ! प्यार करना तो जीवन का एक आवश्यक अंग है

इति। और फिर यह कोई जरूरी नहीं कि जिससे हम प्यार करते हैं वह हमसे भी प्यार करे उस पर हम पति पत्नी का अनिवार्य सिक्का लगा दें। प्यार तो बहुत विशाल है, यह कहीं छोटा और गन्दा होकर अश्लील रूप न ले ले—इसलिए हमारे सभ्य समाज ने छोटी सी उम्र में हमें चादर उढ़ा दी। उस चादर के नीचे हम इकट्ठे खेलते लड़ते और एक दिन बिना समझे ही एक-दूसरे से शरमाने लगते व एक-दूसरे के जीवन का एक आवश्यक हिस्सा बन जाते और फिर इस रिश्ते में हमारे सारे प्यार आकर एक साथ गले लग जाते थे।

इस विवाह को आप आदर्श विवाह मानते हैं ?

जरूर, उसमें थोड़ा सा परिवर्तन···,

आज के युग···,

बीच में ही बात काटकर प्रोफेसर बोले,

इति आज और कल की बात नहीं, परिवर्तन तो युग की माँग है पर नींव तो सुरक्षित रहनी ही चाहिए। उस समय विद्या का यह रूप नहीं था जो आज है, युग की आवश्यकता के अनुसार आज की नारी के लिए भी डिग्रियाँ प्राप्त करना आवश्यक हो गया है, सभ्यता किसे कहती हो इति—सभ्यता परिवर्तनशील है, पाषाण युग की सभ्यता, आर्य सभ्यता, वैदिक सभ्यता आदि से लेकर इक्कीसवीं सदी की सभ्यता तक पहुँचते-पहुँचते न जाने कितनी सीढ़ियों को पार किया है इस सभ्यता ने। जीवन में आमूल परिवर्तन हो जाए पर शब्द और अर्थ तो वही रहेंगे।

इति रूप और शरीर न आस्था का साधन बन सकता है, न प्यार का, प्यार जीवन की कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है।

यह प्यार नहीं प्यार की अवहेलना है और जानती हो ऐसे प्यार की कोख से विनाश का जन्म होता है। अमानुषिकता, षड्यन्त्र, हत्याएँ और रक्तपात का जनेता यह प्यार ही है, यह निरंकुश सत्ता को जन्म देता है, यह समर्पण नहीं, विश्वास नहीं, रक्त स्नान और अग्नि स्नान की तैयारी में तत्पर रहता है।

इति के अन्दर की स्त्री हिंसक हो उठी।

प्रोफेसर···,

इति···,

आज मैं याचक बनकर तुम्हारे द्वार पर आई थी।

और,

अब प्रयत्नशील रहूँगी···

कि तुम्हारा विनाश कैसे हो ? प्रोफेसर ने इति का अधूरा वाक्य स्वयं पूरा कर दिया।

अब तुम जा सकती हो।

इति की आँखें आँसूओं से भरी थीं और उसका अपमानित हृदय सर्प की भाँति

नहीं विशाल अजगर की भाँति फुँकारें ले रहा था। जिसमें वह मात्र सब कुछ स्वाहा कर देना चाहती थी।

काश की इस समय उसके हृदय के अन्तर्गत धधकते वाडानल को कोई देख पाता।

क्या से क्या हो गया ?

काश्मीर के काले गुलाबों की घाटी जैसी अमूल्य वह अपने को समझती थी।

समझे भी क्यों नहीं।

साँचे में ढली सुघड़ देहयष्टि,

सघन श्याम जम्बूवन जैसा गदराया उसका यौवन रस सम्भावर से छलकते उसके अनवत अंग, एक दृष्टि पाने को व्याकुल—यह समस्त लोग,

सम्पूर्ण विश्वविद्यालय का केन्द्र,

लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा पात्री।

और,

एक सामान्य प्रोफेसर अनाश उससे कहे कि तुम जा सकती हो,

उसकी संवेदना ही नहीं उसके स्त्रीत्व की मृत्य हो गई इस,

आग में वह भस्म हो गई।

नहीं,

वह एक नया रूप लेकर जन्म लेगी,

उसका लावण्य,

उसका यौवन,

भस्म होने के लिए नहीं है।

वह,

और,

भस्म।

प्रोफेसर ने मेरे प्यार को ठुकरा दिया—मैं भी अब देखूंगी।

ईर्ष्य, वैमन्स्यक विचारों से घिरी वह गाड़ी चलाए जा रही थी।

और साथ थी,

रिक्तता, शून्यता।

अचानक एक भव्य बँगले के सामने उसने ब्रेक मारा। झटके के साथ चरमरा कर गाड़ी खड़ी हो गई, दरवाजे पर खड़े सिपाही ने लम्बा सलाम किया।

शोभन साहिब हैं,

नहीं मेम साहिब,

कहाँ होंगे, इस समय,

पूछकर बताता हूँ,

कुछ ही क्षणों के उपरान्त वह स्पोर्ट्स इण्टरनेशनल में गाड़ी पार्क कर रही थी।

दो दिन से प्रोफेसर अनाश घर नहीं आए थे,

पाँच वर्ष के लम्बे समय में यह पहला अवसर था जब बिना किसी पूर्व सूचना के प्रोफेसर नहीं आए थे।

क्या हुआ होगा ?

मनु का ध्यान न चाहकर भी बार-बार इस प्रश्न में उलझ जाता।

प्रोफेसर उसके कौन हैं ?

उत्तर वह प्रश्न से भी पहले दे देती।

प्रोफेसर अनाश एक अच्छे इन्सान हैं, उसके अच्छे और शुभचिन्तक सहृदय मित्र हैं, जिन पर किसी भी सीमा तक विश्वास किया जाता है।

किस आधार पर उसकी यह मित्रता है ?

यहाँ आधार या स्वामीत्व का प्रश्न ही कहाँ ?

क्या उसकी,

यह मित्रता !

स्वार्थ का सुरक्षा कवच नहीं ?

नहीं,

स्वार्थ का कदापि नहीं,

लेकिन कवच अवश्य है।

परितापों से बचने का कवच,

उसके स्नेह और पुरुषार्थ का कवच,

क्या, अनाश की तबियत तो खराब नहीं हो गई,

कहीं एक्सीडेन्ट तो नहीं हो गया ?

टेलीफोन करने को उसने रिसीवर उठाया पर उसके हाथ रुक गए।

ऐसा कुछ होता तो क्या रामू काका टेलीफोन नहीं करते, पहले भी कई बार; अनाश जब कहीं बहुत व्यस्त हो जाता तो रामू काका ही उसे सूचना देते।

उसका अस्तित्व ही क्या ?

रिसीवर उसके हाथ में था कि आवाज से चौंक गई,

क्यों मुझे टेलीफोन कर रही थीं ?

सामने !

सामने प्रोफेसर अनाश खड़े थे।

चेहरा बता रहा था कि या तो बहुत परेशान है या अस्वस्थ।

जी हाँ,

प्रत्युत्तर देते हुए मनु ने पूछा,

क्या हो गया आपको ?

धारा माँ जल्दी से पानी और चाय लाना।

क्या बात है ?

मनु ने अपना प्रश्न पुनः दोहराया। तबियत बहुत खराब हो गई ?

शरीर से तो स्वस्थ हूँ मनु,

पर मन रूपी भट्टी में जल रहा हूँ पिछले दो दिन से हर क्षण यही सोचता रहा हूँ कि हम कहाँ जा रहे हैं ?

हमारी नियति क्या है ?

हमारे नैतिक 'मापदण्ड'···,

पूछ सकती हूँ इस उद्विग्नता का कारण,

जरूर मनु,

बहुत भयभीत हो गया हूँ, यह आधुनिकता हमें कितनी तेजी से रसातल की ओर ले जा रही है कभी सोचा तुमने ?

इस रसातल में आकण्ठ डूब कर तो मैं बाहर आई हूँ, अगर तुम न मिलते माँ, पिताजी का संरक्षण नहीं मिलता।

क्या मेरे पास होता कोई नैतिकता का 'मापदण्ड'

नहीं कभी नहीं,

अनाश मेरी तो चेतना में ही दरारें पड़ गईं थीं।

मनु,

चेतना में हर क्षण नई-नई समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं,

आत्म-परिणामों की गति अत्याधिक सूक्ष्म होती है तुमने तो समत्व के शिखर से ममत्व की चोटी···

पर यह प्रयत्न शूल बनकर बिंध गया है।

प्रयत्न मात्र प्रयत्न होते हैं,

नहीं मनु यह भूल है,

प्रयत्न मात्र प्रयत्न नहीं होते।

यह समझना, वह नहीं समझना, यह भी तो स्वयं का स्वार्थ है,

नहीं,

अच्छा छोड़िए, आप इतने परेशान क्यों ?

परेशान नहीं मनु, मानसिक अस्वस्थता के तीव्र ज्वर से पीड़ित हूँ।

औषधि।

तुम्हारा सानिध्य।

प्रोफेसर को तुरन्त अपनी भूल का एहसास हुआ। मनु से क्या बताए

वह···?

एक पल···

विचारो,

की विजली कौंधी,

क्या वह भी वही भूल तो नहीं करने जा रहे जो इति ने की है।

हाँ,

अनिवार्य सत्य यही है।

क्या सोचने लगे आप ?

मनु जानती हो ?

मनु की दृष्टि उठी मानो पूछ रही हो, क्या अनाश ?

कुछ क्षण दोनों ही खामोश रहे।

प्रोफेसर मानो सोच रहे हों कहाँ से प्रारम्भ करूँ, शब्दों की रूपरेखा अभी तक तैयार नहीं कर पा रहे थे वह।

मनु प्रोफेसर के चेहरे पर बनती बिगड़ती रेखाओं को मनोयोग से पढ़ने का यत्न करती रही।

मनु !

जी,

फिर एक क्षण की खामोशी व्याप्त हो गई, मौन उन्होंने ही तोड़ा उसका,

मनु,

जी,

पुनः वही शब्द।

हमारे विश्वविद्यालय में एक लड़की है,

उसके मन में आया की वह कहे इति, पर मनु खामोश रही,

इति,

अच्छा,

बड़े बाप की उच्शृंखल बेटी के सभी अवगुण उसमें मौजूद हैं।

स्वाभाविक है।

दो दिन पूर्व घर पर आई थी।

मनु ने देखा, प्रोफेसर के मुख पर असंख्य यातनाओं की रेखाएँ बड़ी तेजी से इधर-उधर चक्कर काट रही हैं।

वह धीरे से बोली,

आपसे प्रणय निवेदन करने,

बिच्छू के डंक से भी अधिक तीव्र झनझनाहट से बिलख गई अनाश की सम्पूर्ण देह।

तुम जानती हो ?

एक सप्ताह पूर्व वह मेरे पास आई थी।

यहाँ ?

हाँ।

हूँ।

उसे ऐसा विश्वास था कि मैंने उससे आपको छीन लिया है।

कहने को तो मनु बड़ी सहजता से यह वाक्य कह गई। पर उसने स्वयं महसूस किया की लज्जा की लाली से उसका मुख आरक्त हो गया है।

मनु ने ही नहीं,

प्रोफेसर अनाश ने भी उस लाली को पढ़ने का प्रयत्न किया।

प्रोफेसर।

हाँ,

जाते समय,

शायद उसको विश्वास आ गया हो कि मनु की छीना झपटी में आस्था नहीं है।

मुस्करा दी मनु,

मैं तो सोचता ही···

मनु ने वाक्य पूरा कर दिया,

हमारा चारित्रिक पतन हमें कहाँ ले जाएगा।

मनु एकदम गम्भीर हो गई।

प्रोफेसर किसी को चाहना, किसी को प्यार करना क्या चरित्रहीनता कहलाती है,

यह प्रश्न तो मैं आज तक हल नहीं कर पाई।

प्यार करना चारित्र्य की दुर्बलता नहीं है।

फिर,

प्यार का नग्न इजहार नट का प्रदर्शन जैसा प्रतीत होता है।

मैंने प्रो० आलेक्सांद्राविनो के साथ नट का प्रदर्शन किया था ?

नहीं,

फिर,

मनु, वहाँ अन्तराल था हमारे दर्शन का, हमारी संस्कृति का इसलिए तुम्हें मानसिक यातनाएँ झेलनी पड़ीं। तुम भूल जाती हो कि तुम्हारे जीवन के धरातल और वहाँ के जीवन के धरातल में जमीन आसमान का अन्तर है, तुम्हारी भावनाओं ने तुम्हें विवश किया डॉ० आलेक्सांद्राविनो की ओर लेकिन जब तुम्हें पता लगा की वे विवाहित हैं तब तुम्हारी संस्कृति ने तुम्हें झझकोर दिया और

तुम्हारी सभ्यता ने तुम्हें विवश कर दिया की तुम शीघ्र अपना अपराध स्वीकार कर लो और उस रास्ते से हट जाओ। इच्छा करना, इच्छा व्यक्त करना या इच्छा की पूर्ति करना कहीं कुछ असंगत नहीं है पर सभी की माँग है कि अपने साथ विवेक और मर्यादा को अवश्य साथ रखो। नारी जब मर्यादाओं को तोड़ने का प्रयास करती है तो वह अपना नारीत्व खो देती है, फिर न तो वह पुरुष की भाँति कठोर हो पाती है न नारी की भाँति कोमल।

मनु सम्भलना जीवन का यथार्थ और कटु सत्य है।

जो सम्भाल नहीं पाते वह डूब ही जाते हैं।

उनकी नियति डूबना ही होती है।

ज्ञान अनुभव द्वारा प्राप्त होता है मस्तिष्क में अनुभव के पूर्व कोई ज्ञान रहता ही नहीं।

जानती हो मनु—?

लौक ने ज्ञान का केवल एक मार्ग माना है—अनुभव, अनुभव के द्वारा प्रत्यय मिलता है, ज्ञान केवल प्रत्ययों तक ही सीमित है और प्रत्यय हमारे अनुभव तक। सुख प्राप्त करने की इच्छा और दुःख दूर करने की इच्छा मानव प्रकृति है, मनुष्य प्रकृति से ही शान्ति प्रिय जीव है—और यह हमेशा स्मरण रखना की सुखों को पाने के लिए कुछ नियमों का पालन करना अत्यधिक आवश्यक है। उसी के द्वारा मनुष्य स्वयं सुखी होता है और उसके द्वारा ही उसका निर्मित समाज भी सुखी होता है, इसलिए मन को जागृत और सक्रिय रखने की बहुत आवश्यकता है। ईश्वर का हम सहज प्रत्यक्षानुभाव नहीं कर सकते लेकिन अपनी बुद्धि द्वारा मानवीय सुख-दुःख की अनुभूतियों का हम सहज और प्रत्यक्षानुभाव अवश्य कर सकते हैं और ज्ञान की इस प्रत्यक्ष सुख की उपलब्धि के लिए ही तुम आलेक्सांद्राविनो जैसे महापंडित दर्शन शास्त्री को एक मिनट में छोड़कर चली आईं।

ज्ञान कोई गणित नहीं है मनु और प्यार कोई विज्ञान नहीं है लेकिन हाँ दोनों में से कोई भी एक सत्य को प्राप्त करके उससे अन्य निश्चयात्मक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

मनु जिस सत्य को मन नहीं स्वीकारता उसे अपने विचारों में सम्मिलित करना न न्याय होगा न बुद्धिमानी

तो क्या प्रोफेसर मीमांसा या यथाशक्ति विश्लेषण कर उसे टुकड़ों में बाँट देना ही जीवन है?

नहीं मनु।

फिर···,

अन्तर्बोध द्वारा जो ज्ञान होना है वह भ्रामक इन्द्रिय ज्ञान या कल्पित ज्ञान से भिन्न है। अन्तर्बोध से जो ज्ञान होता है वह स्वयं सिद्ध है। उसके लिए प्रमाण

की आवश्यकता नहीं होती; क्योंकि उसकी निश्चयात्मकता उसमें ही निहित रहती है, प्यार भी तो अन्तर्बोध का ज्ञान है।

आलेक्सांद्राविनो पर शंका हुई और वही शंका सत्य की प्राप्ति का साधन बन गई।

तुम्हारी नैतिकता ने तुम्हारी मर्यादा का साथ दिया और आज इसी कारण बिना किसी राग-द्वेष से तुम उस अध्याय को भूलने में सफल हुईं।

अनाश तुम समझते हो मैं भूल गई ?

हाँ, यथार्थ को भूल गईं, याद है तो केवल भावनाओं के साथ जुड़े हुए पल।

क्या ?

हाँ मनु, अगर कहीं पीड़ा पहुँचती है तो उसका कारण है भावनाएँ मानवीय स्पन्दन। जानती हो देकार्ते तो दर्शन को भी गणित का एक आवश्यक अंग मानता था। उसने वैज्ञानिक पद्धति से ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त ही अपनी नौकरी छोड़ दी थी नहीं तो वह एक सैनिक था,

तो क्या उसने प्यार को भी गणित की एक प्रावलम समझा ?

अनाश !

वास्तव में देकार्ते तो एक गणितज्ञ था जिसकी रुचि दर्शन शास्त्र में थी।

ठीक कहती हो उसका दार्शनिक विचार गणित का ही सामान्यीकरण है उसने रेखागणित की पद्धति को ही दर्शन के क्षेत्र में लागू करने का प्रयत्न किया।

हाँ, मैंने कहीं पढ़ा है कि उसकी एक पुस्तक का नाम 'पद्धतियों पर विचार' है। पद्धतियों में परम्परा और जीवन की आवश्यकताओं का भी रूप कहीं-न-कहीं तो आया ही होगा।

जानती हो उसमें उसने लिखा है कि मुझे गणित की निश्चयात्मकता के कारण उसमें आनन्द आता था, पर मुझे उसका सही उपयोग नहीं मिला था, मुझे आश्चर्य होता था कि ऐसी असंदिग्ध नींव पर कोई ज्ञान रूपी महल खड़ा नहीं हो सका है।

लेकिन आपको यह तो मालूम ही होगा कि उपयोग को ही ज्ञान की कसौटी माना है और वेकन के अनुसार उपयोग ज्ञान का लक्ष्य है।

मैंने भी आलेक्सांद्राविनो को अपने जीवन का सबसे अमूल्य उपयोगी सत्य समझा था पर जब मैंने अनुभव किया की मेरा यह उपयोगी लक्ष्य मुझे प्राप्त नहीं हो रहा है तो मैं वापिस चली आई।

मैं कब इस सत्य को अस्वीकार करता हूँ।

अनाश !

वह समय अब चला गया जबकि स्त्री को पुरुष नाम के व्यक्ति की आवश्यकता होती थी जिसके बिना शून्य के अतिरिक्त उसके जीवन में कुछ होता ही नहीं था।

मनु !

पहले मुझे सुन लीजिए, मैं पुरुष विरोधी नहीं हूँ, मेरा आज भी विश्वास है कि स्त्री की अपेक्षा पुरुष अधिक शक्तिशाली होता है। स्त्री पुरुष को चाहती है उसके स्पर्श की कामना से ही पुलकित हो जाती है, उसे स्वर्गिक सुख की प्राप्ति होती है लेकिन उसी पुरुष को जिसकी वह कामना करती है, और अगर वह किसी भी कारण से उसे प्राप्त नहीं कर पाती तो आज की तरह 'पुरुष' पाने के उसे पुरुष की आवश्यकता नहीं है।

कोई भी ज्ञान कोई भी दर्शन इस कसौटी पर सदा खरा उतरेगा हालांकि इसी के साथ यह भी अकाट्य सत्य है कि इस स्थिति पर पहुँचने के लिए उसे समाज से अधिक अपने से लड़ना पड़ता है।

मैं मानता हूँ मनु !

मैं अनुभव भी करता हूँ कि आज की नारी बुद्धि के उस प्रकाश को लेकर अपनी परम्पराओं की लीक से हटी है।

अनाश, पुरानी परम्पराओं को तोड़ने के लिए वह आज भी कटिबद्ध नहीं है लेकिन उसने उस रीढ़ की हड्डी को तोड़ने का अवश्य प्रयत्न किया है जिसे वर्षों से उसकी पीठ पर अनावश्यक रूप में जबरदस्ती से चिपका दिया था। अनाश वह नवीन युग की प्रवर्तक है।

नीरस और अर्थहीन विचारों में आज उसकी श्रद्धा नहीं रही है—

उसे पुरानी घिसी-पिटी परिपाटियों में कोई सार दृष्टिगोचर नहीं होता।

और हाँ,

दर्शन शास्त्र का भी तो एक ऐसा युग आया था जबकि उसकी दशा उस मूर्ति के समान हो गई थी जिसकी पूजा तो श्रद्धापूर्वक की जाती हो पर मूर्ति स्वयं बेजान है, गतिहीन है।

दर्शन को भी लोग श्रद्धा की ही दृष्टि से देखते थे पर उसका विकास सर्वथा बन्द था। इसका भी मुख्य कारण यही था कि दार्शनिकों की अंधविश्वासी एवं कोरी कल्पनाओं की नींव पर दर्शन की अट्टालिका बनाने का स्वप्न देखते थे, नारी और दर्शन शास्त्र में जितनी समानता है, अन्यथा कहीं देखने को नहीं मिलेगी, सच तो यह है कि नारी शास्त्र भी एक आवश्यक विषय बनना चाहिए।

जब अनाश यहाँ आया था, तब उसका मस्तिष्क फन कुचले अजगर की भाँति छटपटा रहा था, यहाँ आकर चर्चा ने जो मोड़ लिया वह कितने सुन्दर जीवन की धरातल पर विचरने लगा।

क्या सोचने लगी ?

कुछ तो,

इति सोचने की वस्तु नहीं है।

असंगत विषय का सर्वत्याग से अच्छा कोई उपाय नहीं,

क्या सोच रहे हो ?

सोच रहा था कि तुम मुझसे भी बड़ी दर्शन शास्त्री हो, अगर आप कहते हैं तो मैं अस्वीकार क्यों करूँ ।

दोनों जने मुक्त कंठ से देर तक हँसते रहे ।

हँसी का वेग जब कम हुआ तो प्रो० अनाश ने कहा ।

मनु नारी दर्शन का जन्म नहीं दिया जा सकता,

क्यों ?

शास्त्र को बनाने के लिए शास्त्रियों को जन्म लेना पड़ता है और जानती हो शास्त्रियों के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है,

The greatest, brightest, meanest of mankind.

नारी के लिए ऐसा कहा जाएगा तो हमारी संस्कृति की नीवें हिल जाएँगी ।

यह पाश्चात्य दर्शन शास्त्रियों के लिए कहा गया है कि यह भारतीय दर्शन शास्त्रियों के लिए नहीं,

मनु मुस्करा दी ।

जानते हो प्रो० आलेक्सांद्राविनो के सम्पर्क को मैंने एक सत्य समझा, पश्चिम में ज्ञान की खोज केवल ज्ञान पिपासा की शान्ति के लिए की जाती है, वहाँ ज्ञान का लक्ष्य ज्ञान है, पर भारत में ज्ञान को क्रिया का साधन मानते हैं, सत्य की साधना ही भारतीय दर्शन की विशेषता रही है

इसीलिए मनु···।

यहाँ ज्ञान हो जाने पर, उसी प्रकार साधनों की अनवरत चेष्टा करने की प्रेरणा दी जाती है, जैसा कि मैं—तभी तो मैंने कहा कि—तुम श्रेष्ठ दर्शन शास्त्री हो ।

अच्छा चलो मैं तो दर्शनशास्त्री बन गई

क्यों ?

पर तुम्हारी उस वेचारी इति···।

तुम भी मजाक अच्छा कर लेती हो ।

मजाक नहीं अच्छे मित्र को सलाह दे रही हूँ, वह तुमसे प्यार करती है, शादी कर लो उससे,

अनाश अचानक गम्भीर हो गए

धीरे से बोले,

मनु अभी तुमने ही कहा था न कि परम्पराओं को तोड़ने का नाम मर्यादाओं को नष्ट कर देना नहीं है ।

हाँ !

शादी जानती हो आत्मा का दर्शन है, मात्र एक समझौते का भार उठाना ही शादी का नाम नहीं है।

शादी अकर्मण्यता का दोष नहीं।

संशयवाद का आविर्भाव नहीं,

कोई क्रान्ति करने का ध्वज नहीं,

किसी तर्क की मिथ्या कसौटी नहीं,

इसके लिए तो परिपक्वता और साम्य की आवश्यकता है, जहाँ यह नहीं वहाँ शादी एक साथ चार दीवारों में रहने वाले स्त्री और पुरुष का नाम है।

फिर भी एक गति तो है ही,

इसे तुम गति कहती हो ?

तुम मनु।

मनु का चेहरा मानो बुझ गया हो,

कुछ टीसें ऐसी होती हैं जिन्हें व्यक्त करने के लिए ढूंढ़ने पर भी शब्द नहीं मिलते।

विश्व के समस्त शब्द कोश एकत्रित करने के उपरान्त भी नहीं,

तुम ठीक कहते हो

इतने में ही पास रखे टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

अनाश ने धीरा माँ को आवाज देकर एक कप चाय पिलाने की प्रार्थना की,

जब प्रो० अनाश यहाँ आए थे तो मानसिक रूप से अत्यधिक त्रस्त थे।

पिछले दो दिन से वह इति के सम्बन्ध में ही सोच रहे थे।

विचारों की शृंखला इतनी लम्बी हो गई थी की नख-शिख तक उसमें लिपट कर रह गये। यहाँ आकर उन्हें लगा कि मानसिक विकृति जो उनके मन मस्तिष्क पर अपना आधिपत्य जमाए बैठी थी, उसका बोझ उनके ऊपर से उतर गया।

अनाश।

ली०नीज ने बताया है कि सत्य दो प्रकार का होता है एक अनिवार्य सत्य, जिसके विपक्ष पर विचार भी नहीं किया जा सकता तथा दूसरा संयोगात्मक सत्य—उनके विपक्ष पर भी विचार किया जा सकता है और वह सम्भव भी होते हैं।

इति एक संयोगात्मक सत्य है,

उसके वातावरण, उसकी शिक्षा ने उसे वाध्य कर दिया की वह अपने जीवन पर जिसे सामान्य भाषा में निर्लजता कहते हैं उसकी चादर ओढ ले,

जिसे वासना कहते हैं उसके भीषण ज्वार से दग्ध बेचारी इति इसमें उसका दोष भी क्या हो सकता है, जिसका घर जड़ता में खोया रहता हो, जिसके माता-

पिता गवाक्षहीन हों उनकी पुत्री ऐसी ही होगी,

फिर जहाँ,

जीवन स्थितियों पर निर्भर हो, जहाँ जीवन माँग कर जिया जाता हो…,

अरे फिर कहीं खो गए आप, दर्शन शास्त्रियों में यह बहुत बड़ी कमी है, वह दूसरों से ही नहीं अपने से भी,

दूर चले जाते हैं

नहीं मनु।

फिर क्या इति के सम्बन्ध में ही सोच रहे थे ?

हाँ !

इसमें उसका दोष कहाँ है अनाश किसी ओर मन आकर्षित हो जाए किसी को पाने की चाह जग जाए तो उसको पाना उसकी माँग अनुचित नहीं है,

मनु…,

आप उसे अच्छे लगे, स्त्री को पुरुष के सामीप्य की आवश्यकता होती है फिर अगर उसने तुमको पाना चाहा तो इसमें असंगति कहाँ ?

पाना एक प्रक्रिया नहीं है, स्त्री पुरुष के मध्य की एक भावना है।

उसी भावना को तो उसने व्यक्त किया,

एक बात पूछूँ तुमसे ?

मनु और अनाश के बीच पता नहीं कब आप शब्द की मर्यादाएँ टूट जातीं और कब आ जातीं, दोनों को ही पता नहीं चलता था, तुम और आप शब्दों पर उन्होंने कोई बन्धन नहीं डाला था।

हाँ पूछो !

बुद्धि पर जोर दिए बिना, मस्तिष्क से पूछे बिना मुझे उत्तर देना।

कितना सहज हो गया था अनाश यहाँ आकर।

मुस्करा दिया।

कहो ?

फिर तो तुम मुझसे भी घृणा करते होगे मैंने भी तो प्रणय निवेदन किया था, अनाश मैं गई थी आलेक्सांद्राविनो के पास वह नहीं आए थे मेरे पास, कहाँ अन्तर है मेरे में और इति में ?

है, मनु बहुत बड़ा अन्तर है,

कैसे ?

धरती का अन्तर, जिस धरती पर प्रणय निवेदन के सम्बन्ध में स्त्री पुरुष का कोई भेद नहीं है,

अन्तर है उस मानसिकता का जिसमें प्रो० आलेक्सांद्राविनो ने जन्म लिया।

अन्तर है उस देश की संस्कृति में,

बहुत बड़ा अन्तर है पूर्व और पश्चिम की सभ्यता का और सबसे बड़ा सत्य...,

आलेक्सांद्राविनो का तुम्हारे प्रति आकर्षण कितने विद्यार्थी उस दर्शन शास्त्री ने अपने घर में रखे थे बोलो ? दोनों ओर का खिचाव था दोनों ने ही एक-दूसरे पर अपनी तरह अपने-अपने विचार व्यक्त कर दिए।

मनुष्य में बुद्धि और संकल्प दोनों आवश्यक तत्त्व हैं,

अनाश प्रेम एक भावना है, और यह बुद्धि के अभाव में भी पल्लवित होती है।

अगर यह भावना भी अनाश बौद्धिक बन गई तो वह प्रेम नहीं कहलाएगी।

प्रेम में मनुष्य बौद्धिक रहे यह अव्यावहारिक तथा आंशिक है,

मैं मानता हूँ पर प्यार जीवन की विशिष्टता है,

और विशिष्टता की अपनी एक सत्ता होती है, तुमने अपनी धरती छोड़कर दूसरे की धरती के मनुष्य से प्यार किया जिसकी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक सभी स्थितियां तुम्हारे देश की स्थितियों से भिन्न थीं।

अनाश !

बोलो,

मनुष्य का मन तो एक-सा ही होता है, वह चाहे कहीं भी, किसी भी धरती का हो,

सही है,

पर उसके वातावरण द्वारा उत्पन्न उसकी सभ्यता और संस्कृति के बीज उसमें पनपते हैं वह तो उसके सारण्य की भांति सदा उसके आगे-पीछे लगे ही रहते हैं, प्रणय निवेदन करने के उपरान्त भी जब तुमने अनुभव किया की तुम्हारी मानसिकता में वह सामान्य सभ्यता नहीं बैठती तो प्रेम होने के उपरान्त भी तुम वापिस चली आईं

अनाश,

वह भी वापिस चली जाएगी,

फिर,

अगर मैं तुम्हारी ही बात मान लूं तो आलेक्सांद्राविनो तो दूसरी धरती के पुरुष थे, हमारी सभ्यता और संस्कृति में जमीन आसमान का अन्तर था पर इति और अनाश की तो धरती एक ही है दोनों की सभ्यता और संस्कृति भी एक है,

फिर बेचारी क्यों हताश,

क्यों निराश ?

बता सकोगे मुझे ?

हाँ मनु !

हमारा दर्शन, हमारे विचार पाश्चात्य विचारों से तालमेल बाह्य से कितना भी समझौता कर ले पर आन्तरिक रूप से कभी एक नहीं हो पाएँगे, प्यार का इजहार लड़की द्वारा—समझ में नहीं आता, यहाँ का पति आज भी अपनी जीवन-संगनी चुनते समय एक आदर्श की कल्पना करता है, आज भी पुरुष यही चाहता है कि उसकी पत्नी—लजीली, शर्मीली उसकी बाँहों में समा जाए यह सत्य है कि आज वह कपड़ों की गठरी नहीं चाहता, ब्रह्म एक मात्र सत्य है, इसका अर्थ केवल यह नहीं की ईश्वर के अतिरिक्त कोई सत्ता ही नहीं, बहुत-सी सत्ताएँ हैं जो ईश्वर के समान ही उसकी रक्षा करती हैं।

क्या कहना चाहते हो ?

आज का पुरुष पढ़ी-लिखी बौद्धिक पत्नी की आकांक्षा रखता है पर आधुनिकता के नाम पर जीवन को नाटक बना देना—इसको स्वीकार करने की न तो उसमें आज शारीरिक सामर्थ्य है और न मानसिक,

मनु।

आज के युग में वह सीता, सरस्वती, दुर्गा और लैला—इन सबसे एक साथ मिलना चाहता है—एक रूप में,

फिर आज और कल के पुरुष में अन्तर कहाँ ?

बहुत बड़ा अन्तर है मनु !

आज की सीता राम के अत्याचार नहीं सहेगी उसमें दुर्गा जैसी शारीरिक शक्ति है और सरस्वती जैसी बुद्धि—

कोई भी असमाजिक तत्त्व या पुरुषत्व का आर्थिक भार ढोने का अहं अब उस पर कुठाराघात नहीं कर सकता और लैला बनना तो स्त्री जीवन सुख की पराकाष्ठा है, स्त्री तो प्यार के लिए उत्पन्न हुई है संसार जिस सन् में उत्पन्न हुआ है उसमें लैला ही समाविष्ट है।

अनाश।

जानती हो पतन का मुख्य कारण हमारी मानसिक विकृतियाँ ही हैं। भारतीय संस्कृति हमें बार-बार अहित कार्यों का वर्णन करना सिखाती है एवं बहुत सीमा तक साहयक होती है

यथार्थ ज्ञान के लिए,

और,

यथार्थ ज्ञान के लिए श्रद्धा का होना आवश्यक है, श्रद्धा का उदय तभी होता है जब किसी कर्म से अश्रद्धा की उत्पत्ति होती है। इति के व्यवहार द्वारा अश्रद्धा की उत्पत्ति हुई है, प्रणय निवेदन कोई अपराध नहीं है, निवेदन एक कार्य है और कार्य सदा प्रणाली के घेरों की मान्यताओं में किए जाते हैं। मनु प्रणय

क्या ऐसी वस्तु है कि किसी के पास पहुँचे और कह दिया कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, क्या यह बैंड मिन्टन की शटल कॉक है, प्यार तो हमें मन, वचन, कर्म से संयम सिखाता है, नहीं तो यह प्रकार तो जीवन के अनित्य दुख का भागीदार रहेगा। दृढ़ संकल्प तथा सम्यक् समाधि का पहला चरण ही प्यार है, प्रगाढ़ मनन, चित्तस्थिरता इसकी दूसरी सीढ़ी है उसी पर पहुँच कर हम मन की भावनाएँ व्यक्त कर सकते हैं और तीसरी अवस्था है जिसमें दैहिक सुख और समर्पण की एकाग्रता सम्मिलित है, चित्त जब इन तीनों साम्य अवस्था में पहुँचता है तभी प्रेम का अधिकारी होता है।

तो तुम कहना चाहते हो कि प्रेम आदि और अन्त का निर्णय पहले ही कर लेता है।

नहीं मर्यादा का अर्थ यह कभी नहीं।

आदि और अन्त का विचार अपने स्थान पर अपनी सार्थकता रखता है।

अनाश कौन है वह जिसने जगत का सत्य देखा है, और उससे बाहर निकल कर आया है, तुम्हें नहीं पता की लज्जा के मूल में कितने पापों और अपराधों का जन्म होता है।

मनु।

लज्जा की पहचान और स्वीकृति अपने आप में एक क्रिया है सारा जगत प्रवाह स्वतः चालित है इसमें मनुष्य की क्रिया को अवकाश नहीं फिर भी विश्व एक क्रमबद्ध पर्यायों का प्रवाह है।

अनाश शायद तुम भूल जाते हो।

कहो चुप क्यों हो गई ?

यदि कर्त्तव्य के अर्थ और उनका सही प्रतिपादन समझ में आ जाए तो यह जगत में सबका मन चाहा हो जाता है।

फिर तुम इति से विवाह क्यों नहीं कर लेते ?

एक ही विषय पर अटक गई हो मनु,

प्रोफेसर मुस्कराए,

अच्छा यह बताओ तुम विवाह क्यों नहीं कर लेतीं ?

मुझसे पूछ रहे हो ?

हाँ !

क्या करोगे जानकर,

क्यों अगर तुम मुझसे पूछ सकती हो तो क्या मैं नहीं पूछ सकता मित्र कहलाने का अधिकार तो तुमने दिया है मुझे, मैंने छीना नहीं है, या आपकी ऐसी धारणा है कि मैंने स्वात्य आपसे छीन लिया और आपने उदार बनकर इसे मुझे भेंट कर दिया।

मनु मुस्करा दी,

धीरे से बोली,

प्रयत्न किया था, प्यार करने का, शादी करने का, स्वप्न देखा था फूलों से झूलता एक घर बसाने का लेकिन बहुत शीघ्र ही पता लगा कि मैंने जिस साथी का चुनाव किया है वह सैकेण्ड हैण्ड है और आप तो जानते ही हैं कि हम मेरिट के विद्यार्थी हैं। सैकेण्डहैण्ड अपने को रास नहीं आता।

तो दूसरा चुनाव कर कीजिए।

मनु का स्वर तीखा हो गया—

अब हम सैकेण्डहैण्ड हो गए, जिस तरह हमारी कल्पनाएँ थीं, उसी प्रकार हमको पाने वाले की भी तो कल्पनाएँ होंगी उन्हें कैसे तोड़ दें जो हमारी महत्व-काक्षाएँ थीं—।

लैला बनने की,

वह धाराशायी हो गई,

तो फिर,

किसी मजनूं से हम अन्याय कैसे कर सकते हैं ?

और !

अगर कोई मजनूं तुम्हें इसी रूप में स्वीकार कर ले तो ?

हम समझेंगे कि हम पर दया की गई है,

हमारी आत्मा हमें कभी चैन···,

नीचे हाल से धारा माँ ने आवाज दी,

बिटिया पोस्टमैन आया है तुम्हें ही बुला रहा है।

अनाश ने रजिस्ट्री खोली,

प्रो० हैंगरी का पत्र था,

पढ़ो अनाश तुम ही पढ़ो।

लिटिल एंजिल,

तुम्हारे शब्द, और तुम्हारे विचार आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यता का मानदण्ड वेद वाक्य ही है। मीमांसा की दृष्टि में वेद नित्य ज्ञान के भण्डार तो हैं ही, उससे अधिक शाश्वत विधि वाक्यों या नियमों के आगार भी हैं जिनके अनुसार आचरण करने से हम धर्म प्राप्त कर सकते हैं मीमांसा वैदिक धर्म की शाखा है यह जर्मन दार्शनिक काण्ट भी मानता है।

कर्तव्य पालन इसीलिए नहीं करना चाहिए कि उससे हमारा उपकार होगा बल्कि इसलिए की कर्त्तव्य पालन हमारा धर्म है। हमारा देश आज भी सतत् प्रयत्नशील है कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए, क्या ईश्वर सगुण स्वरूप है जिसका ज्ञानप्राप्त किया जा सकता है ? अथवा वह निर्गुण ब्रह्म है जो सर्वथा अज्ञेय है—

तर्कों में डूबती चली जा रही है आज की चेतना और तर्क केवल विचार की एक पद्धति मात्र है जिसके प्रयोग के लिए आधार चाहिए भारतीय शास्त्रों और संस्कृति द्वारा पश्चिमी देशों को कुछ आधार मिला है जिस पर वह मनन और तर्क कर सकते है।

तुम्हारा दर्शन लेकर तुम यहाँ आ जाओ, मैं यहाँ से भी देख रहा हूँ कि यह तेजस्वी मनु चिन्तन को नया मोड़ दे सकती है। भारतीय दर्शन को लेकर विश्व के लिए एक नई शिक्षा प्रणाली, एक नया चिन्तन प्रतिस्थापित करो तुम्हारा जीवन मात्र तुम्हारे लिए नहीं है, तुम्हें अपने ज्ञान का कीर्ति ध्वज फहराना है।

हालाँकि तुम्हारा एक वाक्य अभी तक मैं भूला नहीं हूँ कि विदेश और विदेशियों से तुम्हें कोई लगाव नहीं है। लेकिन तुम जिस विषय की विद्यार्थिनी हो जिन पुस्तकों को पढ़कर तुमने ज्ञान प्राप्त किया है उनकी तो तुम ऋणी हो, और इस ऋण को उतारना तुम्हारा नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व है।

मेरा तुम्हें यहाँ पर आने का आमंत्रण है।

अपना समय नष्ट मत करो, विश्वास करो विश्व को तुमसे बहुत आशाएँ हैं।

मैं प्रोफेसर अनाश को भी पत्र लिख रहा हूँ उन्हीं के कारण मैं तुम तक पहुँच सका।

तुम्हारा वृद्ध मित्र,

प्रो० हैंगरी।

पुनश्च:—यहाँ की धरती तुम्हारी धरती से गले मिलने के लिए आतुर है।

पत्र समाप्त होते ही प्रोफेसर अनाश ने कहा—

लो अब तो तुम बहुत-बहुत बड़ी हो गई हो।

फिर मुस्करा कर बोले,

मनु तुम अब इतनी ऊँची पहुँच चुकी हो कि मुझे डर लगने लगा है कि अब मैं अपना मित्र खो दूँगा।

दोनों एक साथ मुस्करा दिए।

चलो बस अब जाने की तैयारी करो।

खाना खाकर ही जाना अनाश।

मनुष्य का यथार्थ स्वरूप क्या है ?

मनु अब चली जाएगी,

एक दिन विश्व में उसका नाम होगा,

प्रसन्नता के साथ वेदना कैसी ?

मनु उनकी कौन लगती है,

मित्र !

तो उसका जाना तो प्रसन्नता का चिन्ह होना चाहिए ।

मित्र का यश कहीं किसी कोने से उन्हें भी तो गौरवशाली बनाएगा ।

कितने विचारों से उलझते रहे, कब संघर्ष समाप्त हुआ पता ही नहीं चला ।

अगर ईश्वर !

पेट के लिए रोटी ।

और ।

मस्तिष्क के लिए विचार,

नहीं बनाता तो जीवन कितना सुखी होता ।

अखाँखुली तो साढ़े आठ बज रहे थे । आज शुक्रवार है और उनका पहला पीरियड 10-45 का है ।

यस माई बॉयज,

लास्ट पीरियड में हम लोग अठारवीं शताव्दी के चर्चित व्यक्ति लाक बर्कले और ह्यू पर चर्चा कर रहे थे । इस युग में अनुभववाद का बोलबाला था । कण्ट ने शुद्ध अनुभववाद के विरुद्ध अपने दर्शन की रचना की लेकिन बुद्धिवाद को भी उसने अकाट्य नहीं माना है उसने दोनों मतों में आंशिक सत्य का आभास पाया उसका दर्शन दोनों सिद्धान्तों का मिश्रण है उसी से जर्मन प्रत्ययवाद का आरम्भ हुआ । आप लोगों को आश्चर्य होगा की कोईन्सवर्ग में जन्म लेने वाले इस दर्शन शास्त्री का जीवन भारतीय मनीषियों के जीवन से बहुत मिलता-जुलता था । उच्चतम शिक्षा प्राप्त करके साधारण जीन पोश के पुत्र ने विश्वविद्यालय में दर्शन के अध्यापक के रूप में अशातीत ख्याति प्राप्त करी । इसके अतिरिक्त उनका जीवन अत्याधिक नियमित था । कहा जाता है कि उनकी दिनचर्चा से लोग घड़िया मिलायाँ करते थे ।

दर्शन में उनकी एक पुस्तक, "The Critigus of Pure reason बहुत बिख्यात है, वास्तविकता तो यह है । कि उनकी तुलना सुकरात से की जाती है ।

काण्ट ने वतलाया की वस्तुओं में मानसिक नियमों की तलाश की जाती है पर वास्तव में मानसिक नियमों पर ही वस्तुओं का हेतु निर्भर है और इसे ही कोपनिकंस क्रान्ति का नाम दिया ।

दूर से आती हुई घण्टी की आवाज ने सूचना दी की पीरियड समाप्त हो गया ।

प्रोफेसर की आँखों में आज नींद नहीं थी ।

उद्विग्नता का कारण !

शायद !

या,

वास्तविक में,

मनु चली जाएगी,

वह मनु को प्यार करने लगे हैं ?

वह तो उसके सान्निध्य में पाँच वर्ष से हैं,

कभी ऐसा विचार आया ही नहीं उनके मन में,

तब मनु उनके पास थी,

मनु उन्हें अच्छी लगती है,

मनु का सामीप्य नित नया उत्साह प्रदान करता है,

उससे चर्चा करके कितने नये मापदण्ड प्रतिस्थापित होते हैं, जीवन, दर्शन की लम्बी-लम्बी चर्चाएँ विचारों को एक नया मोड़ देती हैं,

बस और इससे अधिक कुछ नहीं,

मनु से अगर इतना ही सम्बन्ध है तो मनु जहाँ भी रहे वह उसके पास जा सकते हैं, उन्हें तो प्रसन्न होना चाहिए की अवकाश व्यतीत करने का एक सुदृढ़ स्थान उन्हें मिल रहा है।

मन···,

नहीं वह इतना नहीं चाहते,

तो,

क्या वह मनु से शादी करना चाहते हैं ?

इतने वर्षों की मित्रता !

ऐसा तो कभी सोचा ही नहीं उन्होंने।

मन ने प्रश्न किया···,

किस रिश्ते से मनु को बाँधना चाहते हो ?

वह बन्धनों के लिए नहीं जन्मी है,

फिर !

वह तो इतना समझते हैं कि बिना कोई नाम दिए बिना कोई रिश्ता स्थापित किए मनु उनके इतने करीब है जितने की वह स्वयं भी अपने करीब हैं

मनु उनकी आत्मा है।

मनु को पत्नी कह देना या बना लेना उसको बहुत छोटा कर देना है।

मनु सब रिश्तों से ऊपर है।

जीवन तो पयस्विनी का एक पौधा है जो धर्मवासर की भाँति प्रकाशवान है, प्यार तो निवार है।

प्रोफेसर को लगा की उनके विचारों ने पयोमुच का रूप धारण कर लिया है, जिसकी गड़गड़ाहट सुनने की शक्ति उनमें नहीं है, वास्तविकता तो यह है—

मनु !

उनके लिए पुरावृत है जो प्रोन्नत है पर क्या ऐसा सोचकर वह अपनी प्रेमा

को छोड़ सकते हैं।

प्रेमा—हाँ,

क्या यह शब्द उपयुक्त है उनके लिए,—प्रेमा अर्थात् स्नेही मनु तो उनके जीवन की वरोह है।

मनु तो आज भी आलेक्सांद्राविनो से प्यार करती है—क्या वह यातना में नहीं जी रही।

सच तो यह है,

कि,

वह तो सुधावर्षी है,

सुरप्रिय है,

इसीलिए वह चली जाएगी,

यह विचार ही उनको दग्ध किए जा रहा है।

वह यह भी जानते हैं,

कि,

मनु को बाँध रखना असम्भव है, वह उसको बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं।

आरण्य समुद्र की लहरों पर मनु सवार होकर अपने विचारों की अर्गलाओं को आज खींच-खींच कर तोड़ देना चाहती थी।

मनु !

एक···।

विचार असंख्य···

मनु,

जो छुई नहीं जा सकती,

जो पकड़ी नहीं जा सकती,

जहाँ पहुँचा नहीं जा सकता,

जो पार भी नहीं किया जा सकता।

फिर।

उसके लिए,

शून्याकाश,

या,

विचार···विचार···विचार।

लेकिन सच को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा,

मनु के जाने के बाद,

प्रोफेसर के अँधेरे और गहरे हो जाएँगे।

वह उसे रोकेंगे भी नहीं।

उनके लिए तो सभी राहें थम गई हैं।

दिशा नहीं उनके पास,

क्षितिज भी तो नहीं है।

किसी अज्ञात ने थपकी दी,

मैं रोकूं !

नहीं,

यह अन्याय होगा, यह पाप होगा,

आत्मा की आवाज ?

आत्मा न पाप है,

न संसार है,

वस एक शुद्धात्मा है, शेष सब अनिवार्य पर्याय क्रम है आया और गया···,

मनु।

नही,

वह अपनी नियति का स्वामी है। मनुष्य को अपने हर मोड़ पर मुक्ति की नई और मनभावन राहें खोलने का अधिकार है।

सुनील जल-वलयों से लहराते उसके विचार उसको ही मथे जा रहे थे।

मनु एक विदूषी है।

मनु दर्शन को एक नई परिभाषा देगी, पाश्चात्य दर्शन के साथ भारतीय दर्शन की परिपक्वता का नाम ही मनु है। प्रथम दिन जिस दिन उसने मनु को देखा था उसी क्षण उसकी विलक्षण प्रतिभा का एहसास उन्हें हो गया था। उसकी प्रतिभा मात्र अकेले उसके लिए नहीं विश्व के लिए होनी चाहिए वह दर्शन की एक विभूति है। देश का प्रकाश।

मनु ने कहा था कि,

किसी बात को इसलिए सत्य मान लेना कि वह वेदों में लिखी हुई है मनुष्य की बुद्धि का उपहास उड़ाना है। इसलिए भी नहीं की परम्परा से लोग उसे मानते चले आए हैं और इसलिए भी नहीं कि मैं कह रही हूँ कि वह सत्य है, सत्य तभी मानो जब उसे सत्य मानने में तुम्हारी बुद्धि और विवेक साथ दें।

ऐसी न जाने कितनी ही चर्चाएँ हैं जो उसके दिमाग पर अंकित हैं।

प्रोफेसर तुम स्वयं को तब तक नहीं पहचान सकते जब तक तुम अपने सहयोगी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना नहीं सीख लेते, मन समस्त कार्यों का केन्द्र बिन्दु है प्रशिक्षण के अनुसार मन जीव का मित्र है फिर वह कभी भी शत्रु कैसे हो सकता है ?

मनु,

दी ग्रेट।

उनका मन तो प्रसन्नता के सागर में हिलोरे लेना चाहिए, पलंग से उठकर वह एक झटके से खड़े हो गए।

न कोई दार्शनिक,

न कोई वैज्ञानिक,

न कोई राजनीतिज्ञ

क्यों अपने अस्तित्व के लिए यह विकट संघर्ष सत्य तो बस इतना ही है कि हम अपनी अज्ञानता के कारण ही विज्ञान, दर्शन, वाद आदि को जन्म देते हैं।

क्या सोचने में व्यस्त।

बेकार !

आज लायब्रेरियन ने उन्हें एक नई पुस्तक दी थी, 'The Saying Society' सामने ही मेज पर पड़ी थी,

अपने मस्तिक में उठने वाले अनर्गल विचारों को पुस्तक के शब्दों में खो दिया उन्होंने।

पहला पृष्ठ जो उनके सामने खुला···,

दुख के दो रूप होते हैं—एक जीवन की विषमता की अनुभूति से उत्पन्न करुणाभाव, दूसरा जीवन के स्थूल धरातल पर व्यक्तिगत असफलताओं से उत्पन्न विषाद।

मन-ही-मन मुस्करा दिए प्रोफेसर।

किताब का पृष्ठ भी कौन-सा खुला ?

अवगुणों से परिपूर्ण जीवन विश्व के सम्मुख गर्वित होकर झूमना चाहता है—ऐसे समय में मनु शिक्षा और ज्ञान की उस ऊँची चोटी को छूने जा रही है—

वहाँ खिन्नता का प्रश्न कहाँ ?

वहाँ वेदना का स्थान कहाँ ?

वहाँ तो गर्व ही गर्व होना चाहिए।

आज बड़ी व्यस्त हो !

प्रोफेसर हैंगरी ने जो पेपर मँगाया था देखो मैंने तैयार कर लिया।

कागज आगे बढ़ाते हुए मनु ने कहा।

पर मैं चाहती हूँ कि भेजने से पहले एक बार तुम्हें सुना दूँ।

सुनाओ।

विषय है—बेकन, देकार्ते तथा स्पिनोजा के दर्शन में शंकर और रामानुज अद्वैत और विशिष्टाद्वैत।

मनु पाश्चात्य दर्शनशास्त्रियों की भी तुम अपने अद्वैत और विशिष्टाद्वैत में उतार दोगी।

देखो अनाश।

यह तो सत्य है कि युक्तिपूर्वक तत्त्व ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही दर्शन कहते हैं बेकन नवीन युग का प्रवर्त्तक था नीरस दार्शनिक विचारों में वह कभी भी अपनी श्रद्धा प्रतिस्थापित नहीं कर पाया। बेकन ने सबसे पहले कहा कि अपने मन के सभी अंधविश्वासों को दूर कर देना चाहिए। अंधविश्वासों का आधार लेकर उन्हीं विश्वासों के दृष्टिकोण से यदि वस्तुओं को परखें तो वह भी वैसे ही खोखले और अन्धकार पूर्ण होंगे।

देकार्ते के अनुसार कोई भी विज्ञान गणित की भाँति निश्चयात्मक ज्ञान नहीं प्रदान करता। दर्शन के लिए भी उन्होंने रेखागणित की पद्धति को उपयुक्त विचारा है। देकार्ते सबसे पहले ऐसे सत्य की खोज में लगे जिससे निगमन निकाला जा सके। स्पिनो जाने तो मात्र देकार्ते के विचारों का ही विकास किया है।

नहीं मनु,

स्पिनोजा देकार्ते के विचारों का प्रचारक था यह तो ली०नीज और केयर्ड कहते हैं।

रोथ और पोलक ने तो स्पष्ट कहा है कि स्पिनोजा देकार्तीय नहीं था। स्पिनोजा का दर्शन देकार्ते के मौलिक सिद्धान्तों से एकदम भिन्न है।

मनु !

स्पिनोजा के दर्शन में एकता का प्रथम स्थान है, स्पिनोजा का दर्शन तो भारतीय दर्शन के प्रकांड दार्शनिक शंकर के अद्वैत से मिलता है। स्पिनोजा का दर्शन अद्वैतवादी है।

अनाश !

तो हम उसे युक्ति संगत देकार्ते कह सकते हैं, क्या यह सच नहीं अनाश कि स्पिनोजा पर नवप्लेटोवाद का प्रभाव अधिक है, केयर्ड ने एक स्थान पर लिखा है कि स्पिनोजा का ध्येय मनुष्य को मुक्ति मार्ग दिखाना है।

मनु अब ऐसा नहीं लगता कि एक-एक कप चाय हो जाए।

जरूर।

चाय मन नहीं बुद्धि भी माँग रही है।

धारा माँ चाय पिलाओगी ?

धारा माँ गुस्से में बोली—बस चाय पी-पीकर ही सारा कलेजा जला लेना, दूसरे क्षण ही बोली, 'ला रही हूँ' धारा भी बहुत मिस करेगी तुम्हें ?

तुम नहीं करोगे ?

अरे मैं तो बहुत करूँगा,

और दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़े।

धारा माँ को तो मैं अपने साथ ले जाऊँगी,

और तुम्हारी याद,

और वहाँ प्रतिक्षा करूँगी।

देर तक दोनों हँसते रहे, हँसी आवेग जब कम हुआ जब चाय की ट्रे सामने आ गई।

मनु दर्शन अनुकरण की वस्तु नहीं है,

मनु मुस्कराते हुए बोली,

प्रोफेसर साहिब फिर अनुकरण किस का किया जाता है।

मनु चाय बना रही थी,

प्रोफेसर सामने पड़ी एक पत्रिका के पन्ने पलट रहे थे। अतः मनु की मुस्कराहट नहीं देख पाए। अपनी ही धुन में बोले—

सम्प्रदाय,

एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी के लोग उसका अनुकरण करते हैं और इस प्रकार उस सम्प्रदाय की एक अविच्छिन्न परम्परा बनी रहती थी। यही कारण था कि भारत के विभिन्न दर्शन निरन्तर कई शताब्दियों तक प्रचलित रहे।

अनाश तुम तो होरीशियस रीडर हो।

तुम्हारे समान चिन्तक फिर भी नहीं।

मुझे विश्वास है—मनु तुम दर्शन को एक नई परिभाषा दोगी ?

तुम्हारी मान्यताएँ ही मेरी प्रेरणा स्रोत है अनाश पर विश्वास करो जब सोचती हूँ कि तुम यहीं रह जाओगे, तो मन अकुलाहट से भर जाता है।

मेरी प्रेरणा का क्या होगा ?

अनाश वहाँ आओगे न ?

मेरे पास,

मुझसे मिलने,

मुझे देखने।

मनु का गला भीग रहा था।

दर्शन शास्त्री—

भावुक मत बनो,

जब बुलाओगी अनाश को अपने पास पाओगी,

फिर हँसता हुआ बोला,

आर्थिक रूप से तुम दो देशों का कितना लाभ कर रही हो,

मनु मुस्करा दी।

लगता है आज वाहर गई थी,

हाँ अनाश तीन महीने से तैयारी और काम, काम सोचा आज जरा अपने अराध्य देव से मिल आऊँ,

अच्छा तो कृष्ण मन्दिर गई थी,

हाँ,

तुम्हें तो राधा होना चाहिए था।

मनु का मुँह एकदम उतर गया।

तुम्हें तो पता ही है कि मैं राधा ही बन गई हूँ।

कृष्ण राधा को छोड़कर मथुरा चले गए थे और मुझे मेरा आधुनिक कृष्ण पसन्द नहीं आया। फिर स्वस्थ होकर बोली,

"कृष्णस्तु भगवान्स्वयम्"

और सब अवतार हैं पर कृष्ण स्वयं भगवान हैं।

भगवान बहुपत्नी की लीला कर सकता है, पर पुरुष कृष्ण नहीं,

उस कृष्ण के तो कितने रूप हैं,

उसमें से मात्र,

गोकुल का कृष्ण ही राधा का प्रियतम था।

मैं अपने कृष्ण को गोकुल का कृष्ण देखना चाहती थी।

वैसे तो—

महाभारत का कृष्ण लोक-रक्षक, लोक मंगल व कर्म शक्ति का स्वरूप था, गीता का कृष्ण कर्मयोगी और वेदान्ती था। द्वारिका का कृष्ण मात्र मनुष्य है तभी तो वहेलिया का एक तीर लगते ही भूतल छोड़ दिया,

मेरा कृष्ण कर्मयोगी और बहेलिया—

मैं अपने कृष्ण के साथ उसकी तुलना कैसे कर सकती हूँ,

वह तो मेरा अराध्य देवता है।

और सर्मपित कृष्ण ?

वह बहुपत्नी नहीं चाहिए,

मैं भी तो वह राधा नहीं हूँ,

मीठी स्मित थी मनु के मुख पर,

जहाँ न क्रोध था,

न आवेश।

अगर कुछ था नारी की माँग का एकाधिकार का स्वत्व पति के लिए,

स्वाभाविक माँग,

स्वाभाविक इच्छा,

अनाश ने इस समय प्रवाह को गति के स्थान पर मोड़ देना ही अच्छा समझा।

मनु,

जी,

भौतिक वस्तु से आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करने में इतनी अनिश्चितता ही धर्म की आधारभूत शक्ति है।

जीवन क्षण स्थायी है—यह तथ्य—

मानती हूँ अनाश,

लेकिन मानवतावादी मुखौटा लगा कर क्या मानवीय भावनाओं को हवा में उड़ा देना सम्भव है ?

तुम ही तो कहते हो कि सभी के अन्दर यदि एक कण भी मनुष्यत्व हो तो मनुष्यत्व का मूल्य देना होगा, मर्यादा देनी होगी तुम इस धरती पर जीवन जीने का अधिकार पा सकोगे !

अनाश धीरे से मुस्कराया और बोला,

देखो मनु बुरा मत मानना, हँसते हुए बोला, न ही मेरे कथन का कोई अर्थ लगाना।

मैं तो इतिहास कह रहा हूँ,

एक भी युग का कोई पृष्ठ है जहाँ पत्नियों की लम्बी कतार न हो, और मनु स्मृति, जिसमें मनु स्पष्ट कहता है कि स्त्रियाँ तो माता बनने के लिए ही उत्पन्न हुई हैं।

और फिर मनु,

एक क्षण चुप होकर पुनः प्रोफेसर बोले,

मनु मेरा तो विश्वास है कि गंगाजल जैसी पवित्र आत्मा का सहवास पाकर किसी की आत्मा अधिक समय तक अन्तर्विरोध कर ही नहीं पाती स्वयं धुलकर निखर जाती।

आलेक्सांद्राविनो की बात कर रहे हो अनाश ?

एक क्षण को लगा कि मनु वर्तमान में नहीं कहीं अतीत में चली गई हैं, पीछे बहुत पीछे···।

उसके चेहरे की रेखाएँ बता रही थीं कि वह भागी जा रही है कुछ ढूंढ़ने के लिए—

अनाश—

यह सोचना की तुम मेरी भावनाओं की उपेक्षा कर सकते हो स्वयं के साथ विश्वासघात होगा,

फिर भी,

एक बात सदा याद रखना,

कि,

मनु तुम्हारी मित्र,

या

मनु तुम्हारी शत्रु,

हो सकती है पर अस्तित्वविहीन कभी नहीं,

मैं यह भी जानती हूँ कि,

तुम्हारा भव्य व्यक्तित्व सब कुण्ठाओं से दूर भव्य एकान्तिकता में खोया हुआ है—,

एक क्षण एक टक अनाश को निहारती रही।

अनाश,

छोड़ो यह सब बातें, तुम मेरा एक अनुरोध मान लो।

क्या ?

तुम इति से शादी कर लो जिससे मैं उसके हाथ में तुम्हें सौंप कर वहाँ निश्चितता से रह सकूँ,

धीरे से मुस्करा दिया अनाश,

तुम्हारे पास विलक्षणता, परिश्रम और प्रखर बुद्धि है पर जानती हो इस सब के साथ जीवन जीने के लिए एक चीज और आवश्यक है, और है वह आदमी पहचानने की कला।

जो मनु के पास नहीं है।

उस बोझिल वातावरण से मनु की मुक्त हँसी ने उदासी का परदा उस क्षण के लिए उतार कर फेंक दिया।

मनु।

तुम प्रो० आलेक्साद्राविनो को क्षमा नहीं कर पाईं, जिससे आज भी तुम अपने से अधिक प्यार करती हो तो क्या यह सम्भव है कि तुम्हारा मित्र उस लड़की को अपना जीवन साथी बना ले जो न जाने कितने पुरुषों के साथ शयन कर चुकी हो,

हैजे के मरीज की नाड़ी, मौलवी की दाढ़ी और जंगली गाय जिस प्रकार कभी भी विश्वास के पात्र नहीं होते उसी प्रकार इति पर विश्वास करना···,

अनाश।

मनु मानो चीख पड़ी,

उत्तेजित मत हो मनु, इति मेरे ही विश्वविद्यालय की छात्रा है, कौन ऐसा व्यक्ति है जो इति को न पहचानता हो, जीवन वासना की अदम्य एवं अनिवार्य अग्नि—उसके विस्फोट का नाम इति है।

मनु स्त्री को मोक्ष का द्वार माना जाता है, जब पुरुष पत्नी ग्रहण करता है

तो इस सत्य को स्वीकारा जाता है कि उसे मोक्ष की दिशा में सहायता मिल रही है।

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के क्षेत्र में प्राप्त हुई सफलता का कारण ही स्त्री है इसीलिए कहा गया है कि—

"धमार्थकामयोक्षानां दारा: सम्प्रति हेतव:"

मनु आदर्श यह करो, यह मत करो में शास्त्रों की ग्रन्थियाँ खोलता है तो यथार्थ इतिहास के वह पृष्ठ खोलता है जो हमें बताते हैं कि यह ऐसा है वह ऐसा नहीं है।

अनाश,

सच यह है कि हमारे पास आर्थिक प्रश्न इतने उग्र नहीं हैं···वास्तविकता तो यह है, कि सामाजिक विषमताओं के प्रति हम सम्पूर्ण क्षोभ के साथ न कल जागृत थे और न आज जागृत हैं। वैदिक संस्कृति अपनी यथार्थता में भी आदर्श के निकट है और मैं मानता हूँ कि जीवन जैसे आदि से अन्त तक निरन्तर सृजन है वैसे ही संस्कृति भी निरन्तर संस्कार क्रम है।

सच है अनाश,

इसीलिए तो मैं हमेशा कहती हूँ कृष्ण पाँच हजार वर्ष पूर्व ही था और आज नहीं है यह सोचना भी भूल है हर पल हर क्षण कृष्ण हमारी दृष्टि के सामने ही है।

देखो मनु तुम गीता का कृष्ण ढूंढ़ लो,

वहुत गम्भीर मुँह बना कर प्रो० अनाश ने कहा,

अनाश,

आज मुझे याद नहीं, मैंने कहीं पढ़ा था कि शेक्सपीयर का हेम्लेट पागल बन गया क्योंकि डेन्मार्ग के राजपुत्र को राह बताने वाला कोई नहीं था जबकि अर्जुन की समस्याएँ इस राजपुत्र से कहीं अधिक थी पर उसका पथ-प्रदर्शक कृष्ण था,

अच्छा,

फिर तो मुझे भी पद प्रदर्शक ढूंढ़ना पड़ेगा।

तुम्हारा तो पता नहीं पर मैं हेम्लेट की भाँति पागल होना नहीं चाहती, इसलिए मैंने तो अपना पथ-प्रदर्शक ढूंढ़ लिया है, प्रो० अनाश।

एक कप चाय और बनाओगी।

मनु पुनः बोली,

अनाश,

आज एक बात मन की तुम्हें वताने जा रही हूँ,

कहो,

भारतीय नारी के पास वह सभी विशिष्ट गुण हैं जिन्हें पाकर किसी भी देश

की मानवी देवी बन सकती है, वह आज भी त्यागमयी माता है, पतिव्रता पत्नी हैं, स्नेहमयी बहन और आज्ञाकारिणी पुत्री हैं,

आज जब संसार के जागृत देशों की स्त्रियां व्यक्तिगत अहम् और व्यक्तिगत सुख की लालसा में अपनी सभ्यता अपनी संस्कृति को न्यौछावर कर रही है, यह स्त्री अभी स्वयं को, अस्मिता को सुरक्षित करने में सबसे आगे है।

पर,

अनाश !

इन्हें जीने की कला नहीं आती, जो उनके इन अलौकिक गुणों को सजीव कर दे—जीवन की रोटी की आवश्यकता की भाँति बिस्तर भी उनके जीवन का आवश्यक सत्य बनता जा रहा है।

अनाश !

मंजुरिनां, ब्राउन शुगर के समान ही शब्दों का नशा है, व्यसन है, जो बिस्तर या गन्दी नालियों में जाकर समाप्त नहीं होता,

कुछ अगर होता है—
एक क्षण चुप रही मनु,
हमारी संस्कृति की इकाईयाँ ढहती जाती हैं।
मनु,
एक पंजाबी कवि ने कहा है कि,

एन्ना सच न बोल कि कल्ला हो जावे,
दो चार बन्दे छडड दे मोडडा देने लई—

खिलखिलाकर हँस दिया अनाश,
मनु,

इतना सच न बोलो कि अकेले हो जाओ, दो-चार लोगों की हाँ में हाँ तो मिलाओ, कि वह तुम्हें कन्धा तो दे दें !

स्त्रियाँ कहाँ कन्धा देती हैं।
दोनों की खनखनाती हँसी,
व्योम में नक्षत्र बनकर छटक गई।

मनु जा रही है,
वह बहुत दूर चली जाएगी,
क्या सोच रहे हो,
मनु—

चाणक्य ने कहा है कि—

"माता यस्य गृहे नास्ति जार्या चाप्रियवादिनी।

अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम ।।

यदि घर पर माता या प्रियवादिनी पत्नी न हो तो उसे घर छोड़कर जंगल में चले जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए जंगल तथा घर में कोई अन्तर नहीं होता, वास्तविक माता भगवद् भक्ति है और पत्नी शक्ति है जिसके द्वारा पुरुष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि द्वारा पथ प्रदर्शन प्राप्त करता है।

पुरुष के लिए क्यों ?

प्रो० अनाश भी तो पुरुष है,

कृष्ण ने कहा है—

"सर्वं धर्मान्परित्यन्य भामेकं शरणं ब्रज।

अहंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि या शुचः ।।

तुम सभी धर्मों को छोड़कर केवल मेरी शरण में आ जाओ मैं तुम्हें समस्त पाप और बन्धनों से मुक्त कर दूंगा।

अनाश !

मैं भी सब कुछ छोड़कर जब तुम्हारे पास आई तब पहचान पाई की सूर्योदय क्या होता है।

सम्भवतः मनुष्य समझता है कि दिन आता है और उसके बीत जाने पर रात आती है यह तो प्रकृति का नियम है किन्तु वह यह क्यों नहीं जानने का प्रयत्न करता कि प्रातःकाल के सूर्योदय के साथ-साथ उसकी वास्तविक आयु क्षीण होती जा रही है फिर कुछ क्षणों के लिए विश्वासघात, अहम् स्वाभिमान जैसे शब्द क्यों ?

जीवन !

निर्बाध विषयी जीवन व्यतीत करने के लिए कर्मी दिन-प्रतिदिन कठोर श्रम करते हैं यही आज का—

भौतिकवाद का दुरुह सत्य बनता जा रहा है।

तभी तो,

आज,

स्त्री,

भोग,

व्यापार बन गया है।

भोग करो धन देकर—कीमत देकर पीछा छुड़ा लो बस यही व्यापार है।

मनुष्य निरन्तर जीवित रहना चाहता है, वैज्ञानिक साधनों का सहारा लेकर

अपना जीवन बढ़ाना चाहता है। कुछ रूसी वैज्ञानिक दावा करने लगे हैं कि वैज्ञानिक प्रगति से वह मनुष्य को अमर बनाने जा रहे हैं। कभी-कभी लगता है कि ऐसे ही सिरफिरों के अधिनायकत्व में सभ्यता आगे बढ़ रही है वह यह भूल जाते हैं जीवित रहने के लिए भोग नहीं संयम की आवश्यकता है कुछ मापदण्डों को निर्धारित करने की आवश्यकना है नहीं तो यह प्रगति उन्हें मनुष्य से एक दिन पशु बना देगी, मनुष्य को अगर जीवित रखना है तो संस्कृति और संस्कारों को जीवित रखना पड़ेगा, धर्म और दर्शन की सुरक्षा करनी पड़ेगी।

मोह वश लोग सोचते हैं कि ऐश्वर्य उनकी रक्षा करेगा,

किन्तु,

अत्याधिक भौतिक प्रगति के उपरान्त भी मानव समाज की समस्याएँ—स्त्री और पुरुष की अनैतिकता—जब तक इस अनैतिकता का नाश नहीं किया जाएगा, कोई परिवर्तन—कोई प्रगति सम्भव नहीं।

भ्रान्त धारणाओं···,

भ्रान्त जीवन—

प्रगति की ओर कभी उन्मुख नहीं होता।

अच्छा,

यह लो तुम्हारा टिकिट और तुम्हारे कागजात,

सब कुछ तैयार है।

प्रोफेसर ने मनु को हिलाते हुए पूछा कहाँ खो गई।

यह वृत्ति अच्छी नहीं है।

अनाश !

हूँ !

अरे !

सॉरी,

सोच रही थी भौतिक प्रगति ही हमारे जीवन पर क्यों हावी होती जा रही है।

प्रत्येक जीव आध्यत्मिक प्राणी है, और, सभी यह जानते हैं, कि बिना आध्यात्मिक प्रगति के जीवन नष्ट हो जाता है।

हम सब जानते हैं कि मृत्यु अवश्यम्भावी है।

मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती।

बिना किसी संकोच के वह आती है और जीव को अपने साथ लेकर चली जाती है।

फिर मनुष्य अचेतन क्यों ?

मनुष्य इस विषतुल्य अपार सागर से निकलने का रास्ता क्यों नहीं आज तक ढूंढ़ पाया।

मनु ।

तुम अब इन सब बातों का ही सत्य ढूंढ़ने जा रही हो ।

अनाश !

यह संसार कर्म भूमि है, धरती ने कब कहा कि यह मेरी है यह तुम्हारी ।

यह शरीर कर्म भूमि है ।

मात्र कर्म भूमि,

चाहे जहां भी रहे,

कर्म, कर्म, कर्म ।

जानती हो मनु,

क्या ?

'स्त्री' संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है विस्तार,

स्त्री के माध्यम से ही मनुष्य अपना विस्तार—पुत्र, पुत्रियों, पौत्र इत्यादि के रूप में करता है और तुम इन सबको पीछे छोड़कर, बहुत ऊपर जा रही हो, दो देशों के धर्म और दर्शन के ऐक्य का विस्तार करने ।

मनु,

मनु की दृष्टि में प्रश्न था,

बुद्धि स्वप्न और जागृत दोनों ही अवस्था में क्रियाशील रहती है और तुम इस कथन की सत्यता हो, मूर्त्त रूप हो ।

जीवन में 'करना' ही महत्त्व है ।

बाकी तो सब शब्द पर्याय हैं ।

मनु धर्म उस साधन सामग्री का नाम है, जिससे जगत का उद्धार होता है ।

और,

तत्त्व ज्ञान को प्राप्त कर,

मनुष्य क्या है ?

उसका लक्ष्य क्या है ?

इसकी क्षमता प्राप्त होती है ।

तुम्हारे अराध्य देव सदा तुम्हारी रक्षा करेंगे, तुमने बहुत बड़ा बीड़ा उठाया है जब तक धर्म दर्शन मनुष्य की रग-रग में लहू की भांति नहीं बहेगा वह पशु ही रहेगा,

इन्सान नहीं बनेगा ।

अनाश ।

मनु,

तुम नैतिकता को जगाने जा रही हो,

तुम तो धरतियों को मिलाने जा रही हो,
तुम इन्सान को उसका सही रूप समझाने जा रही हो,
अगर तुमने यह बीड़ा नहीं उठाया,
तो
जीवन प्रसून, मुरझाई कलियों की भाँति खिलेंगे,
जीवन अपने शैशव में ही मुरझा जाएगा।
तुम्हें बताना है।
न कोई धर्म अलग है,
न कोई दर्शन अलग है,
न कोई धरती अलग है,
हम सब एक हैं,
बेटी टैक्सी आ गई,
धारा माँ कह रही थी।
चलो मनु,
यहाँ से अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे तक पहुँचने में कम-से-कम डेढ़ घण्टा तो लग ही जाएगा,
अनाश !
मुझे भूल तो नहीं जाओगे ?
मनु,
तुम तो मेरे कण-कण में बिखरी मुस्कान हो,
और मैं दृगों से बहता नीर।
नीर को मुस्कान की आवश्यकता बहुत होती है।
अनाश !
हाँ मनु,
मनु ने आगे बढ़कर अनाश के दोनों हाथ चूम लिए।
यह लो मनु,
सुन्दर लाल पैकेट मनु की ओर बढ़ाते हुए अनाश ने कहा।
यह क्या ?
देकार्ते की आत्म कथा,
शंकर की तुम्हारे पास है,
पहले पृष्ठ पर लिखा था—
प्रेम—
तेरा सौन्दर्य तेरी व्यापकता तृण-तृण में इतनी चंचल क्यों हो जाती है जिसे तम और प्रकाश नहीं संभाल पाते,

प्रो० अनाश सोच रहे थे,
मैं कहता था,
आधार टूट रहे हैं,
नीवें हिल रही हैं,
नहीं,
ऐसा कुछ नहीं है,

जर्मन की इस पवित्र धरती पर, अपनी मातृभूमि के आँचल में,

तुम जैसी दर्शनशास्त्र की विदूषी का हैंगरी और उसके साथी स्वागत करते हैं,

हम सबको विश्वास है कि युगों के अन्तराल के उपरान्त दर्शन को पुनः कोई सशक्त एवं नवीन परिभाषा मिलेगी।

मनु का कहना है कि,
मन के गुह्यतम मर्म को पहचानने के लिए, दर्शन एक गुह्यतम विद्या है,
पुरानी नहीं, नवीन क्रिया है,
सर,
पुराना जड़ वह है जो पर्याय से चिपटा है।
पुरुष और पर्याय दोनों प्रतिक्षण नए हैं।

तमाम रहस्यों की थाह पाने की इच्छुक हूँ और आपसे इस धरती के विद्वानों से वह दर्शन सीखने आई हूँ जो मनुष्य को जीवन दे,

विद्वान कहते हैं कि—
अकेले चलना ही दार्शनिक की विधि लिपी है,

उन्हें कोई नहीं पहचानता, कोई उत्साहित नहीं करता, वह अकेले ही अपनी यात्रा के यात्री होते हैं, किसी से उनका समझौता नहीं होता, उनका संघर्ष एकल संघर्ष है।

लेकिन मेरा संघर्ष अकेले का नहीं है,
आद्यगुरु शंकराचार्य के अद्वैत,
और
देकार्ते का अद्वैत, अगर एकल होता···?
कैसे एक हो जाता ?
सर,

स्तब्ध, अवाक् अन्तर्लीन सन्ध्या की इस वेला में स्वर्ण ऊषा की आशा ढूंढ़ने के भागीरथ प्रयत्न कर रही हूँ।

और,
उसी को करते-करते आप तक आ पहुँची हूँ।
सर,

आपको याद होगा कि आपने एक बार कहा था, कि भारतीय दर्शन यदि अपने गौरव को प्राप्त करना चाहता है तो, उसे सुदृढ़ बनाना चाहता है तो उसे प्राच्य तथा पाश्चात्य, आर्य, अनार्य, यहूदी, अरबी, चीनी, जापानी, अमेरिका, इंगलिश——सभी दार्शनिक मतों का पूर्ण विवेचन करना अत्यन्त आवश्यक है।

अपने ही विचार परम्परा में सीमित रहने से मनुष्य की न तो पुष्टि सम्भव है न वृद्धि।

यस, यस,
young lady it is perfectly true.

अक्सर मनु की प्रशंसाएँ,
उसके द्वारा अर्जित यश की गाथाओं,
के समाचार,
प्रो० अनाश को प्राप्त होते रहते थे।
वर्षों के उपरान्त, उनको एक पत्र मिला,
पत्र खोलते ही उनकी बूढ़ी आँखों में चमक आ गई,
आँखें,
मल मल कर न जाने कितनी बार उस पत्र को पढ़ा,
अनाश,

'यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कालेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः॥

मरते समय मनुष्य जिस किसी स्थिति के विषय में स्मरण करता है, उसे वह निश्चित रूप से प्राप्त कर लेता है।

'मनु'
मनु
मनु
डॉ० अनाश का हवाई जहाज उड़ा जा रहा था,
वर्षों, युगों के उपरान्त वह मनु को देखेंगे,
कुछ घण्टे ही शेष रह गये हैं,
कैसी होगी उनकी मित्र ?

□□

